AGRAWAL EXAMCART
Paper Pakka Fasega!

Based on NCERT Pattern

10 पेपर्स के विश्लेषण चार्ट का समावेश

UPTET 2022-23

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

PAPER-I (कक्षा 1 से 5 के लिए)
PAPER-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

NEW 2in1 Series

- UPTET पाठ्यक्रमानुसार सम्पूर्ण थ्योरी
- UPTET 2013-2020 के सभी प्रश्नों का व्याख्यात्मक हल सहित अध्यायवार संकलन
- UPTET 28 Nov 2021 व 23 Jan 2022 के विषयवार सॉल्वड पेपर्स का हल सहित समावेश

Best Text book!

इस पुस्तक की थ्योरी UPTET के पाठ्यक्रम एवं विगत् वर्षों में पूछे गये प्रश्नों पर आधारित है।

इस पुस्तक का गहन अध्ययन करने से आप UPTET बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र के प्रश्नों को आसानी से हल कर सकते हैं।

Code	Price	Pages
CB892	₹ 199	240

Based on NCERT Pattern

UPTET 2022-23

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

PAPER-I (कक्षा 1 से 5 के लिए)
PAPER-II (कक्षा 6 से 8 के लिए)

AGRAWAL GROUP OF PUBLICATIONS
EduCart | Agrawal Publications | AGRAWAL EXAMCART

Book Name	UPTET बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र Paper-I & II Textbook 2022-23
Editor Name	Rahul Agarwal
Edition	Latest
Published by	Agrawal Group Of Publications (AGP)

© All Rights reserved.
ADDRESS (Head office)	28/115 Jyoti Block, Sanjay Place, Agra, U.P. 282002
CONTACT	quickreply@agpgroup.in We reply super fast
BUY BOOK	www.examcart.in Cash on delivery available
WHATSAPP (Head office)	8937099777
PRINTED BY	Schoolcart
DESKTOP PUBLISHING	Agrawal Group Of Publications (AGP)
ISBN	978-93-5561-341-7
© COPYRIGHT	Agrawal Group Of Publications (AGP)

Disclaimer: This teaching material has been published pursuant to an undertaking given by the publisher that the content does not in any way whatsoever violate any existing copyright or intellectual property right. Extreme care is put into validating the veracity of the content in this book. However, if there is any error found, please do report to us on the below email and we will re-check; and if needed rectify the error immediately for the next print.

ATTENTION

No part of this publication may be re-produced, sold or distributed in any form or medium (electronic, printed, pdf, photocopying, web or otherwise) on Amazon, Flipkart, Snapdeal without the explicit contractual agreement with the publisher. Anyone caught doing so will be punishable by Indian law.

इस प्रकाशन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक के साथ स्पष्ट संविदात्मक समझौते के बिना अमेज़न, फ्लिपकार्ट, स्नैपडील पर किसी भी रूप या माध्यम (इलेक्ट्रॉनिक, मुद्रित, पीडीएफ, फोटोकॉपी, वेब या अन्यथा) में फिर से उत्पादित, बेचा या वितरित नहीं किया जा सकता है। जो कोई भी ऐसा करता हुआ पकड़ा जाएगा, वह भारतीय कानून द्वारा दंडनीय होगा।

AGP contributes Rupee One on every book purchased by you to the **Friends of Tribals Society** Organization for better education of tribal children.

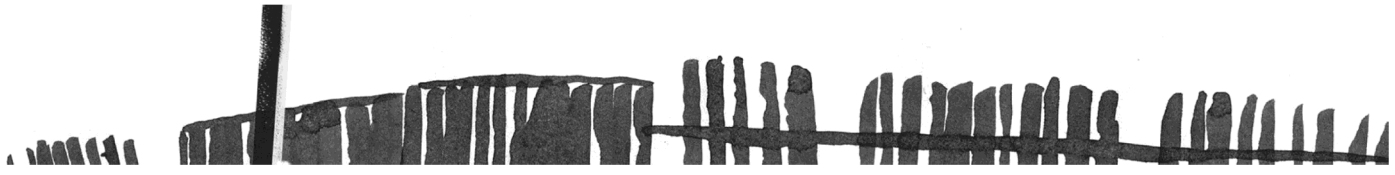

UPTET (1-5) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

क्र. सं.	अध्याय	23.01.22	28.11.21	8.1.2020	18.11.18	15.10.17	19.12.16	2.2.2016	23.2.14	27.6.13
1.	बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता महत्व क्षेत्र, अवस्थाएँ	3	4	5	6	7	0	5	9	10
2.	बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक	3	—	—	—	1	0	2	1	1
3.	सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्त	7	6	11	10	10	14	9	5	8
4.	सीखने : अर्थ, कारक, सिद्धान्त, वक्र तथा पठार	—	—	3	6	0	0	1	1	1
5.	शिक्षण : अर्थ, सिद्धान्त, सूत्र, प्रविधियाँ, सूक्ष्म शिक्षण एवं आधारभूत कौशल	1	8	3	5	3	1	0	2	3
6.	समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श	—	—	3	2	0	0	0	2	3
7.	अधिगम और अध्यापन	—	—	2	1	0	1	0	1	4
8.	प्रेरणा और अधिगम	—	—	3	4	0	4	2	9	0
9.	विविध	16	12	9	0	11	0	10	0	9

UPTET (6-8) के पिछले वर्षों के हल प्रश्न–पत्रों का विश्लेषण चार्ट

23 Jan. 2022 में पूछे गये सभी प्रश्न Oct. 2017 के पेपर के अनुसार पूछे गये हैं।

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र

क्र. सं.	अध्याय	27.6.2013	23.2.2014	2.2.2016	19-Dec-16	15.10.2017/ 23.01.2022	18.11.2018	8.1.2020
1.	बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता, महत्व, क्षेत्र एवं अवस्थाएँ	0	1	0	1	0	2	2
2.	बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक	2	1	4	4	2	0	1
3.	अधिगम का अर्थ तथा सिद्धान्त	6	8	8	7	3	8	3
4.	अधिगम : वक्र तथा पठार का अर्थ	1	2	0	2	1	1	1
5.	शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ	1	2	0		0	3	4
6.	समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श	6	3	1	1	4	8	5
7.	अधिगम और अध्यापन	3	1		1	1	2	6
8.	बोध एवं सवेदनाएँ	0	0	0		1		1
9.	प्रेरणा और अधिगम	0	2	0		0	1	
10.	विविध विषय	11	10	17	14	18	3	7

उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा पाठ्यक्रम

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र (1-5)

(क) विषय–वस्तु

बाल विकासः–

- बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र, बाल विकास की अवस्थाएं शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषा विकास– अभिव्यक्ति क्षमता का विकास, सृजनात्मकता एवं सृजनात्मकता क्षमता का विकास।
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक–वंशानुक्रम, वातावरण। (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयीय, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्तः–

- अधिगम (सीखने) का अर्थ प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ।
- अधिगम के नियम– थार्नडाइक ने सवीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व।
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त, कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त, प्याजे का सिद्धान्त, व्योगास्की का सिद्धान्त सीखने का वक्र– अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार का अर्थ और कारण एवं निराकरण।

शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँः–

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य, सम्प्रेषण, शिक्षण का सिद्धान्त, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम), सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल।

समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार निराकरण यथाः अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी।
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा–बेललिपि आदि।
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श– अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थायें :–
  - ➢ मनोविज्ञानशाला उ.प्र. प्रयागराज
  - ➢ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
  - ➢ जिला चिकित्सालय
  - ➢ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षत डायट मेण्टर
  - ➢ पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
  - ➢ समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
  - ➢ सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल–अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

(ख) अधिगम और अध्यापन

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं; बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियांः सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगमः, अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना; अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएँ।
- प्रेरणा और अधिगम।
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक– निजी एवं पर्यावरणीय

बाल विकास एवं शिक्षाशास्त्र (6-8)

(क) विषय–वस्तु

बाल विकासः–

- बाल विकास का अर्थ, आवश्यकता तथा क्षेत्र, बाल विकास की अवस्थाएं शारीरिक विकास, मानसिक विकास, संवेगात्मक विकास, भाषा विकास– अभिव्यक्ति क्षमता का विकास, सृजनात्मकता एवं सृजनात्मकता क्षमता का विकास।
- बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक–वंशानुक्रम, वातावरण। (पारिवारिक, सामाजिक, विद्यालयीय, संचार माध्यम)

सीखने का अर्थ तथा सिद्धान्तः–

- अधिगम (सीखने) का अर्थ प्रभावित करने वाले कारक, अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ।
- अधिगम के नियम– थार्नडाइक ने सीखने के मुख्य नियम एवं अधिगम में उनका महत्व।
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता, थार्नडाइक का प्रयास एवं त्रुटि का सिद्धान्त, पैवलव का सम्बद्ध प्रतिक्रिया का सिद्धान्त, स्किनर का क्रिया प्रसूत अधिगम सिद्धान्त, कोहलर का सूझ या अन्तर्दृष्टि का सिद्धान्त, प्याजे का सिद्धान्त, वायगोस्तकी का सिद्धान्त सीखने का वक्र– अर्थ एवं प्रकार, सीखने में पठार का अर्थ और कारण एवं निराकरण।

शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँः–

- शिक्षण का अर्थ तथा उद्देश्य, सम्प्रेषण, शिक्षण का सिद्धान्त, शिक्षण के सूत्र, शिक्षण प्रविधियाँ, शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम), सूक्ष्म शिक्षण एवं शिक्षण के आधारभूत कौशल।

समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श :–

- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय, पहचान, प्रकार निराकरण यथाः अपवंचित वर्ग, भाषा, धर्म, जाति, क्षेत्र, वर्ण, लिंग, शारीरिक दक्षता (दृष्टिबाधित, श्रवणबाधित एवं वाक्/अस्थिबाधित), मानसिक दक्षता।
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ।
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी।
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ। यथा–बेललिपि आदि।
- समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श– अर्थ, उद्देश्य, प्रकार, विधियाँ, आवश्यकता एवं क्षेत्र
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थायें :–
  - ➢ मनोविज्ञानशाला उ.प्र. प्रयागराज
  - ➢ मण्डलीय मनोविज्ञान केन्द्र (मण्डल स्तर पर)
  - ➢ जिला चिकित्सालय
  - ➢ जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षत डायट मेण्टर
  - ➢ पर्यवेक्षण एवं निरीक्षण तन्त्र
  - ➢ समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ
  - ➢ सरकारी एवं गैर सरकारी संगठन
- बाल–अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व

(ख) अधिगम और अध्यापन

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं; बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों 'असफल' होते हैं
- अधिगम और अध्यापन की बुनियादी प्रक्रियाएँ; बालकों की अधिगम कार्यनीतियांः सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगमः, अधिगम के सामाजिक संदर्भ।
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक 'वैज्ञानिक अन्वेषक' के रूप में बालक।
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना; अधिगम प्रक्रिया में महत्वपूर्ण चरणों के रूप में बालक की 'त्रुटियों' को समझना।
- बोध और संवेदनाएँ।
- प्रेरणा और अधिगम।
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक– निजी एवं पर्यावरणीय

विषय–सूची

सॉल्व्ड पेपर्स

❖ उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर-I (कक्षा-1-5) हल प्रश्न–पत्र (23-01-2021) 1-4

❖ उत्तर प्रदेश शिक्षक पात्रता परीक्षा पेपर-I (कक्षा-1-5) हल प्रश्न–पत्र (28-11-2021) 5-8

अध्याय *पृष्ठ सं.*

1. बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता, महत्व, क्षेत्र एवं अवस्थाएँ 1-31

- बाल मनोविज्ञान की अवधारणा (Concept of Child Psychology)
- बाल मनोविज्ञान का अर्थ (Meaning of Child Psychology)
- बाल विकास का अर्थ (Meaning of Child Development)
- बाल विकास के क्षेत्र (Scope of Child Development)
- बाल विकास की आवश्यकता (Need of Child Development)
- बाल विकास का महत्व (Importance of Child Development)
- बाल विकास के सिद्धान्त (Principles of Child Development)
- बाल विकास के सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of the Principles of Child Development)
- विकास की अवधारणा (Concept of Development)
- वृद्धि की अवधारणा (Concept of Growth)
- विकास की प्रकृति (Nature of Development)
- वृद्धि की प्रकृति (Nature of Growth)
- मानव के विकास की अवस्थाएँ (Stages of Human Development)
- प्रमुख अवस्थाएँ (Main Stages)
- मानव विकास के विभिन्न पक्ष (Different Aspects of Human Development)
- संवेग के प्रकार (Types of Emotion)
- सृजनात्मकता और शिक्षा (Creativity and Education)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

2. बाल विकास के आधार एवं उनको प्रभावित करने वाले कारक 32-41

- आनुवंशिकता की अवधारणा (Concept of Heredity)
- आनुवंशिकता का नियम (Laws of Heredity)
- आनुवंशिकता की प्रक्रिया (Process of Heredity)
- आनुवंशिकता का प्रभाव (Effect of Heredity)
- वातावरण की अवधारणा (Concept of Environment)
- वातावरण का प्रभाव (Effect of Environment)
- आनुवंशिकता व वातावरण का सम्बन्ध (Relationship between Heredity and Environment)
- आनुवंशिकता तथा वातावरण का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of Heredity and Environment)
- वातावरण का महत्व (Importance of Environment)
- विकास को प्रभावित करने वाले आनुवंशिकीय एवं वातावरणीय कारक (Environmental and Heredity Factors Affecting the Development)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

3. अधिगम का अर्थ तथा सिद्धान्त 42-72

- अधिगम का अर्थ (Meaning of Learning)
- अधिगम की विशेषतायें (Characteristics of Learning)
- अधिगम को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing Learning)
- अधिगम के नियम (Laws of Learning)
- अधिगम की प्रभावशाली विधियाँ (Effective Methods of Learning)
- अधिगम के प्रमुख सिद्धान्त तथा कक्षा शिक्षण में इनकी व्यावहारिक उपयोगिता (Main Theories of Learning and Behavioural Utility in Classroom Teaching)
- जीन पियाजे का नैतिक विकास का सिद्धान्त (Jean Piaget Theory of Moral Development)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

4. अधिगम : वक्र एवं पठार का अर्थ 73-79

- अधिगम का वक्र (Learning Curves)
- अधिगम के वक्र की विशेषताएँ (Characteristics of Learning Curve)
- अधिगम के वक्र के प्रकार (Types of Learning Curve)
- अधिगम में पठार (Plateaus in Learning)
- सीखने में पठार आने का समय (Time Period for Plateaus)
- अधिगम में पठार के कारण (Causes of Plateaus in Learning)
- सीखने में पठार के निराकरण (Resolution of Plateaus in Learning)
- अधिगम का स्थानान्तरण (Transfer of Learning)
- अधिगम स्थानान्तरण के प्रकार (Types of Transfer of Learning)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

5. शिक्षण एवं शिक्षण विधाएँ 80-99

- शिक्षण का अर्थ (Meaning of Teaching)
- शिक्षण के प्रकार (Types of Teaching)
- शिक्षण की प्रकृति (Nature of Teaching)
- शिक्षण का वातावरण (Environment of Teaching)
- शिक्षण के उद्देश्य (Objectives of Teaching)
- शिक्षण के सिद्धान्त (Principles of Teaching)
- शिक्षण की अवस्थाएँ (Stages of Teaching)
- शिक्षण के स्तर (Levels of Teaching)
- शिक्षण के सूत्र (Teaching Formulas)
- शिक्षण प्रविधियाँ (Teaching of Methods)
- शिक्षण की नवीन विधाएँ (उपागम) (New Methods/Approaches of Teaching)
- सूक्ष्म शिक्षण (Micro Teaching)
- सूक्ष्म शिक्षण का भारतीय प्रतिमान (Indian Model of Micro Teaching)
- शिक्षण के आधारभूत कौशल (Basic Skills of Teaching)
- शिक्षण कौशल की विशेषताएँ (Characteristics of Teaching Skill)
- महत्वपूर्ण शिक्षण कौशलों का विवरण (Classification of Important Teaching Skills)
- सम्प्रेषण का अर्थ (Meaning of Communication)
- सम्प्रेषण की विशेषताएँ (Characteristics of Communication)

- सम्प्रेषण की प्रक्रिया (Process of Communication)
- सम्प्रेषण के प्रकार (Types of Communication)
- सम्प्रेषण के तरीके (Methods of Communication)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

6. समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श **100-144**

- समावेशित शिक्षा का प्रारम्भ (Beginning of Inclusion Education)
- शैक्षिक समावेशन से अभिप्राय (Meaning of Educational Inclusion)
- शैक्षिक समावेशन हेतु पहचान (Identification for Educational Inclusion)
- समावेशी शिक्षा की प्रकृति (Nature of Inclusive Education)
- समावेशी शिक्षा के उद्देश्य (Objectives of Inclusive Education)
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों का वर्गीकरण (Classification of Children with Special Need)
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की पहचान [Identification of Children with Special Need (CWSN)]
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बच्चों की अवधारणा (Concept of Special Need Children)
- समावेशी बालकों के प्रकार (Types of Inclusive Children)
- शारीरिक दक्षता वाले बालक (Children with Physical Efficiency)
- मानसिक दक्षता वाले बालक (Children with Mentaly Efficiency)
- अधिगम अयोग्यता (Learning Difficulties)
- मानसिक स्वास्थ्य (Mental Health)
- समावेशन के लिए आवश्यक उपकरण, सामग्री, विधियाँ, टी.एल.एम. एवं अभिवृत्तियाँ (Equipment, Materials, Methods required for Inclusion T.L.M and Attitudes)
- समावेशित बच्चों का अधिगम जाँचने हेतु आवश्यक टूल्स एवं तकनीकी (Required Tools and Techniques for Testing the Learning of Inclusive Children)
- समावेशित बच्चों के लिए विशेष शिक्षण विधियाँ (Special Teaching Methods for Inclusive Children)
- ब्रेल लिपि (Braille Script)
- नई शिक्षा नीति–2020 (New Education Policy-2020)
- समावेशी शिक्षा–निर्देशन एवं परामर्श (Inclusive Education–Guidance and Counselling)
- निर्देशन के प्रकार (Type of Guidance)
- निर्देशन की विधियाँ (Methods of Guidance)
- विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों का निर्देशन (Guidance of Special Need Children)
- परामर्श का अर्थ (Meaning of Counselling)
- शारीरिक रूप से विकलांग बालकों का निर्देशन एवं परामर्श (Guidance and Counselling of Physically Handicapped Children)
- प्रतिभासम्पन्न/सृजनशील बालकों का निर्देशन (Guidance for Gifted Children)
- मानसिक रूप से विकलांग बालकों का निर्देशन (Guidance for Mentally Retarded Children)
- मन्द बुद्धि बालकों का निर्देशन (Guidance of Mentally Retarded Children)
- परामर्श में सहयोग देने वाले विभाग/संस्थाएँ (Institution/Department Supporting in Counselling)
- समुदाय एवं विद्यालय की सहयोगी समितियाँ (Associate Committees of Community and School)
- सरकारी एवं गैर–सरकारी संगठन (Government and Non-government Organization)
- बाल अधिगम में निर्देशन एवं परामर्श का महत्व (Importance of Guidance and Counselling in Child Learning)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

7. अधिगम और अध्यापन **145-166**

- चिन्तन का अर्थ (Meaning of Thinking)
- चिन्तन के प्रकार (Types of Thinking)

- बालक किस प्रकार सोचते और सीखते हैं ? (How Children Thinking and Learning ?)
- बालक विद्यालय प्रदर्शन में सफलता प्राप्त करने में कैसे और क्यों असफल होते हैं ? (How and Why do Children Fail to Achieve Success in School Performance ?)
- शिक्षण व अधिगम की बुनियादी प्रक्रियाएँ (Basic Process of Teaching and Learning)
- शिक्षण और अधिगम में सम्बन्ध (Relationship Between Learning and Teaching)
- शिक्षण और अधिगम का औचित्य (Relevance of Learning and Teaching)
- शिक्षण–अधिगम के सिद्धान्त (Principles of Teaching-Learning)
- शिक्षण एवं अधिगम की प्रक्रिया (Process of Teaching and Learning)
- शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया के मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रतिपादन (Formation of Psychological Principle for Teaching-Learning Process)
- फ्लैण्डर्स अन्त :क्रिया विश्लेषण (Flander's Interaction Analysis)
- फ्लैण्डर्स विश्लेषण की दस श्रेणियाँ (Flander's 10 Category Analysis)
- निरीक्षण के नियम (Rules for Observation)
- फ्लैण्डर्स विधि की सीमाएँ (Limitations of Flander's Method)
- बालकों की अध्ययन कार्यनीतियाँ (Children's Learning Strategies)
- शिक्षण की कार्यनीतियों की विशेषताएँ (Characteristics of Strategies of Teaching)
- शिक्षण की कार्यनीतियों के प्रकार (Types of Strategies of Teaching)
- सामाजिक क्रियाकलाप के रूप में अधिगम (Learning as a Social Activity)
- अधिगम के सामाजिक संदर्भ (Social Reference of Learning)
- एक समस्या समाधानकर्ता और एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में बालक (Children as a Problem Solver and a Scientific Investigator)
- समस्या–समाधान की विशेषतायें (Characteristics of Problem Solving)
- समस्या–समाधान की विधियाँ (Methods of Problem Solving)
- समस्या–समाधान व्यवहार के शिक्षण में सम्मिलित (Steps in Teaching Problem Solving Behaviour)
- कक्षा में समस्या–समाधान को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Influencing Problem Solving in Classroom)
- समस्या–समाधान एवं शिक्षक (Problem Solving and Teacher)
- बालक एक समस्या–समाधानकर्ता के रूप में (Children as a Problem Solver)
- समस्या–समाधान की वैज्ञानिक विधि (Scientific Method of Problem Solving)
- समस्या–समाधान का महत्त्व (Importance of Problem Solving)
- बालक एक वैज्ञानिक अन्वेषक के रूप में (Children as a Scientific Investigator)
- बालकों में अधिगम की वैकल्पिक संकल्पना (Alternative Conceptions of Learning in Children)
- रेखीय और शाखात्मक अभिक्रमों की तुलना (Comparison of Linear and Branching Programming)
- मूल प्रवृत्तियाँ (Instincts)
- मूल प्रवृत्तियों के प्रकार (Kinds of Instincts)
- मूल प्रवृत्तियों के तीन पक्ष/पहलू (Three Aspects of Instincts)
- सहज या प्रतिवर्ती क्रिया (Reflex Action)
- मूल प्रवृत्ति और सहज क्रिया की तुलना (Comparison of Instincts and Reflex Action)
- बच्चों की त्रुटियों को अधिगम प्रक्रिया में सार्थक कड़ी के रूप में समझना (Explain the Errors as a Meaningful Link in the Learning Process)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

8. बोध और संवेदनाएँ **167-170**

- संज्ञान (बोध) का अर्थ (Meaning of Cognition)
- संज्ञान की विशेषताएँ (Characteristics of Cognition)
- ब्लूम के वर्गीकरण का संज्ञानात्मक क्षेत्र (Cognitive Field of Bloom's Classification)
- संवेदनाएँ (Sensations)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

9. अभिप्रेरणा (प्रेरणा) और अधिगम 171-179

- अभिप्रेरणा का अर्थ (Meaning of Motivation)
- आवश्यकता, प्रणोदन और प्रोत्साहन (Requirements, Propulsion and Incentives)
- उपलब्धि–प्रेरक (Achievement Motivation)
- अभिप्रेरणा और सीखना में सम्बन्ध (Relation between Motivation and Learning)
- अधिगम में योगदान देने वाले कारक : व्यक्तिगत एवं पर्यावरणीय (Factors Contributing to Learning : Individual and Environmental)
- व्यक्तिगत से सम्बन्धित कारक (Factors Related to Individual)
- पर्यावरण से सम्बन्धित कारक (Factors Related to Environment)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

10. विविध विषय 180-236

- बुद्धि की संकल्पना (Concept of Intelligence)
- बुद्धि की विशेषताएँ (Characteristics of Intelligence)
- बुद्धि के प्रकार (Types of Intelligence)
- बुद्धि के सिद्धान्त (Theories of Intelligence)
- भारत में बुद्धि परीक्षण (Intelligence Testing in India)
- बुद्धि का मापन (Measurement of Intelligence)
- बुद्धि परीक्षण के प्रकार (Types of Intelligence Test)
- मानसिक आयु व बुद्धि–लब्धि (Mental Age and Intelligence Quotient)
- बुद्धि परीक्षाओं की उपयोगिता (Utility of Intelligence Tests)
- संवेगात्मक बुद्धि (Emotional Intelligence)
- बहुआयामी बुद्धि सिद्धान्त (Multiple Intelligence Theory)
- बहुआयामी बुद्धि सिद्धान्त के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implications of Multiple Intelligence Theory)
- व्यक्तित्व (Personality)
- व्यक्तित्व के प्रकार (Types of Personality)
- विभिन्न अवस्थाओं में व्यक्तित्व का विकास (Development of Personality in Different Stages)
- व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले तत्व या कारक (Factors Affecting Personality)
- व्यक्तित्व का सिद्धान्त (Theories of Personality)
- प्रकार सिद्धान्त (Type Theory)
- शीलगुण सिद्धान्त (Trait Theory)
- (A) ऑलपोर्ट का शीलगुण सिद्धान्त की स्थापना में योगदान (Allport's Theory)
- (B) कैटल का व्यक्तित्व सिद्धान्त (Cattle's Trait Theory)
- फ्रायड का मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (Psycho-analytic Theory of Freud)
- जुंग का मनोवैज्ञानिक गुण सिद्धान्त (Psychological Trait Theory of Jung)
- मुरे का माँग सिद्धान्त (Need Theory of Murray)
- आइजेंक का व्यक्तित्व सम्बन्धी जैविक शीलगुण सिद्धान्त (Eysenck's Biological Trait Theory of Personality)
- व्यक्तित्व का मापन (Measurement of Personality)
- व्यक्तिगत विभिन्नता (Individual Difference)
- व्यक्तिगत विभिन्नता की विशेषताएँ (Characteristics of Individual Difference)
- व्यक्तिगत विभिन्नता के प्रकार (Types of Individual Difference)
- व्यक्तिगत विभिन्नता की विधियाँ (Methods of Individual Difference)
- रुचि का अर्थ (Meaning of Interest)
- रुचि की परिभाषाएँ (Definitions of Interest)
- रुचि के प्रकार (Types of Interest)

- रुचि का मापन (Measurement of Interest)
- स्मृति (Memory)
- स्मृति के प्रकार (Kinds of Memories)
- स्मृति के नियम (Laws of Memories)
- विस्मृति (Forgetting)
- विस्मृति के प्रकार (Kinds of Forgetting)
- विस्मृति के सिद्धान्त (Theories of Forgetting)
- कल्पना (Imagination)
- कल्पना के प्रकार (Types of Imagination)
- कल्पना के शैक्षिक निहितार्थ (Educational Implication of Imagination)
- अभिवृत्ति (मनोवृत्ति) (Attitudes)
- अभिवृत्ति के प्रकार (Types of Attitudes)
- अभिवृत्ति की प्रकृति (Nature of Attitudes)
- अवधान (Attention)
- अवधान की विशेषताएँ (Characteristics of Attention)
- अवधान के प्रकार (Types of Attention)
- अवधान की दशाएँ (Conditions of Attention)
- मूल्यांकन एवं मापन (Evaluation and Measurement)
- मूल्यांकन के उद्देश्य (Objectives of Evaluation)
- मूल्यांकन का वर्गीकरण (Classification of Evaluation)
- मूल्यांकन के उपकरण व प्रविधियाँ (Tools and Techniques of Evaluation)
- मूल्यांकन के उपकरण व प्रविधियों का वर्गीकरण (Classification of Tools and Techniques of Evaluation)
- मापन का अर्थ (Meaning of Measurement)
- मापन के प्रकार (Types of Measurement)
- मापन के स्तर (Scales of Measurement)
- मापन और मूल्यांकन में अन्तर (Difference between Measurement and Evaluation)
- सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (Continuous and Comprehensive Evaluation)
- सांख्यिकी (Statistics)
- सांख्यिकी के प्रकार (Types of Statistics)
- औसतांक (Mean)
- मध्यांक (Median)
- बहुलांक (Mode)
- बहुलांक के प्रकार (Types of Mode)
- संविधान एवं मूल्य (Constitution and Value)
- महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)
- UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न
- महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न
- व्याख्यात्मक हल

अध्याय

1

बाल विकास : अर्थ, आवश्यकता, महत्व, क्षेत्र एवं अवस्थाएँ

इस अध्याय में अंतर्निहित विषयवस्तु

- बाल मनोविज्ञान की अवधारणा
- बाल मनोविज्ञान का अर्थ
- बाल विकास का अर्थ
- बाल विकास के क्षेत्र
- बाल विकास की आवश्यकता
- बाल विकास का महत्व
- बाल विकास के सिद्धान्त
- विकास की अवधारणा
- वृद्धि की अवधारणा
- विकास की प्रकृति
- वृद्धि की प्रकृति
- वृद्धि और विकास में अन्तर
- मानव के विकास की अवस्थाएँ
- मानव विकास के विभिन्न पक्ष
  - शारीरिक विकास
  - मानसिक विकास
  - सामाजिक विकास
  - संवेगात्मक विकास
  - नैतिक विकास
- भाषा विकास अभिव्यक्ति का विकास
- सृजनात्मक क्षमता का विकास

बाल मनोविज्ञान की अवधारणा (Concept of Child Psychology)

मनोविज्ञान का जन्मदाता दर्शनशास्त्र (Philosophy) ही है। आज से कुछ वर्ष पूर्व मनोविज्ञान अलग विषय के रूप में विकसित नहीं था, बल्कि यह दर्शनशास्त्र की ही एक शाखा के रूप में था। मनोविज्ञान अंग्रेजी भाषा के शब्द '**साइकोलोजी**' (Psychology) का हिन्दी रूपान्तर है। '**साइकोलोजी**' (Psychology) शब्द दो शब्दों के जोड़ से बना है अर्थात् '**साईक**' (Psyche) (+) '**लोगोस**' (Logos) साइक का अर्थ है–आत्मा तथा लोगोस का अर्थ है–विज्ञान अर्थात् इसका अभिप्राय यह हुआ कि '**आत्मा का विज्ञान**'। साईक (Psyche) + लोगोस (Logos) साईकालोजी (Psychology) आत्मा का विज्ञान।

मनोविज्ञान के जनक → अरस्तू

गैरिट ने "मनोविज्ञान को आत्मा का विज्ञान माना है।"

वाटसन "मनोविज्ञान, व्यवहार का निश्चित विज्ञान है।"

वुडवर्थ "मनोविज्ञान, वातावरण के सम्बन्ध में व्यक्ति की क्रियाओं का वैज्ञानिक अध्ययन है।"

स्किनर "मनोविज्ञान, जीवन की सभी प्रकार की परिस्थितियों में प्राणी की प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है। प्रक्रियाओं अथवा व्यवहार का तात्पर्य है–प्राणी की सब प्रकार की गतिविधियाँ, समायोजनाएँ, क्रियाएँ एवं अभिव्यक्तियाँ।"

वुडवर्थ के अनुसार, "मनोविज्ञान वातावरण के सम्पर्क में होने वाले मानव–व्यवहारों का विज्ञान है।"

कालसनिक के अनुसार, "मनोविज्ञान मानव–व्यवहार का विज्ञान है।"

बाल मनोविज्ञान का अर्थ (Meaning of Child Psychology)

बालकों का अध्ययन जब मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है तो वह बाल मनोविज्ञान कहलाता है। बाल मनोविज्ञान दो शब्दों से मिलकर बना है–

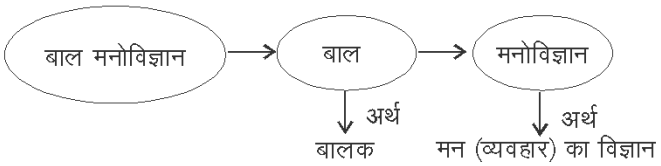

अर्थात् बाल मनोविज्ञान का अर्थ विज्ञान की वह शाखा है जो बालकों के व्यवहारों का अध्ययन गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक करती है।

1. **क्रो और क्रो** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान वह वैज्ञानिक अध्ययन है जो व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल की प्रारम्भिक अवस्था से किशोरावस्था तक करता है।"
2. **आइजनेक** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान, बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से सम्बन्धित विज्ञान है, जो शिशु जन्म पूर्व, जन्म के समय, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्वावस्था तक बालक में मनोवैज्ञानिक विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।"
3. **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार–"बाल मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो प्राणी के विकास का अध्ययन जन्म से परिपक्वावस्था तक करती है।"

- बाल मनोविज्ञान बच्चों के व्यवहार से सम्बन्धित मनोविज्ञान है।
- इसमें बच्चों की वैयक्तिक विभिन्नताओं का ध्यान रखा जाता है।
- यह बालकेन्द्रित शिक्षा पर बल देता है।
- बालक का विकास गर्भाधान से प्रारम्भ हो जाता है और जीवन पर्यन्त चलता है।
- बालक आंतरिक वातावरण से मिलकर बाह्य वातावरण में आता है।
- बाल मनोविज्ञान में बालक की स्मृति, कल्पना, स्वभाव, धारण शक्ति, अभिप्रेरणा आदि का अध्ययन किया जाता है।

बाल मनोविज्ञान के जनक → पेस्टालॉजी

आधुनिक मनोविज्ञान के जनक → विलियम जेम्स

बाल विकास का अर्थ
(Meaning of Child Development)

बाल विकास, मनोविज्ञान की एक शाखा के रूप में विकसित हुआ है। इसके अन्तर्गत बालकों के व्यवहार, स्थितियाँ, समस्याओं तथा उन सभी कारणों का अध्ययन किया जाता है, जिनका प्रभाव बालक के व्यवहार पर पड़ता है।

क्रो एण्ड **क्रो** के अनुसार—"बाल विकास वह विज्ञान है जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।"

डार्विन के अनुसार—"बाल विकास व्यवहारों का वह विज्ञान है जो बालक के व्यवहार का अध्ययन गर्भावस्था से मृत्युपर्यन्त तक करता है।"

हरलॉक के अनुसार—"बाल विकास मनोविज्ञान की वह शाखा है जो गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त तक होने वाले मनुष्य के विकास की विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करता है।"

इस प्रकार उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट होता है कि बाल विकास बाल मनोविज्ञान की ही एक शाखा है जो (i) बालकों के विकास, (ii) व्यवहार, (iii) विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न तत्वों का अध्ययन करती है।

बाल विकास के क्षेत्र
(Scope of Child Development)

बाल विकास निम्नलिखित क्षेत्र हैं—

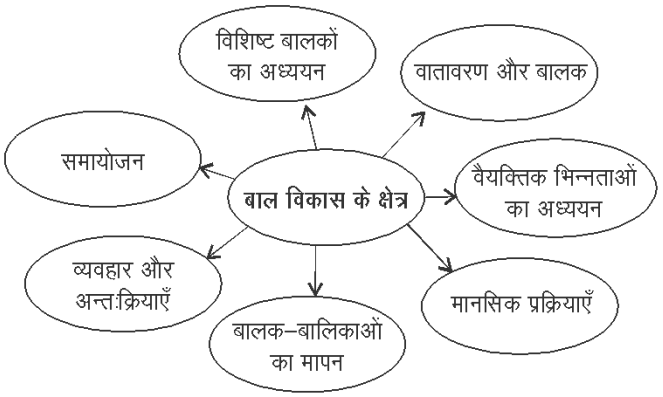

बाल विकास की आवश्यकता
(Need of Child Development)

बाल विकास अनुसन्धान का एक क्षेत्र माना जाता है। बालक के जीवन को सुखी और समृद्धिशाली बनाने में बाल–मनोविज्ञान का योगदान प्रशंसनीय है। मनोविज्ञान की इस शाखा का केवल बालकों से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सम्बन्ध है, जो बालकों की समस्याओं पर विचार करते हैं और बाल मनोविज्ञान की उपयोगिता को स्वीकार करते हैं। समाज के विभिनन लोग बाल–मनोविज्ञान से लाभान्वित हो रहे हैं, जैसे—बालक के माता–पिता तथा अभिभावक, बालक के शिक्षक, बाल सुधारक तथा बाल–चिकित्सक आदि। बाल विकास के द्वारा हम बाल–मन और बाल व्यवहारों तथा बालक के विकास के रहस्यों को भली–भाँति समझ सकते हैं। बाल मनोविज्ञान हमारे सम्मुख बालकों के भविष्य की एक उचित रूपरेखा प्रस्तुत करता है। जिससे अध्यापक एवं अभिभावक बच्चे में अधिगम की क्षमता का सही विकास कर सकते हैं। किस अवस्था में बच्चे की कौन–सी क्षमता का विकास कराना चाहिए, इसका उचित प्रयोग अवस्थानुसार विकास के प्रारूपों को जानने के पश्चात् ही हो सकेगा। उदाहरण के लिए एक बच्चे को चलना तभी सिखाया जाए, जब वह चलने की अवस्था का हो चुका हो, अवस्था इसके परिणाम विपरीत हो सकते हैं।

बाल विकास शिक्षकों के लिए निम्न प्रकार से आवश्यक है—

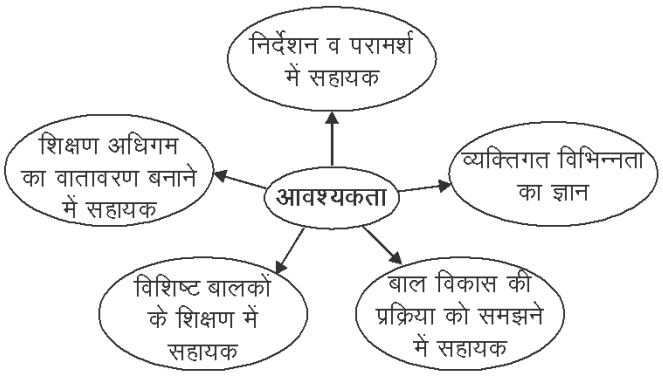

बाल विकास का महत्व
(Importance of Child Development)

बाल विकास का महत्व निम्नलिखित रूप से हैं—

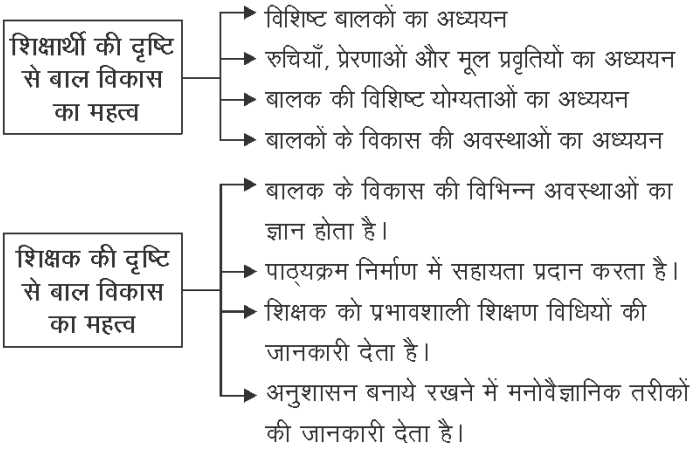

बाल विकास के सिद्धान्त
(Principles of Child Development)

गैरिसन तथा अन्य (Garrison and Others) के अनुसार—"जब बालक, विकास की एक अवस्था से दूसरी में प्रवेश करता है, तब हम उसमें कुछ परिवर्तन देखते हैं। अध्ययनों ने सिद्ध कर दिया है कि ये परिवर्तन निश्चित सिद्धान्तों के अनुसार होते हैं। इन्हीं को विकास के सिद्धान्त कहा जाता है।" हम निम्नलिखित पंक्तियों में इनका वर्णन कर रहे हैं, यथा—

1. **निरन्तर विकास का सिद्धान्त** (Principle of Continuous Growth)—इस सिद्धान्त के अनुसार, विकास की प्रक्रिया अविराम गति से निरन्तर चलती रहती है। पर यह गति कभी तीव्र और कभी मन्द होती है, उदाहरणार्थ, प्रथम तीन वर्षों में बालक के विकास की प्रक्रिया बहुत तीव्र रहती है और उसके बाद मन्द पड़ जाती है।
2. **विकास की विभिन्न गति का सिद्धान्त** (Principle of Different Rate of Growth)—**डगलस एवं हालैण्ड** (Douglas and Holland) ने इस सिद्धान्त का स्पष्टीकरण करते हुए लिखा है—विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता होती है और यह विभिन्नता विकास के सम्पूर्ण काल में

यथावत् बनी रहती है, उदाहरणार्थ, जो व्यक्ति जन्म के समय लम्बा होता है, वह साधारणतः बड़ा होने पर भी लम्बा रहता है और जो छोटा होता है, वह साधारणतः छोटा रहता है।

3. **विकास-क्रम का सिद्धान्त** (Principle of Developmental Sequence)—इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का गामक (Motor) और भाषा-सम्बन्धी आदि विकास एक निश्चित क्रम में होता है। **शर्ले, गेसेल, पियाजे, एमिस** (Shirley, Gesell, Piaget, Amis) आदि की परीक्षाओं ने यह बात सिद्ध कर दी है, उदाहरणार्थ—32 से 36 माह का बालक वृत्त (Circle) को उल्टा (Counter Clock-wise), 60 माह का बालक सीधा (Clock-Wise) और 72 माह का फिर उल्टा बनाता है। इसी प्रकार, जन्म के समय वह केवल रोना जानता है। 3 माह में वह गले से एक विशेष प्रकार की आवाज निकालने लगता है। 6 माह में वह आनन्द की ध्वनि करने लगता है। 7 माह में वह अपने माता-पिता के लिए 'पा', 'बा', 'दा' आदि शब्दों का प्रयोग करने लगता है।

4. **विकास-दिशा का सिद्धान्त** (Principle of Development Direction)—इस सिद्धान्त के अनुसार, बालक का विकास सिर से पैर की दिशा में होता है, उदाहरणार्थ, अपने जीवन के प्रथम सप्ताह में बालक केवल अपने सिर को उठा पाता है। पहले 3 माह में वह अपने नेत्रों की गति पर नियंत्रण करना सीख जाता है। 6 माह में वह अपने हाथों की गतियों पर अधिकार कर लेता है। 8 माह में वह सहारा लेकर बैठने लगता है। 10 माह में वह स्वयं बैठने और घिसट कर चलने लगता है। एक वर्ष का हो जाने पर उसे अपने पैरों पर नियंत्रण हो जाता है और वह खड़ा होने लगता है। इस प्रकार, जो शिशु अपने जन्म के प्रथम सप्ताह में केवल अपने सिर को उठा पाता था, वह एक वर्ष बाद खड़ा होने और 18 माह के बाद चलने लगता है।

5. **एकीकरण का सिद्धान्त** (Principle of Integration)—इस सिद्धान्त के अनुसार, बालक पहले सम्पूर्ण अंग को और फिर अंग के भागों को चलाना सीखता है। उसके बाद, वह उन भागों में एकीकरण करना सीखता है, उदाहरणार्थ, वह पहले पूरे हाथ को, फिर अंगुलियों को और फिर हाथ एवं अंगुलियों को एक-साथ चलाना सीखता है।

6. **परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त** (Principle of Interrelation)—इस सिद्धान्त के अनुसार, बालक के शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक आदि पहलुओं के विकास में परस्पर सम्बन्ध होता है, उदाहरणार्थ, जब बालक के शारीरिक विकास के साथ–साथ उसकी रुचियों, ध्यान के केन्द्रीयकरण और व्यवहार में परिवर्तन होते हैं, तब साथ-साथ उसमें गामक और भाषा-सम्बन्धी विकास भी होता है।

7. **वैयक्तिक विभिन्नताओं का सिद्धान्त** (Principle of Individual Differences)—इस सिद्धान्त के अनुसार प्रत्येक बालक और बालिका के विकास का अपना स्वयं का स्वरूप होता है। इस स्वरूप में वैयक्तिक विभिन्नतायें पायी जाती हैं। एक ही आयु के दो बालकों और दो बालिकाओं या एक बालक और एक बालिका के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक आदि विकास में वैयक्तिक विभिन्नताओं की उपस्थिति स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।

8. **समान प्रतिमान का सिद्धान्त** (Principle of Uniform Pattern)—इस सिद्धान्त का अर्थ स्पष्ट करते हुए **हरलॉक** (Hurlock) ने लिखा है—"प्रत्येक जाति, चाहे वह पशुजाति हो या मानवजाति, अपनी जाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान का अनुसरण करती है।" उदाहरणार्थ, संसार के प्रत्येक भाग में मानव-जाति के शिशुओं के विकास का प्रतिमान एक ही है और उसमें किसी प्रकार का अन्तर होना सम्भव नहीं है।

9. **सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं का सिद्धान्त** (Principle of General and Specific Responses)—इस सिद्धान्त के अनुसार बालक का विकास सामान्य प्रतिक्रियाओं की ओर होता है, उदाहरणार्थ, नवजात शिशु अपने शरीर के किसी एक अंग का संचालन करने से पूर्व अपने शरीर का संचालन करता है और किसी विशेष वस्तु की ओर इशारा करने से पूर्व अपने हाथों को सामान्य रूप से चलाता है।

10. **वंशानुक्रम व वातावरण की अन्तःक्रिया का सिद्धान्त** (Principles of Interaction of Heredity and Environment)—इस सिद्धान्त के अनुसार, बालक का विकास न केवल वंशानुक्रम के कारण और न केवल वातावरण के कारण, वरन् दोनों की अन्तःक्रिया के कारण होता है।

विकास के कुछ अन्य सिद्धान्त हैं—

1. सुनम्यता–विकास में सकारात्मक या नकारात्मक अनुभवों के आधार पर परिवर्तन की क्षमता होती है। वे लोग जिनका अतीत भयानक रहा होता है वे भी उससे उबर कर भविष्य में खुशहाल जीवन जी सकते हैं।
2. बहुआयामी–विकास को केवलएक मापदंड जैसे कि व्यवहार में उतार चढ़ाव से ही वर्णित नहीं किया जा सकता।
3. बहुदिशात्मकः विकास का कोई एक सामान्य रास्ता नहीं है जो सबको लेना पड़ेगा। विकास के स्वास्थ्य परिणामों को विभिन्न प्रकार से प्राप्त किया जा सकता है।

4. विकास का क्रम कुछ हद तक उम्मीद के मुताबिक होता है और उसकी भविष्यवाणी पहले की जा सकती है।
5. विकास में मात्रात्मक तथा गुणात्मक दोनों प्रकार के परिवर्तन शामिल होते हैं।
6. अधिगम तथा विकास अनुभवों तथा परिपक्वता की अंतःक्रिया का परिणाम है।
7. पूर्व अनुभवों का अधिगम तथा विकास पर गम्भीर प्रभाव पड़ता है।
8. सुरक्षित संबंधों में बच्चों का विकास सर्वाधिक उचित तरीके से होता हैं।
9. अधिगम तथा विकास विभिन्न सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्यों में होता है तथा उनसे प्रभावित भी होता है।
10. यदि बच्चा विकलांग हो तो अधिगम तथा विकास प्रभावित होते हैं।
11. बच्चों के अनुभवों से उनके अभिप्रेरणा तथा अधिगम के उपागम को आकार मिलता है।

हालाँकि विकास के कुछ विशिष्ट पथ हैं जो सभी मानवों के लिए समान रहते हैं मगर फिर भी कोई भी दो इंसान पूर्णतः एक जैसे नहीं होते। एक ही घर में पालन-पोषण होने के बाद भी बच्चों की रुचियों, मूल्यों, क्षमताओं तथा व्यवहार में भिन्नताएँ पाई जाती हैं।

बाल विकास के सिद्धान्तों का शैक्षिक महत्व (Educational Importance of the Principles of Child Development)

विकास के सिद्धान्तों का ज्ञान शिक्षक के लिए विशेष रूप से आवश्यक माना गया हैं क्योंकि बालक की शिक्षा की व्यवस्था शिक्षक द्वारा की जाती है। शिक्षक के लिए इन सिद्धान्तों का जानना आवश्यक है। क्योंकि विकास के सिद्धान्तों से परिचित होने पर शिक्षक यह बात जानता है कि वह छात्रों को विकास के लिए प्रेरणा कब प्रदान की जाये। अतः इसके लिए वातावरण तैयार किया जाना चाहिए।

बाल विकास के सिद्धान्त का शैक्षिक महत्व निम्नलिखित है–

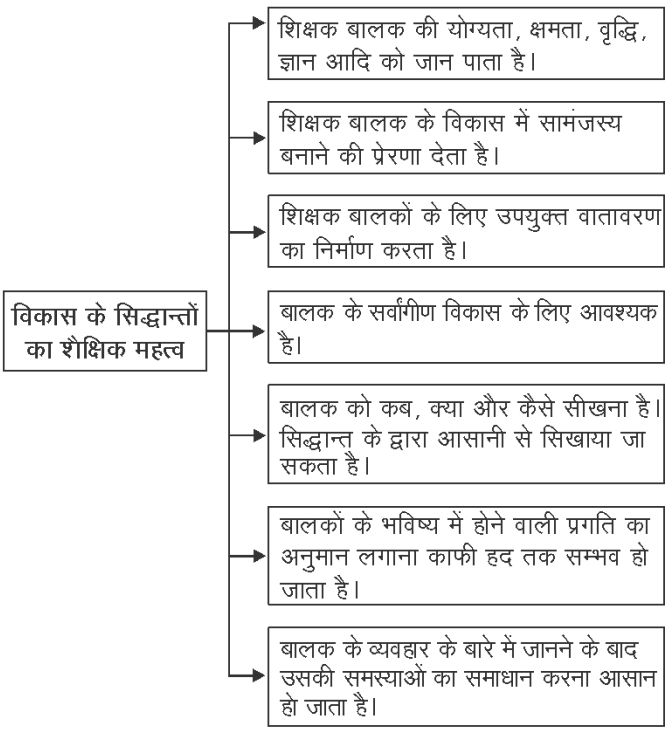

विकास की अवधारणा (Concept of Development)

विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो जन्म से लेकर जीवनपर्यन्त तक अविराम गति से चलती रहती है। विकास केवल शारीरिक वृद्धि की ओर ही संकेत नहीं करता वरन् इसके अन्तर्गत के सभी शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक परिवर्तन सम्मिलित रहते हैं जो गर्भकाल से लेकर मृत्युपर्यन्त तक निरन्तर प्राणी में प्रकट होते रहते हैं। अतः प्राणी के भीतर विभिन्न प्रकार के शारीरिक व मानसिक क्रमिक परिवर्तनों की उत्पत्ति ही 'विकास' है।

हरलॉक (Hurlock) ने विकास को परिभाषित करते हुये कहा है कि "विकास केवल अभिवृद्धि तक ही सीमित नहीं है वरन् वह 'व्यवस्थित' तथा 'समनुगत' परिवर्तन है जिसमें कि प्रौढ़ावस्था के लक्ष्य की ओर परिवर्तनों का प्रगतिशील क्रम निहित रहता है, जिसके परिणामस्वरूप व्यक्ति में नवीन विशेषतायें व योग्यतायें प्रकट होती हैं।"

जेम्स ड्रेवर (James Drever) ने विकास को परिभाषित करते हुये कहा है कि "विकास वह दशा है जो प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में प्राणी में सतत् रूप से व्यक्त होती है। यह प्रगतिशील परिवर्तन किसी भी प्राणी में भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक होता है। यह विकास तन्त्र को सामान्य रूप से नियंत्रित करता है। यह प्रगति का मानदण्ड है और इसका आरम्भ शून्य से होता है।"

मुनरो के अनुसार, "विकास परिवर्तन शृंखला की वह अवस्था है जिसमें बच्चा भ्रूणावस्था से लेकर प्रौढ़ावस्था तक गुजरता है, विकास कहलाता है।"

वृद्धि की अवधारणा (Concept of Growth)

वृद्धि को आमतौर पर मानव के शरीर के विभिन्न अंगों के विकास तथा उन अंगों की कार्य करने की क्षमता का विकास माना जाता है। जैसे–शरीर, आकार और भार की वृद्धि। **हरबर्ट सोरेन्सन** के अनुसार, "शारीरिक वृद्धि को बड़ा और भारी होना" बताया है जो वृद्धि और परिवर्तन की ओर संकेत करते हैं। वृद्धि को नापा और तौला जा सकता है।

फ्रैंक के अनुसार, "शरीर के किसी विशेष पक्ष में जो परिवर्तन आता है उसे वृद्धि कहते हैं।"

विकास की प्रकृति (Nature of Development)

विकास की प्रकृति निम्नलिखित रूप से है–

1. विकास की निश्चित पद्धति होती है।
2. विकास सामान्य से विशिष्ट दिशा की ओर होता है।
3. विकास रुकता नहीं, निरन्तर चलता रहता है।
4. विकास का अर्थ अधिक व्यापक है।
5. विकास और वृद्धि की प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं।
6. विकास गुणात्मक (Quality) परिवर्तनों का संकेतक है।

वृद्धि की प्रकृति (Nature of Growth)

1. वृद्धि को मात्रा के रूप में माना जा सकता है।
2. वृद्धि निरन्तर नहीं होती।
3. वृद्धि आन्तरिक रूप से होती है।
4. स्त्रियों में पुरुषों की अपेक्षा वृद्धि तीव्र होती है।
5. शारीरिक और मानसिक वृद्धि का आपस में गहरा सम्बन्ध है।

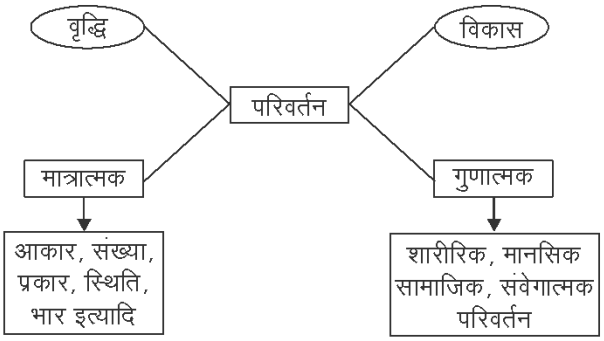

वृद्धि और विकास में मुख्य अन्तर (Main Difference between Growth and Development)

वृद्धि (Growth)	विकास (Development)
1. 'वृद्धि' शब्द का प्रयोग केवल परिमाणात्मक परिवर्तनों से होता है। उदाहरण के लिए, बालक की आयु बढ़ने के साथ उसकी लम्बाई, ऊँचाई व भार आदि में होने वाले परिवर्तन।	'विकास' शब्द का प्रयोग परिमाणात्मक तथा गुणात्मक दोनों परिवर्तनों के लिए किया जाता है, जिससे व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व में आए परिवर्तनों का संकेत मिलता है।
2. 'वृद्धि' एक विशेष आयु तक होती है। शारीरिक परिपक्वता ग्रहण करने के साथ ही वृद्धि रुक जाती है। जैसे—कद, जोकि एक विशेष आयु के बाद बढ़ना रुक जाता है।	'विकास' निरन्तर व कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है, जो जन्म से लेकर मृत्यु तक चलती रहती है।
3. 'वृद्धि' शब्द का प्रयोग संकुचित अर्थ में किया जाता है, सभी प्रकार के परिवर्तनों में से केवल परिमाणात्मक परिवर्तनों को ही व्यक्त करता है।	'विकास' शब्द का वृद्धि से कहीं अधिक विस्तृत अर्थ में प्रयोग होता है वृद्धि भी इसका भाग है, क्योंकि 'विकास' का प्रयोग हम सभी प्रकार के परिवर्तनों को प्रकट करने के लिए करते हैं।
4. 'वृद्धि' शब्द शरीर के किसी एक पक्ष में होने वाले परिवर्तनों को प्रकट करता है।	'विकास' शब्द व्यक्ति के व्यक्तित्व के सम्पूर्ण परिवर्तनों को संयुक्त रूप से प्रदर्शित करता है।
5. 'वृद्धि' के प्रारूपों में वैयक्तिक भिन्नता पाई जाती है।	'विकास' के प्रारूप निश्चित होते हैं।
6. 'वृद्धि' संरचनात्मक परिवर्तनों से सम्बन्धित है।	'विकास' प्रकार्यात्मक परिवर्तनों से सम्बन्धित है।

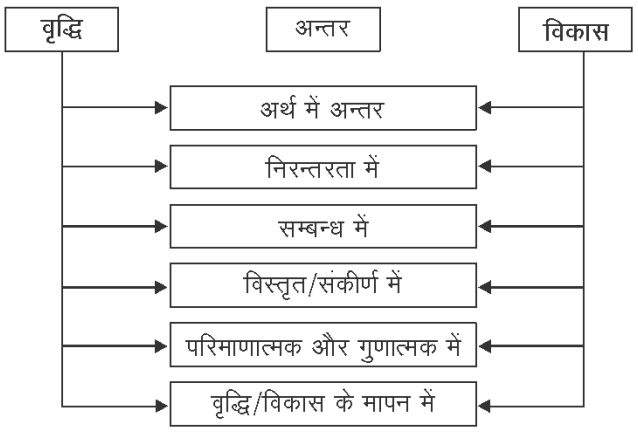

वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारक (Factors Affecting Growth and Development)

वृद्धि और विकास को प्रभावित करने वाले कारक निम्नलिखित हैं—

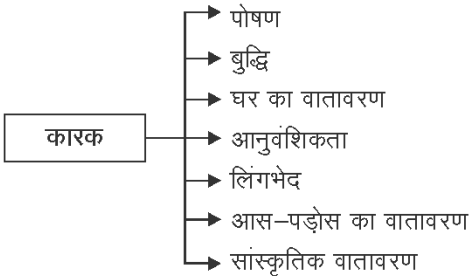

मानव के विकास की अवस्थाएँ (Stages of Human Development)

रॉस के अनुसार मानव विकास की अवस्थाएँ—

1. शैशवावस्था (Infancy) 1-3 वर्ष
2. पूर्व बाल्यकाल (Early Childhood) 3-6 वर्ष
3. उत्तर बाल्यकाल (Later Childhood) 6-12 वर्ष
4. किशोरावस्था (Adolescence) 12-18 वर्ष

ई. बी. हरलॉक के अनुसार विकास की अवस्थाएँ—

1. **जन्म से पूर्व की अवस्था**—गर्भाधान से जन्म तक का समय अर्थात् 280 दिन।
2. **शैशवावस्था**—जन्म से लेकर 2 सप्ताह।
3. **शिशुकाल**—2 वर्ष तक।
4. **बाल्यकाल**—2 से 11 या 12 वर्ष तक।
   - **(i) पूर्व बाल्यकाल**—6 वर्ष तक।
   - **(ii) उत्तर बाल्यकाल**—7 से 12 वर्ष तक।
5. **किशोरावस्था**—11 से 13 वर्ष से लेकर 20-21 वर्ष तक की अवधि।
   - **(i) प्राकिशोरावस्था**—लड़कियों में 11-13 वर्ष तक। लड़कों में एक वर्ष पश्चात्
   - **(ii) पूर्व–किशोरावस्था**—16-17 वर्ष तक।
   - **(iii) उत्तर–किशोरावस्था**—20-21 वर्ष तक।

जेम्स के अनुसार विकास की अवस्थाएँ—

1. शैशवावस्था—जन्म से 5 वर्ष तक।
2. बाल्यावस्था—6 से 12 वर्ष तक।
3. किशोरावस्था—13 से 19 वर्ष तक।
4. प्रौढ़ावस्था—20 वर्ष से ऊपर।

प्रमुख अवस्थाएँ (Main Stages)

1. शैशवावस्था,
2. बाल्यावस्था,
3. किशोरावस्था।

1. शैशवावस्था—शैशवावस्था जन्म होने के उपरान्त मानव विकास की प्रथम अवस्था है। शैशवावस्था को जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल माना जाता है। साधारणतः शिशु के जन्म से 5 या 6 वर्ष तक की अवस्था को शैशवावस्था माना जाता है।

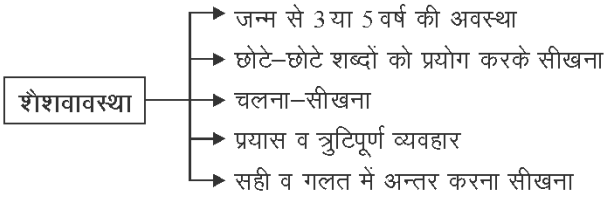

2. **बाल्यावस्था**—शैशवावस्था के उपरान्त बाल्यावस्था आरम्भ होती है। यह अवस्था दो भागों में विभाजित होती है—(1) प्रारम्भिक या पूर्व बाल्यावस्था, (2) उत्तर बाल्यावस्था। पूर्व बाल्यावस्था 2 वर्ष से 6 वर्ष तक मानी जाती है तथा उत्तर बाल्यावस्था 6 वर्ष से 12 वर्ष तक मानी जाती है। यह अवस्था बालक के व्यक्तित्व के निर्माण की होती है। बालक में इस अवस्था में विभिन्न आदतों, व्यवहार, रुचि एवं इच्छाओं के प्रतिरूपों का निर्माण होता है।

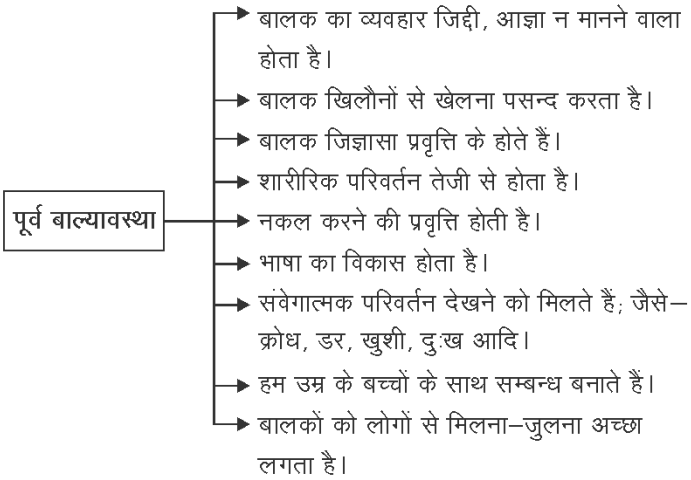

3. **किशोरावस्था**—किशोरावस्था मानव-जीवन के विकास की सबसे महत्वपूर्ण अवस्था है। **किलपैट्रिक** ने तो इस अवस्था को जीवन का सबसे जटिल काल माना है। यह समय बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था का का सन्धिकाल होता है। जिसमें वह न तो बालक ही रह जाता है और न तो प्रौढ़ ही बन पाता है।

किशोरावस्था को अंग्रेजी में 'एडोलेसेन्स' (Adolescence) कहते हैं, जो लैटिन भाषा के 'एडोलिसियर' (Adolescere) से बना है; जिसका अर्थ है—परिपक्वता की ओर बढ़ना (To grow to Maturity), अतः किशोरावस्था वह अवस्था है जिसमें बालक परिपक्वता की ओर अग्रसर होता है तथा जिसकी समाप्ति पर वह परिपक्व व्यक्ति बन जाता है। प्रायः 12 से 18 वर्ष की आयु के बीच की अवधि को किशोरावस्था माना जाता है।

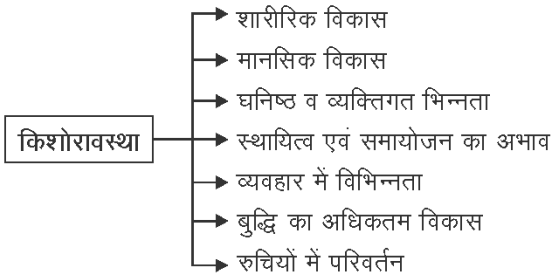

मानव विकास के विभिन्न पक्ष (Different Aspects of Human Development)

मानव के वृद्धि एवं विकास के विभिन्न पक्ष निम्नलिखित है—

1. शारीरिक विकास,
2. मानसिक विकास,
3. सामाजिक विकास,
4. संवेगात्मक विकास,
5. नैतिक विकास,
6. भाषा विकास अभिव्यक्ति का विकास
7. सृजनात्मक क्षमता का विकास

1. शारीरिक विकास (Physical Development)

शारीरिक विकास की विभिन्न अवस्थाएँ होती हैं—

(1) शैशवावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development in Infancy)—शैशवावस्था में शारीरिक विकास निम्न प्रकार से होता है।

1. **भार** (Weight)—जन्म के समय और पूरी शैशवावस्था में बालक का भार बालिका से अधिक होता है। जन्म के समय बालक का भार लगभग 7·15 पौंड और बालिका का भार लगभग 7·13 पौंड होता है। पहले 6 माह में शिशु का भार दुगुना और एक वर्ष के अन्त में तिगुना हो जाता है। दूसरे वर्ष में शिशु का भार केवल 1/2 पौंड प्रति मास के हिसाब से बढ़ता है और पाँचवें वर्ष के अन्त में 38 एवं 43 पौंड के बीच में होता है।
2. **लम्बाई** (Length)—जन्म के समय और सम्पूर्ण शैशवावस्था में बालक की लम्बाई बालिका से अधिक होती है। जन्म के समय बालक की लम्बाई लगभग 20·5 इंच और बालिका की लम्बाई 20·3 इंच होती है। अगले 3 या 4 वर्षों में बालिकाओं की लम्बाई, बालकों से अधिक हो जाती है। उसके बाद बालकों की लम्बाई बालिकाओं से आगे निकलने लगती है। पहले वर्ष में शिशु की लम्बाई लगभग 10 इंच और दूसरे वर्ष में 4 या 5 इंच बढ़ती है। तीसरे, चौथे और पाँचवें वर्ष में उसकी लम्बाई कम बढ़ती है।
3. **सिर व मस्तिष्क** (Head and Brain)—नवजात शिशु के सिर की लम्बाई उसके शरीर की कुल लम्बाई की 1/4 होती है। पहले दो वर्षों में सिर बहुत तीव्र गति से बढ़ता है, पर उसके बाद गति धीमी हो जाती है। जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार 350 ग्राम होता है और शरीर के भार के अनुपात में अधिक होता है। यह भार दो वर्ष में दुगुना और 5 वर्ष में शरीर के कुल भार का लगभग 80% हो जाता है।

4. **हड्डियाँ** (Bones)—नवजात शिशु की हड्डियाँ छोटी और संख्या में 270 होती हैं। सम्पूर्ण शैशवावस्था में ये छोटी, कोमल, लचीली और भली प्रकार जुड़ी हुई नहीं होती हैं। ये कैल्शियम फास्फेट और अन्य खनिज पदार्थों की सहायता से दिन–प्रति–दिन कड़ी होती चली जाती हैं। इस प्रक्रिया को 'अस्थीकरण' या 'अस्थी निर्माण' (Ossification) कहते हैं। बालकों की तुलना में बालिकाओं में अस्थीकरण की गति तीव्र होती है।
5. **दाँत** (Teeth)—छठे माह में शिशु के अस्थायी या दूध के दाँत निकलने आरम्भ हो जाते हैं। सबसे पहले नीचे के अगले दाँत निकलते हैं और एक वर्ष की आयु तक उनकी संख्या 8 हो जाती है। लगभग 4 वर्ष की आयु तक शिशु के दूध के सब दाँत निकल आते हैं।
6. **अन्य अंग** (Other Organs)—नवजात शिशु की माँसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भार का 23% होता है। यह भार धीरे-धीरे बढ़ता चला जाता है। जन्म के समय हृदय की धड़कन कभी तेज और कभी धीमी होती है। जैसे-जैसे हृदय बड़ा होता जाता है, वैसे-वैसे धड़कन में स्थिरता आती जाती है। पहले माह में शिशु के हृदय की धड़कन 1 मिनट में लगभग 140 बार होती है। लगभग 6 वर्ष की आयु में इनकी संख्या घटकर 100 हो जाती है। शिशु के शरीर के ऊपरी भाग का लगभग पूर्ण विकास 6 वर्ष की आयु तक हो जाता है। टाँगों और भुजाओं का विकास अति तीव्र गति से होता है। पहले दो वर्षों में टाँगें ड्यौढ़ी और भुजायें दुगुनी हो जाती हैं। शिशु के यौन-सम्बन्धी अंगों का विकास अति मन्द गति से होता है।

(2) बाल्यावस्था में शारीरिक विकास (Physical Development in Childhood)—बाल्यावस्था में शारीरिक विकास निम्न प्रकार से होता है–

1. **भार** (Weight)—बाल्यावस्था में बालक के भार में पर्याप्त वृद्धि होती है। 12 वर्ष के अन्त में उसका भार 80 और 95 पौंड के बीच में होता है। 9 या 10 वर्ष की आयु तक बालकों का भार बालिकाओं से अधिक होता है। इसके बाद बालिकाओं का भार अधिक होना आरम्भ हो जाता है।
2. **लम्बाई** (Length)—बाल्यावस्था में 6 या 12 वर्ष तक शरीर की लम्बाई कम बढ़ती है। इन सब वर्षों में लम्बाई लगभग 2 या 3 इंच ही बढ़ती है।
3. **सिर व मस्तिष्क** (Head and Brain)—बाल्यावस्था में सिर के आकार में क्रमशः परिवर्तन होता रहता है। 5 वर्ष की आयु में सिर–प्रौढ़ आकार का 90% और 10 वर्ष की आयु में 95% होता है। बालक के मस्तिष्क के भार में भी परिवर्तन होता रहता है। 9 वर्ष की आयु में बालक के मस्तिष्क का भार उसके कुल शरीर के भार का 90% होता है।
4. **हड्डियाँ** (Bones)—बाल्यावस्था में हड्डियों की संख्या और अस्थीकरण अर्थात् दृढ़ता में वृद्धि होती रहती है। इस अवस्था में हड्डियों की संख्या 270 से बढ़कर 350 हो जाती है।
5. **दाँत** (Teeth)—लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक के दूध के दाँत गिरने और उनके बजाय स्थायी दाँत निकलने आरम्भ हो जाते हैं। 12 या 13 वर्ष तक उसके सब स्थायी दाँत निकल आते हैं, जिनकी संख्या लगभग 32 होती है। बालिकाओं के स्थायी दाँत बालकों से जल्दी निकलते हैं।
6. **अन्य अंग** (Other Organs)—इस अवस्था में माँसपेशियों का विकास धीरे-धीरे होता है। 9 वर्ष की आयु में बालक की माँसपेशियों का भार उसके शरीर के कुल भार का 27% होता है। हृदय की धड़कन की गति में निरन्तर कमी होती जाती है। 12 वर्ष की आयु में धड़कन 1 मिनट में 85 बार होती है। बालक के कन्धे चौड़े, कूल्हे पतले और पैर सीधे और लम्बे होते हैं। बालिकाओं के कन्धे पतले, कूल्हे चौड़े और पैर कुछ अन्दर को झुके हुए होते हैं। 11 या 12 वर्ष की आयु में बालकों और बालिकाओं के यौनांगों का विकास तीव्र गति से होता है।

2. मानसिक विकास (Mental Development)

मानसिक विकास का केन्द्र बिन्दु बुद्धि (Intelligence) है। इसी से मानसिक सजगता आती है एक सामान्य बुद्धि बालक मंद बुद्धि बालक की तुलना में अपने वातावरण के साथ आसानी से समायोजन स्थापित कर लेता है।

हरलॉक के अनुसार–"मानसिक दृष्टि से परिपक्व व्यक्ति वह है जो बौद्धिक रूप से चरम सीमा तक पहुँच चुका है।"

मानसिक विकास की विभिन्न अवस्थाएँ निम्न प्रकार से हैं–

(1) शैशवावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Infancy)—शैशवावस्था में मानसिक विकास का मुख्य साधन ज्ञानेन्द्रियों की क्षमता एवं गुणवत्ता का विकास होता है। इस विकास के अंतर्गत भाषा, स्मृति, तर्क, चिन्तन, कल्पना, निर्णय जैसी योग्यताओं को शामिल किया जाता है।

जॉन लॉक के अनुसार, "नवजात शिशु का मस्तिष्क कोरे कागज के समान होता है। अनुभव के साथ–साथ उसके ऊपर हर बात लिख दी जाती है।

जन्म से दो सप्ताह तक—जन्म के समय शिशु निरीह अवस्था में होता है, वह केवल अपनी शारीरिक दशाओं के अनुसार प्रतिवर्त क्रियायें; जैसे—रोना, साँस लेना, अधिक सर्दी लगने पर काँपना, आदि प्रदर्शित करता है। कभी-कभी तीव्र ध्वनियों को सुनकर चौंक जाता है। जन्म के दूसरे सप्ताह में वह तीव्र रोशनी की ओर भी ध्यान देने लगता है।

बचपनावस्था में बौद्धिक विकास (तीसरे सप्ताह से दूसरे वर्ष के अंत तक)—इस अवधि में शिशु माँ को पहचानने लगता है इसलिये रोता हुआ बालक माँ की गोद में जाने पर चुप हो जाता है। भूख लगने और पीड़ा होने पर वह गर्दन इधर-उधर घुमाकर यह देखने का प्रयास करता है कि माँ उसके पास है या नहीं।

प्रथम माह—प्रथम माह में वह अपने दुख, सुख का अनुभव करने लगता है। इसके अतिरिक्त वह अपने आस-पास व्यक्तियों की उपस्थिति तथा अनुपस्थिति को स्पष्ट रूप से महसूस करने लगता है।

द्वितीय माह—दो माह का बालक वस्तुओं की ओर अधिक ध्यान देने लगता है इसलिये सिर को इधर-उधर घुमाने लगता है। जैसे व्यक्ति और वस्तुयें उसके सामने आती हैं उन्हें ध्यान से देखने लगता है। माँ को देखकर प्रसन्न होता है और अस्पष्ट ध्वनि मुँह से निकालने लगता है।

तीसरा माह—तीन माह का शिशु वस्तुओं पर और अधिक ध्यान केन्द्रित करने लगता है। वस्तुओं को हाथों से कसकर पकड़ लेता है।

हरलॉक के अनुसार—"तीन माह की आयु में बालक उत्तेजनाओं के प्रति प्रतिक्रियायें प्रदर्शित करता है, विचित्र स्थितियों के प्रति सचेत होता है, उठाने पर सफलतापूर्वक समायोजन करता है।"

इस प्रकार तीन माह के शिशु में ध्यान और विवेक की योग्यता का विकास होने लगता है।

चतुर्थ माह—इस अवधि में शिशु क्रोध और स्नेह में अन्तर समझने लगता है। इस समय उसमें जिज्ञासा का भाव भी देखा जाता है। क्योंकि जब उसके पास से वस्तुओं को हटा लिया जाता है तो वह उन्हें खींचने का प्रयास करता है। इस अवधि में भाषा विकास भी हो जाता है, वह विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का उच्चारण मुँह से करता है।

पाँचवाँ माह—माँ को अच्छी तरह पहचानने लगता है इसलिये उसी के सम्पर्क में रहना चाहता है। माँ के साथ प्रसन्नता का अनुभव करता है और माँ से अलग होने पर कंपन करता है। अपने आस-पास रहने वाले व्यक्तियों को पहचानता है। आवाजों की ओर ध्यान देता है। विभिन्न वस्तुओं को पकड़ने के लिये हाथों को आगे बढ़ाता है।

छठवाँ माह—इस अवस्था में बालक में अनुकरण की क्षमता का विकास हो जाता है। वह बड़ों के हावभावों का अनुकरण करने लगता है। दुख की अवस्था में क्रोध का प्रदर्शन करता है। सही समय पर दूध न मिलने पर क्रोधित होता है और दूध मिलने पर मुस्कराता है।

सातवाँ माह—सात माह का शिशु विभिन्न वस्तुओं को स्पष्ट रूप से पहचानने लगता है; जैसे यदि उसे दूध के समय पानी देने पर वह स्पष्ट रूप से नकारात्मक उत्तर देता है। इस अवस्था में उसी अभिरुचि का भी विकास हो जाता है। जो वस्तुयें व क्रियायें उसे पसंद नहीं होती हैं उनकी उपस्थिति में रोता है। इस समय उसकी इन्द्रियों का पर्याप्त विकास हो जाता है अतः ठंडा, गर्म, खट्टा, मीठा, प्रकाश, अंधकार आदि वस्तुओं का ज्ञान होने लगता है।

आठवाँ माह—अनुकरण शक्ति का विकास और अधिक हो जाता है। वह अपनी विभिन्न वस्तुओं को पहचानता है इसलिये उसका खिलौना दूसरे बालक द्वारा ले लिये जाने पर क्रोधित हो जाता है। संकेतों को समझने लगता है और उसके अनुरूप प्रतिक्रिया प्रदर्शित करता है। अन्य समान आयु के बालकों के साथ खेलने का प्रयास भी करता है।

नवाँ माह—शिशु की अवबोधन शक्ति बढ़ जाती है। समान आयु के बच्चों को पहचानकर उनके साथ खेलता है। सामूहिक क्रियाओं में उसे आनंद आता है।

दसवाँ माह—इस अवस्था में वह सहयोग और विरोध दोनों का प्रकाशन करता है। इस समय ईर्ष्या प्रवृत्ति भी बालकों में देखी जाती है। अनुकरण क्षमता और अधिक बढ़ जाती है। अपनी भाषा द्वारा दूसरों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करता है।

ग्यारहवाँ व बारहवाँ माह—भाषा विकास अधिक हो जाता है। इस समय वह अस्पष्ट एक अक्षरीय भाषा का प्रयोग करता है। भिन्नता की भावना का विकास होता है जिससे अन्य लोगों के साथ रहना भी सीखता है। निरीक्षण क्षमता का विकास होता है फलस्वरूप वह विभिन्न वस्तुओं को उठाकर और छूकर देखता है।

प्रथम व द्वितीय वर्ष—इस अवस्था में बालक के बोलने की शक्ति का विकास हो जाता है। वह अपनी भाषा द्वारा दूसरों तक अपने विचारों को पहुँचाने का प्रयास करता है। एक शब्दीय वाक्यों को बोलता है। समूह में रहना पसन्द करता है। समूह के विचारों को ग्रहण करता है और सामाजिक क्रियाओं का अनुकरण करने लगता है। दो वर्ष का बालक छोटे-छोटे वाक्यों को बोलने लगता है। भाषा के माध्यम से उसका सामाजिक सम्पर्क बढ़ता है। शब्द भण्डार में वृद्धि होती है। कल्पना, चिन्तन और स्मरण शक्ति का भी विकास होता है। बालक छोटे-छोटे शब्दों, अंकों आदि को सीख जाता है।

(2) बाल्यावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Childhood)

तीसरा वर्ष—इस अवस्था में जिज्ञासा शक्ति बढ़ती है अतः बालक विभिन्न वस्तुओं के सम्बन्ध में प्रश्न करने लगता है। मानसिक शक्ति का विकास होता है जिससे वह अपना नाम, कुछ फल, अपने शरीर के अंग आदि को संकेतों से बता देता है। दैनिक प्रयोग की विभिन्न वस्तुयें माँगने पर उठाकर ले आता है।

चौथा वर्ष—स्कूल जाने की अवस्था होने के कारण इस समय बालक को सौ तक के अंकों का ज्ञान हो जाता है अतः पैसों के बारे में जानता है। इसके अतिरिक्त तर्क का प्रयोग कर लेता है। छोटी-बड़ी रेखाओं और आकारों में अंतर कर लेता है। लिखना भी आरंभ कर देता है तथा स्कूल जाने के कारण उसकी दिनचर्या तथा क्रियाओं में संतुलन आ जाता है।

पाँचवाँ वर्ष—इस अवस्था में उसे विभिन्न वस्तुओं के तुलनात्मक अध्ययन की जानकारी होती जाती है वह अपना नाम, पता, परिवार के लोगों का नाम तथा पास-पड़ोस के बारे में जानकारी रखता है। भाषा विकास अधिक हो जाता है, वाक्य बनाने की क्षमता आ जाती है, सरल तथा कुछ सीमा तक जटिल वाक्य बनाने लगता है। गणितीय ज्ञान में भी वृद्धि होती है। विभिन्न प्रत्ययों जैसे—रंग, समय, दिन, भार, संख्या आदि का ज्ञान हो जाता है। दैनिक जीवन के उपयोग में आने वाली विभिन्न वस्तुओं के सही उपयोग को समझने लगता है।

छठवाँ वर्ष—इस आयु में बालक का भाषा विकास और अधिक हो जाता है। विभिन्न वस्तुओं का प्रत्ययात्मक ज्ञान बढ़ता है। गणितीय योग्यता में भी वृद्धि होती है। 100 तक की गिनती आसानी से गिन लेता है। चित्रों से विभिन्न वस्तुओं का पहचान लेता है। अनुकरण की क्षमता बढ़ जाती है जिससे आस-पास की वस्तुओं और व्यक्तियों के अनुकरण को सीखने की क्षमता का विकास होता है। ध्यान की क्षमता में भी विकास होता है। विभिन्न प्रश्नों के उत्तर अपनी तर्क क्षमता के आधार पर देने लगता है।

सातवाँ वर्ष—स्कूल जाने के कारण इस अवस्था में बालक के भाषा विकास में प्रगति होती है। वह सरल से जटिल वाक्यों की रचना करने लगता है। विभिन्न प्रत्ययों; जैसे—स्वाद, रंग, रूप, गंध आदि का अर्थ स्पष्ट हो जाता है। विभिन्न वस्तुओं में परस्पर समानता और अंतर समझने लगता है। जिज्ञासा प्रवृत्ति बढ़ जाने के कारण छोटे-छोटे प्रश्न पूछता है। छोटी-छोटी समस्याओं का हल अपनी तर्क-शक्ति के आधार पर करता है। इस प्रकार इस अवस्था तक बालक में जिज्ञासा, स्मृति, तर्क, चिन्तन,

समस्या-समाधान तथा भाषा का विकास बहुत अधिक मात्रा में हो जाता है।

आठवाँ वर्ष—भाषा और अधिक विकसित हो जाती है। भाषा की अभिव्यक्ति में प्रवाह आ जाता है। वाक्य रचना शुद्ध हो जाती है। बालक 15-16 शब्दीय वाक्य आसानी से बोल लेता है। विभिन्न समस्याओं के समाधान के सम्बन्ध में उचित निर्णय लेने का प्रयास करता है। समूह में रहने की प्रवृत्ति का विकास होता है। वह घर की अपेक्षा बाहर रहना अधिक पसन्द करता है। स्मरण शक्ति का विकास अधिक हो जाता है जिससे वह छोटी-छोटी कविताओं और कक्षा में बतायी गयी विभिन्न बातों को आसानी से याद कर लेता है।

नवाँ वर्ष—इस अवस्था में बालक की भाषा, स्मृति, कल्पना, चिन्तन और ध्यान आदि क्षमताओं का और अधिक विकास हो जाता है। इस अवस्था में वह समय, दूरी, ऊँचाई, लम्बाई, दिन, समय, तारीख, महीना और वर्ष आदि को आसानी से बता देता है, विभिन्न प्रकार के सिक्कों और नोटों का सही मूल्य बता सकता है। पढ़ाई की तरफ ध्यान केन्द्रित हो जाता है, विद्यालयी क्रियाओं में रुचि लेता है। सामाजिक सहभागिता बढ़ जाती है।

दसवाँ वर्ष—इस अवस्था में उसकी वाक्शक्ति बढ़ जाती है। इसके अतिरिक्त निरीक्षण, ध्यान, तर्क, स्मरण और रुचियों का भी उत्तरोतर विकास होता है। वह 20-25 शब्दों के वाक्यों को आसानी से बोल लेता है। वह छोटी-छोटी कहानियाँ, चुटकले, कक्षा की घटनायें, कवितायें आदि आसानी से याद कर लेता है और आसानी से दोहराता भी है। बालक के जीवन में नियमितता आ जाती है। आज्ञापालन की आदत का विकास होता है। गणितीय योग्यता का विकास भी होता है।

ग्यारहवाँ वर्ष—इस अवस्था में बालक विभिन्न वस्तुओं की समानता और भिन्नता के बारे में अधिकाधिक जानकारी रखता है। गणितीय ज्ञान भी बहुत अधिक विकसित हो जाता है। अपने आस-पास की विभिन्न वस्तुओं की जानकारी रखता है तथा उनसे सम्बन्धित समस्याओं के उचित समाधान भी प्रस्तुत करता है तथा अपने ज्ञानात्मक विकास के लिये निरंतन प्रत्यत्नशील रहता है। विभिन्न प्रकार की रुचियों का विकास होता है; जैसे—खेल, अभिनय, संगीत, नृत्य आदि।

बारहवाँ वर्ष—इस अवस्था में बालक की चिन्तन और तर्क शक्ति बढ़ती है। अनुभवों के आधार पर वह विभिन्न समस्याओं का समाधान स्वयं करने लगता है। तर्क-शक्ति के आधार पर विभिन्न समस्याओं के परिणाम के बारे में पूर्वानुमान लगा लेता है। जिज्ञासा बढ़ जाती है अतः विभिन्न परिस्थितियों का निरीक्षण कर स्वयं ही जानने का प्रयास करता है। शब्द भण्डार बढ़ जाता है। वाक्-शक्ति अधिक हो जाती है। वाक्य रचना में शुद्धता आ जाती है। विभिन्न प्रश्नों के तर्कपूर्ण उत्तर देने में सफल रहता है। ध्यान और एकाग्रता बढ़ती है अब यह अधिक समय तक किसी कार्य को लगातार कर सकता है। विभिन्न प्रकार की रुचियों का विकास होता है। खेलों और मनोरंजन के प्रति रुचि बढ़ती है। यदि इस अवस्था में सीखने का अवसर मिले तो बालक एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रख सकता है।

(3) किशोरावस्था में मानसिक विकास (Mental Development in Adolescence)—शारीरिक विकास के समान, मानसिक विकास भी किशोरावस्था में बहुत तीव्रगति से होता है। **वुडवर्थ** (Woodworth) के अनुसार, "मानसिक विकास पन्द्रह से बीस वर्ष की आयु में अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है।"

इस अवस्था में मानसिक विकास की प्रमुख अवस्थायें निम्नलिखित हैं—

(i) रुचियों का विकास—इस समय किशोर बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न बनना चाहते हैं। इस समय विभिन्न क्षेत्रों से सम्बन्धित रुचियों का विकास होता है। प्रशिक्षण, उपयुक्त वातावरण तथा माता-पिता और शिक्षकों का सहयोग मिलने पर उनमें सृजनात्मकता का विकास होता है। किशोरों की रुचियाँ अध्ययन, खेल-कूद, ललितकला किसी भी क्षेत्र में हो सकती हैं। रुचियाँ सीखने में सहायक होती हैं। बालिकायें नृत्य, संगीत, ड्रामा, चित्रकारी आदि में रुचि रखती हैं जबकि बालक मानसिक खेलों तथा प्रतिस्पर्धात्मक कार्यों में रुचि रखते हैं।

(ii) सीखने की क्षमता का विकास—बहुमुखी रुचियों के विकास के कारण किशोर बालक विभिन्न क्षेत्रों में व्यावहारिक, सैद्धान्तिक वैज्ञानिक तथा यांत्रिक क्रियाओं को सीखने का प्रयास करते हैं।

(iii) मानसिक योग्यताओं का विकास—इस अवस्था में मानसिक विकास में परिपक्वता आने से किशोरों में; जैसे—सोचने-विचारने, अंतर करने, निर्णय लेने तथा समस्याओं का समाधान करने की मानसिक योग्यतायें विकसित हो जाती हैं।

(iv) बुद्धि का अधिकतम विकास—किशोरावस्था में बुद्धि का विकास भी अपनी उच्चतम सीमा पर पहुँच जाता है जिससे बालकों में निम्नलिखित बौद्धिक क्षमतायें दृष्टिगत होती हैं—

(अ) तर्क शक्ति
(ब) स्मरण शक्ति
(स) कल्पना शक्ति
(द) भाषा का विकास
(य) चिन्तन शक्ति
(र) ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता का विकास

3. सामाजिक विकास (Social Development)

शिशु जन्म के समय सामाजिक प्राणी नहीं होता है। जैसे-जैसे उसका शारीरिक और मानसिक विकास होता है, वैसे ही वैसे उसका सामाजिक विकास भी होता है। अपने परिवार के सदस्यों, अपने समूह के साथियों, अपने समाज की संस्थाओं और परम्पराओं एवं अपनी स्वयं की रुचियों और इच्छाओं से प्रभावित होकर वह अपने सामाजिक व्यवहार का निर्माण और अपना सामाजिक विकास करता है। सामाजिक व्यवहार में स्थिरता न होकर परिवर्तनशीलता होती है। अतः समय और परिस्थितियों के अनुसार उसमें परिवर्तन होता रहता है और सामाजिक विकास एक निश्चित दिशा की ओर बढ़ता जाता है। इस प्रकार, समाजीकरण की प्रक्रिया निरन्तर चलती रहती है। **सॉरे** व **टेलफोर्ड** ने लिखा है—"समाजीकरण की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ शिशु के प्रथम सम्पर्क से आरम्भ होती है और आजीवन चलती रहती है।"

सामाजिक विकास की विभिन्न अवस्थाएँ निम्न प्रकार से हैं–

हरलॉक–"सामाजिक विकास का अर्थ सामाजिक सम्बन्धों में परिपक्वता प्राप्त करना है।"

(1) शैशवावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Infancy)–जन्म के समय शिशु सामाजिक प्राणी नहीं होता है। जैसे-जैसे उसका शारीरिक, मानसिक विकास होता है। वैसे-वैसे उसका सामाजिक विकास भी होता है। शिशु के समाजीकरण की प्रक्रिया दूसरे व्यक्तियों के साथ सम्पर्क से प्रारम्भ होती है।

1. तीन चार माह के शिशु में सामाजिक विकास होने लगता है। यह तब पता चलता है कि रोता या हँसता हुआ बालक अपरिचित व्यक्ति को देखकर शांत हो जाता है।
2. 2 वर्ष की आयु में शिशु अपनी आयु के बच्चों के साथ खेलना शुरू कर देता है।
3. 3 वर्ष की आयु में वह समूह कार्य में रुचि लेने लगता है।

आयु	सामाजिक विकास
1 माह	बालक साधारण आवाजों व मानव की आवाजों में अन्तर नहीं समझ पाता है।
2 माह	इस अवस्था में बालक मनुष्य की आवाज पहचान सकता है। दूसरों को मुस्कुराते देखकर मुस्कुराता है और गोद में उठाने पर रोना बंद कर देता है।
3 माह	बच्चा दूसरों के बीच अपनी माँ को पहचान लेता है उससे बात करता है।
4 माह	बालक उठाने के लिए बाँहें फैलाता है उसके साथ कोई खेलता है तो हँसता है।
5 माह	वह क्रोध और प्रेम के अन्तर को समझता है।
6 माह	अपरिचित व परिचित में अन्तर करता है। वह क्रोध व प्रेम के व्यवहार में भिन्न प्रतिक्रिया करता है।
8 माह	आवाज व कार्यों का अनुसरण करने लगता है।
12 माह	बालक बड़ों की आज्ञा प्रारम्भ करता है और शीशे में अपने प्रतिबिम्ब से खेलता है।
2 वर्ष	बालक घर के कार्यों में सहयोग करने लगता है। वह खिलौनों से खेलने में रुचि दिखाता है।
3 वर्ष	इस आयु में बालक दूसरे बच्चों के साथ खेलने लगता है।
5 वर्ष	इस आयु में बालक सामूहिक खेलों की ओर आकर्षित होता है जो वे खेलते हैं।

(2) बाल्यावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Childhood)–बाल्यावस्था में सामाजिक विकास निम्न प्रकार से होता है–

बाल्यावस्था में बालक का सम्पर्क बाह्य शक्तियों से अधिक होता है इस कारण सामाजिक विकास बड़ी तीव्र गति से होता है। इस अवस्था में वह विद्यालय में अन्य बालकों, अध्यापकों, परिवार के सदस्यों से सम्पर्क करता है।

हरलॉक (Hurlock) ने बाल्यावस्था में बालक के सामाजिक विकास का निम्नांकित वर्णन किया है–

(i) लगभग 6 वर्ष की आयु में बालक प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश करता है। वहाँ वह एक नए वातावरण से अनुकूलन करना, सामाजिक कार्यों में भाग लेना और नए मित्र बनाना सीखता है।

(ii) अनुकूलन करने के उपरान्त, बालक के व्यवहार में उन्नति और परिवर्तन आरम्भ हो जाता है। फलस्वरूप, उसमें स्वतन्त्रता, सहायता और उत्तरदायित्व के गुणों का विकास होने लगता है।

(iii) विद्यालय में बालक किसी-न-किसी टोली का सदस्य हो जाता है। यह टोली उसके वस्त्रों के रूपों, खेल के प्रकारों और उचित-अनुचित के आदर्शों को निर्धारित करती है। इस प्रकार, बालक के सामाजिक विकास को एक नवीन दिशा प्राप्त होती है।

(iv) टोली, बालक में अनेक सामाजिक गुणों का विकास करती है। इन गुणों पर प्रकाश डालते हुए **हरलॉक** (Hurlock) ने लिखा है–"टोली बालक के आत्म-नियंत्रण, साहस, न्याय, सहनशीलता, नेता के प्रति भक्ति, दूसरों के प्रति सद्भावना आदि गुणों का विकास करती है।"

(v) क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार–इस अवस्था में बालक अपने शिक्षक का सम्मान तो करता है, पर उसका परिहास करने की अपनी प्रवृत्ति का दमन नहीं कर पाता है।

(3) किशोरावस्था में सामाजिक विकास (Social Development in Adolescence)–किशोरावस्था में सामाजिक विकास निम्न प्रकार से होता है–

क्रो एवं क्रो (Crow and Crow) के अनुसार–"जब बालक 13 या 14 वर्ष की आयु में प्रवेश करता है तब उसके प्रति दूसरों के और दूसरों के प्रति उसके कुछ दृष्टिकोण न केवल उसके अनुभवों में, वरन् उसके सामाजिक सम्बन्धों में भी परिवर्तन करने लगते हैं।" इस परिवर्तन के कारण उसके सामाजिक विकास का स्वरूप निम्नांकित होता है–

(i) बालकों और बालिकाओं में एक-दूसरे के प्रति बहुत आकर्षण उत्पन्न हो जाता है। अतः वे अपनी सर्वोत्तम वेश-भूषा, बनाव-शृंगार और सज-धज में अपने को एक-दूसरे के समक्ष उपस्थित करते हैं।

(ii) बालक और बालिकाएँ दोनों अपने-अपने समूहों का निर्माण करते हैं। इन समूहों का मुख्य उद्देश्य होता है–मनोरंजन, जैसे–पर्यटन, पिकनिक, नृत्य, संगीत आदि।

(iii) कुछ बालक और बालिकाएँ किसी भी समूह के सदस्य नहीं बनते हैं। वे उनसे अलग रहकर अपने या विभिन्न लिंग के व्यक्ति से घनिष्ठता स्थापित कर लेते हैं और उसी के साथ अपना समय व्यतीत करते हैं।

(iv) बालकों में अपने समूह के प्रति अत्यधिक भक्ति होती है। वे उसके द्वारा स्वीकृत वेश-भूषा, आचार-विचार, व्यवहार आदि को अपना आदर्श बनाते हैं।

(v) समूह की सदस्यता के कारण उनमें नेतृत्व, उत्साह, सहानुभूति, सद्भावना आदि सामाजिक गुणों का विकास होता है। साथ ही, उनकी आदतों, रुचियों और जीवन-दर्शन का निर्माण होता है।

(vi) इस अवस्था में बालकों और बालिकाओं का अपने माता-पिता से किसी-न-किसी बात पर संघर्ष या मतभेद हो जाता है। यदि माता-पिता उनकी स्वतन्त्रता का दमन करके, उनके जीवन को अपने आदेशों के साँचे में ढालने का प्रयत्न करते हैं या उनके समक्ष नैतिक आदर्श प्रस्तुत करके उनके अनुकरण

किए जाने पर बल देते हैं, तो नये खून में विद्रोह की भावना चीत्कार कर उठती है।

(vii) किशोर बालक अपने भावी व्यवसाय का चुनाव करने के लिए सदैव चिन्तित रहता है। इस कार्य में उसकी सफलता या असफलता उसके सामाजिक विकास, को निश्चित रूप से प्रभावित करती है।

(viii) किशोर बालक और बालिकाएँ सदैव किसी-न-किसी चिन्ता या समस्या में उलझे रहते हैं, जैसे—धन, प्रेम, विवाह, कक्षा में प्रगति, पारिवारिक जीवन आदि। ये समस्याएँ उनके सामाजिक विकास की गति को तीव्र या मन्द, उचित या अनुचित दिशा प्रदान करती हैं।

4. संवेगात्मक विकास (Emotional Development)

संवेग एक आत्मनिष्ठ भावना है, अतः संवेग का अनुभव एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में भिन्न होता है। आधुनिक मनोविज्ञान ने मूल संवेगों को पहचानने का प्रयास किया है। यह देखा गया है कि कम-से-कम छः संवेग सब जगह अनुभव किए जाते हैं तथा पहचाने जाते हैं; ये हैं—क्रोध, विरुचि, भय, प्रसन्नता, दुःख तथा आश्चर्य। **इजार्ड** (Izard) ने दस मूल संवेगों का एक समुच्चय प्रस्तुत किया है; ये हैं—हर्ष, आश्चर्य, क्रोध, विरुचि, अवमान, भय, शर्म, अपराध, अभिरुचि तथा उत्तेजना। इनकी संयुक्तियाँ अन्य प्रकार के संवेग उत्पन्न करती हैं। **प्लुचिक** (Plutchik) के अनुसार, आठ मूल या प्राथमिक संवेग होते हैं। अन्य सभी संवेग इन्हीं मूल संवेगों के विभिन्न मिश्रणों के ही परिणाम होते हैं। उन्होंने इन संवेगों को चार विरोधी युग्मों के रूप में प्रस्तुत किया है; ये हैं—हर्ष-विषाद; स्वीकृति-विरुचि; भय-क्रोध; तथा आश्चर्य-पूर्वाभास।

संवेगों में तीव्रता (उच्च, निम्न) तथा गुणों (प्रसन्नता, दुःख, भय) के आधार पर अंतर होता है। आत्मनिष्ठ कारक तथा स्थितिपरक संदर्भ संवेगों के अनुभव को प्रभावित करते हैं। ये कारक हैं—लिंग, व्यक्तित्व तथा कुछ प्रकार की मनोविकृतियाँ। साक्ष्य बताते हैं कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ क्रोध के अतिरिक्त अन्य संवेगों का अधिक तीव्रता से अनुभव करती हैं। पुरुषों में क्रोध को अधिक तीव्रता तथा अधिक आवृत्ति में अनुभव करने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

संवेग के शरीरक्रियात्मक सिद्धान्तों में सबसे पुराने सिद्धान्तों में से एक जेम्स (James, 1884) द्वारा दिया गया था **जेम्स और लैंगे** (Lange) ने उसका समर्थन किया था, अतः इसे **जेम्स–लैंगे सिद्धान्त** (James-Lange Theory) के नाम से जाना जाता है (चित्र देखें)। इस सिद्धान्त के अनुसार पर्यावरणीय उद्दीपक विसेरा या अंतरांग (आंतरिक अंग, जैसे—हृदय तथा फेफड़े) में शरीर क्रियात्मक अनुक्रियाएँ उत्पन्न करते हैं, जो कि पेशीय गति से सम्बद्ध होते हैं। उदाहरण के लिए अप्रत्याशित अत्यन्त तीव्र शोर के द्वारा चौंकना, आंतरांगी तथा पेशीय अंगों में सक्रियकरण को उत्पन्न करता है, जिसका अनुसरण करता है संवेगात्मक उद्वेलन।

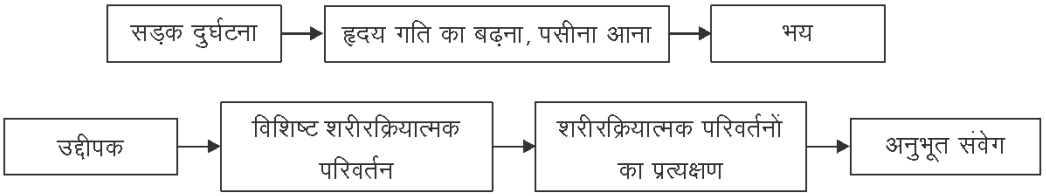

चित्र : जेम्स–लैंगे का संवेग सिद्धान्त

कैनन–बोर्ड सिद्धान्त (Cannon-Board Theory)—**कैनन तथा बोर्ड** के द्वारा प्रतिपादित किया गया। इसका दावा है कि संवेगों की सारी प्रक्रिया की मध्यस्थता चेतक के द्वारा की जाती है जो कि संवेग उद्दीप्त करने वाले उद्दीपकों के प्रत्यक्षण के पश्चात् यह सूचना सहकालिक रूप से प्रमस्तिष्कीय वल्कुट, कंकाल–पेशियों तथा अनुकंपी तंत्रिका–तंत्र को देता है। इसके बाद, प्रमस्तिष्कीय वल्कुट पूर्व अनुभवों के आधार पर प्रत्यक्षित उद्दीपक की प्रकृति का निर्धारण करता है। यह संवेग के आत्मनिष्ठ अनुभव का निर्धारण करता है। इसी समय अनुकंपी तंत्रिका–तंत्र तथा मांसपेशियाँ शरीरक्रियात्मक उद्वेलन उत्पन्न करते हैं जो व्यक्ति को क्रिया करने के लिए तैयार करते हैं।

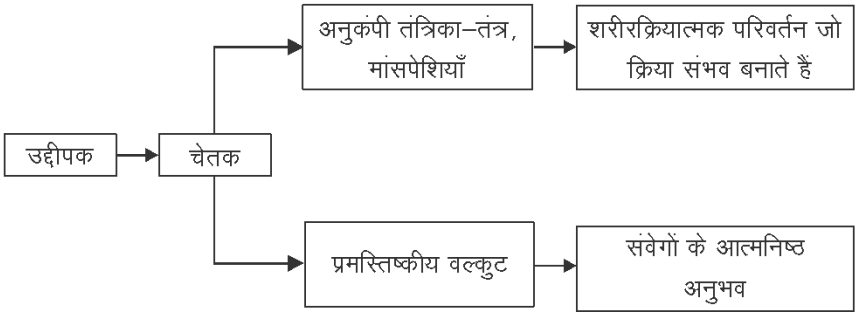

चित्र : कैनन–बोर्ड का संवेग सिद्धान्त

स्टैनली शैक्टर (Stanley Schachter) तथा **जेरोम सिंगर** (Jerome Singer) ने संवेगों के द्विकारक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है जिसके अंतर्गत संवेगों के दो अवयव हैं शारीरिक उद्वेलन तथा संज्ञानात्मक लेबल। उनका अनुमान है कि हमारे संवेगों की अनुभूति, हमारे तात्कालिक उद्वेलन के प्रति जागरूकता के द्वारा उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए, आपका हृदय उस समय तेजी से धड़कता है जब आप उत्तेजित, भयभीत या क्रुद्ध होते हैं। आप शरीरक्रियात्मक रूप से उद्वेलित होते हैं तथा बाह्य वातावरण का इस आशा से अवलोकन करते हैं कि इस उद्वेलन की व्याख्या कर सकें। इस प्रकार, उनका मत है कि किसी संवेगात्मक अनुभव के लिए उद्वेलन की चेतन व्याख्या की आवश्यकता होती है।

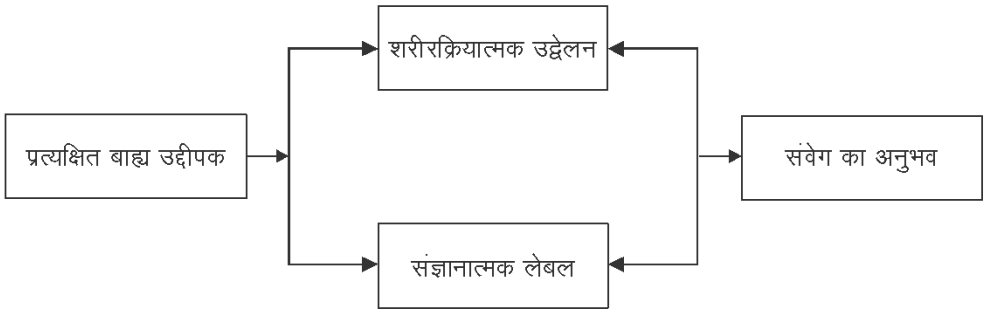

चित्र : शैक्टर-सिंगर का संवेग सिद्धान्त

आधुनिक काल में सफल संवेग प्रबंधन ही प्रभावी सामाजिक प्रबंधन की कुँजी है। निम्नलिखित युक्तियाँ सम्भवतः संवेगों के वांछित संतुलन बनाए रखने के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी।

1. **आत्म–जागरूकता को बढ़ाइए**—अपने संवेगों और अनुभूतियों को जानिए, उनके प्रति जागरूक होइए। अपनी अनुभूतियों के 'क्यों' तथा 'कैसे' के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित कीजिए।
2. **परिस्थिति का वास्तविकतापूर्ण आकलन कीजिए**—यह मत प्रतिपादित किया गया है कि संवेग के पूर्व घटना का मूल्यांकन किया जाता है। यदि घटना का अनुभव बाधा पहुँचाने वाला होता है, तो आपका अनुकंपी तंत्रिका–तंत्र उद्वेलित हो जाता है तथा आप दबाव का अनुभव करने लगते हैं। यदि आप घटना का अनुभव बाधा पहुँचाने वाले के रूप में नहीं करते तो कोई दबाव भी नहीं होता। अतः वस्तुतः आप ही यह निर्णय करते हैं कि दुःखी और दुश्चिंतित अनुभव करें या प्रसन्न और शांत।
3. **आत्म–परिवीक्षण कीजिए**—इसके अंतर्गत, सतत् या समय–समय पर अपनी पूर्व उपलब्धियों, संवेगात्मक और शारीरिक दशा तथा वास्तविक एवं प्रतिस्थानिक अनुभवों का मूल्यांकन शामिल है। एक सकारात्मक मूल्यांकन आपके स्वयं पर विश्वास की वृद्धि करेगा तथा कल्याण एवं संतोष की भावना बढ़ाएगा।
4. **आत्म–प्रतिरूपण का निर्माण कीजिए**—स्वयं अपना आदर्श बनिए। अपने पुराने अच्छे निष्पादन का बार–बार प्रेक्षण कीजिए तथा उनका उपयोग भविष्य के लिए प्रेरणा और अभिप्रेरणा के रूप में और भी बेहतर निष्पादन के लिए कीजिए।
5. **प्रात्यक्षिक पुनर्व्यवस्था तथा संज्ञानात्मक पुनर्रचना**—घटनाओं के दूसरे पहलू का निरीक्षण कीजिए तथा सिक्के के दूसरे पहलू पर भी ध्यान दीजिए। अपने विचारों का पुनर्गठन, विध्यात्मक तथा संतोष प्रदान करने वाली अनुभूतियों में वृद्धि करने तथा निषेधात्मक विचारों का परिहार करने के लिए कीजिए।
6. **सृजनात्मक बनिए**—कोई रुचि या शौक विकसित कीजिए। किसी ऐसी क्रिया, जो आपकी रुचि की है तथा आपका मनोरंजन करती है, में भाग लीजिए।
7. **अच्छे सम्बन्धों को विकसित कीजिए तथा पोषण कीजिए**—अपने मित्रों का चयन संभाल कर कीजिए। यदि आपके मित्र प्रसन्न और हर्षित होंगे तो उनके साथ सामान्यतः आप भी प्रसन्न रहेंगे।
8. **तद्नुभूति रखिए**—दूसरों की भावनाओं को समझने का प्रयास कीजिए। अपने संबंधों को अर्थपूर्ण तथा मूल्यवान बनाइए। पारस्परिक रूप से सहायता माँग भी लीजिए और दीजिए भी।

संवेग के प्रकार
(Types of Emotion)

संवेगों को दो वर्गों में विभक्त किया जाता है। इन्हें धनात्मक (Positive) एवं नकारात्मक (Negative) संवेग कहते हैं। धनात्मक संवेगों को वांछित (Desirable) और नकारात्मक संवेगों को अवांछित (Undesirable) संवेग भी कहते हैं। इन्हें क्रमशः अनुकूल (Favourable) एवं प्रतिकूल (Unfavourable) संवेग भी कहते हैं। धनात्मक संवेगों में प्रसन्नता (Delight) तथा नकारात्मक संवेगों में क्लेश (Distress) की विशेषता पायी जाती है। प्रसन्नता से उल्लास, स्नेह तथा हर्ष आदि जैसे धनात्मक संवेगों का विकास होता है और क्लेश से क्रोध, घृणा, भय तथा ईर्ष्या आदि जैसे नकारात्मक संवेगों का विकास होता है (चित्र)।

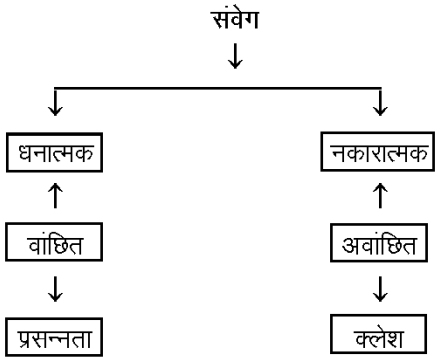

चित्र : संवेगों के प्रकार (Types of emotions)

बालक के संवेगात्मक विकास और व्यवहार के आधार हैं—उसके संवेग। प्रेम, हर्ष और उत्सुकता के समान अभिनन्दनीय संवेग उसके शारीरिक, मानसिक और सामाजिक विकास में योग देते हैं, जबकि भय, क्रोध और ईर्ष्या जैसे निन्दनीय संवेग उसके विकास को विकृत और कुण्ठित कर सकते हैं। इस प्रकार, जैसा कि **गेट्स व अन्य** ने लिखा है—"बालक का संवेगात्मक व्यवहार उसके विकास के अन्य पहलुओं के अनुरूप होता है और उनसे उसका अन्तःसम्बन्ध होता है।"

संवेग, व्यक्ति को किसी कार्य को सीखने उसके सामाजिक, नैतिक, चारित्रिक विकास को प्रभावित करता है। संवेग, वास्तव में उपद्रव की अवस्था है। इसमें व्यक्ति सामान्य नहीं रहता। संवेग की परिभाषायें इस प्रकार हैं—

रॉस—"संवेग चेतना की वह अवस्था है जिसमें रागात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।"

वैलेन्टीन—"जब रागात्मक प्रकृति का वेग बढ़ जाता है तभी संवेग की उत्पत्ति होती है।"

(1) शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Infancy)—शिशु के संवेगात्मक विकास अर्थात् संवेगात्मक व्यवहार के विकास के सम्बन्ध में निम्न बातें उल्लेखनीय हैं—

(i) शिशु अपने जन्म के समय से ही संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति करता है उसका रोना, चिल्लाना और हाथ-पैर पटकना इस बात का प्रमाण है।

(ii) शिशु के संवेगात्मक व्यवहार में अत्यधिक अस्थिरता होती है। उसका संवेग कुछ ही समय के लिए रहता है और फिर सहसा समाप्त हो जाता है; उदाहरणार्थ, रोता हुआ शिशु, खिलौना पाकर तुरन्त रोना बन्द करके हँसना आरम्भ कर देता है। जैसे-जैसे उसकी आयु बढ़ती जाती है, वैसे-वैसे उसके संवेगात्मक व्यवहार में स्थिरता आती जाती है।

(iii) शिशु के संवेगों में आरम्भ में अत्यधिक तीव्रता होती है। धीरे-धीरे इस तीव्रता में कमी होती चली जाती है, उदाहरणार्थ, 2 या 3 माह का शिशु भूख लगने पर तब तक रोता है; जब तक उसको दूध नहीं मिल जाता है। 4 या 5 वर्ष का शिशु इस प्रकार का व्यवहार नहीं करता है।

(iv) शिशु के संवेगात्मक विकास में क्रमशः परिवर्तन होता चला जाता है; उदाहरणार्थ, शिशु आरम्भ में प्रसन्न होने पर मुस्कराता है। कुछ समय बाद वह अपनी प्रसन्नता को हँसकर, विभिन्न प्रकार की ध्वनियाँ उत्पन्न करके या बोलकर व्यक्त करता है।

(v) शिशु के संवेगों में पहले अस्पष्टता होती है, पर धीरे-धीरे उसमें स्पष्टता आती जाती है; उदाहरणार्थ, जन्म के बाद प्रथम 3 सप्ताहों में उसकी चिल्लाहट से उसका संवेग स्पष्ट नहीं होता है। **गेसेल** (Gesell) ने अपने परीक्षणों के आधार पर बताया है कि 5 सप्ताह के शिशु की भूख, क्रोध और कष्ट की चिल्लाहटों में अन्तर हो जाता है और उसकी माँ उनका अर्थ समझने लगती है।

(2) बाल्यावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Childhood)

(i) इस अवस्था में संवेगों में स्थायित्व आना प्रारम्भ हो जाता है।

(ii) बालक संवेग व समाज के नियमों में समायोजन करने लगता है।

(iii) वह प्रत्येक क्रिया के प्रति प्रेम, ईर्ष्या, घृणा व प्रतिस्पर्धा की भावना प्रकट करने लगता है।

(iv) माता-पिता द्वारा बताये कार्य के प्रति वह हाँ या न कहकर चुप रहता है और बाद में झूठ बोलकर अपने को उपेक्षा से बचाता है।

(v) इस अवस्था के अन्तिम चरणों में वह संवेगों पर नियन्त्रण करना सीख जाता है।

(3) किशोरावस्था में संवेगात्मक विकास (Emotional Development in Adolescence)

(i) किशोरावस्था में प्रवेश करने पर किशोर/किशोरी से अनुशासित जीवन व्यतीत करने की आशा की जाती है, पर परिणाम ठीक इसके विपरीत होता है। हम उन्हें न तो बालकों की कोटि में रखते हैं न बड़ों की कोटि में। इस अवस्था में सबसे अधिक संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।

(ii) किशोर/किशोरी में प्रेम, दया, क्रोध, सहानुभूति आदि संवेग स्थायी रूप धारण कर लेते हैं। वह इन पर नियन्त्रण नहीं रख पाता। अतः सामान्यतः अन्यायी व्यक्ति के प्रति क्रोध व दुःखी व्यक्ति के प्रति दया की अभिव्यक्ति करता है।

(iii) किशोर/किशोरी की शारीरिक शक्ति की उनके संवेगों पर छाप होती है। जैसे—सबल व स्वस्थ किशोर में संवेगात्मक स्थिरता तथा निर्बल व अस्वस्थ किशोर में संवेगात्मक अस्थिरता पाई जाती है।

(iv) किशोर/किशोरी अनेकों बातों के बारे में चिन्तित रहते हैं। उदाहरणार्थ—अपनी आकृति, स्वास्थ्य, सम्मान, धन प्राप्ति, शैक्षिक प्रगति, सामाजिक सफलता आदि।

(v) किशोर न तो बालक समझा जाता है न प्रौढ़। अतः उसे अपने संवेगात्मक जीवन में वातावरण से अनुकूलन में बहुत कठिनाई होती है। यदि वह अपने प्रयास में असफल रहता है, तो उसे घोर निराशा होती है। ऐसी स्थिति में वो कभी-कभी घर से भाग जाता है या आत्महत्या तक का शिकार हो जाता है।

(vi) किशोरावस्था में असाधारण रूप से शारीरिक व मानसिक परिवर्तन होते हैं। किशोर और किशोरी दोनों में काम प्रवृत्ति इतनी तीव्र होती है जो कि उसके संवेगात्मक व्यवहार पर बहुत अधिक प्रभाव डालती है।

5. नैतिक विकास (Moral Development)

बालकों में नैतिकता का विकास सामाजिक अन्तर्क्रिया के परिणामस्वरूप होता है। बच्चे समाज के सम्पर्क में आने पर सामाजिक व्यवहारों का अधिगम करते हैं और इसी अवधि में उनमें नैतिकता का भी विकास होता रहता है। नैतिकता के विकास के कारण ही बच्चे सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप व्यवहार करना सीखते हैं तथा उनके व्यवहार में सामाजिक अनुरूपता प्रदर्शित होती है।

जोन्स (1954) के अनुसार, ''निश्चित समय या स्थान के आदर्शों के प्रति अनुरूपता का प्रदर्शन ही नैतिकता है।''

हरलॉक (1978, 1984) के अनुसार, ''सामाजिक समूहों की नैतिक संहिता के प्रति अनुरूपता ही नैतिकता है। इसकी उत्पत्ति लैटिन भाषा के मोर्स (Mores) से हुई है, जिसका तात्पर्य आचरण, प्रथाओं या लोकरीतियों से है।''

नैतिक विकास की विभिन्न अवस्थायें निम्न प्रकार से हैं—

(1) शैशवावस्था में नैतिक विकास (Moral Development in Infance)—शैशवावस्था में बच्चे न तो नैतिक और न ही अनैतिक होते हैं बल्कि गैर-नैतिक (Non-moral) होते हैं। उनमें न तो जन्मजात अच्छाइयाँ और न ही बुराइयाँ होती हैं। बच्चे को अच्छाई एवं बुराई में अन्तर सीखना पड़ता है। प्रारम्भ में वह अच्छाई या बुराई में अन्तर इस आधार पर सीखता है कि सम्बन्धित वस्तु या कार्य सुखद है या दुःखद। वे दूसरे की चिन्ता नहीं करते हैं। इस अवस्था में उसके कार्यों से दूसरों को कष्ट हो सकता है, परन्तु उसे कोई चिन्ता नहीं होती है। वह निर्देशों की अवहेलना भी कर सकता है।

(2) बाल्यावस्था में नैतिक विकास (Moral Development in Childhood)—नैतिक भावना का विकास बाल्यावस्था में ही होता है। बालक

उचित और अनुचित के बीच अन्तर करने लगता है। वह किसी कार्य को करने से पूर्व विचार करने लगता है। स्ट्रांग के अनुसार आठ वर्ष के बालकों में भले-बुरे का ज्ञान का न्यायपूर्ण व्यवहार, न्यायप्रियता तथा सामाजिक मूल्यों का विकास होने लगता है।

(3) किशोरावस्था में नैतिक विकास (Moral Development in Adolescence)—किशोरावस्था में नैतिक विकास निम्नलिखित प्रकार से होता है—

(i) किशोर एक आदर्श व्यक्ति की कल्पना करके उसके समान बनने का प्रयास करता है।

(ii) किशोर अपने व्यवहार को निर्देशित करने निर्देशित करने के लिए वैयक्तिक, सामाजिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का निर्माण करता है।

(iii) किशोर दूसरे व्यक्तियों से वार्तालाप करके, अपने विचारों, मूल्यों, विश्वासों, धारणाओं और दृष्टिकोणों की तुलना करता है।

(iv) किशोर अपने समूह, परिवार और पड़ोस के व्यक्तियों से सामंजस्य करने में कठिनाई का अनुभव करता है।

6. भाषा क्षमता का विकास (Language Ability of Development)

भाषा विचारों को व्यक्त करने का माध्यम है। भाषा भाव, विचार तथा अनुभवों को व्यक्त करने और विचार विनिमय करने का एक प्रमुख साधन है। इस संसार में रहने वाले विभिन्न प्राणी विभिन्न प्रकारों से अपने भावों को व्यक्त करते हैं। व्यक्ति अपने पास उपलब्ध साधनों; जैसे—हाथ, पैर, कान, सिर आदि से अपने मन की इच्छाओं को प्रकट करते हैं। साथ ही हम यह कह सकते हैं कि अंग-प्रत्यंग के संचालन से भी भावों की अभिव्यक्ति की जाती है।

अपनी भावनाओं को व्यक्त करने के लिए व्यक्ति जिन व्यक्त ध्वनि संकेतों को नित्य-व्यवहार के लिए स्वीकार करता है, उसको भाषा कहते हैं। भाषा विचारों को व्यक्त करने वाली ध्वनियों और वाक्यों का एक समूह होता है। स्वयं को व्यक्त करने के लिए मनुष्य ध्वनि संकेतों तथा अंग-प्रत्यंगों के संचालन का आश्रय लेता है, वही भाषा है।

हरलॉक के अनुसार, "भाषा से तात्पर्य विचारों तथा अनुभूतियों का अर्थ व्यक्त करने वाले उन सभी साधनों से है जिसमें संज्ञान या विचारों के आदान-प्रदान के सभी पक्ष; जैसे—लिखना, बोलना, संकेत, चेहरे की अभिव्यक्ति, हाव-भाव आदि सम्मिलित हैं।"

शैफर एवं किप के अनुसार, "भाषा का आशय ऐसे कुछ अर्थहीन वैयक्तिक प्रतीकों (ध्वनियों, अक्षरों, हाव-भाव) से है, जिन्हें किन्हीं मान्य नियमों के आधार पर संयुक्त करके असंख्य सन्देशों का सम्प्रेषण कर सकते हैं।

इस प्रकार स्पष्ट हो रहा है कि भाषा शब्द का अर्थ बहुत ही व्यापक एवं जटिल भी है। विचारों तथा भावों को व्यक्त करने वाले सभी माध्यम या साधन इसमें सम्मिलित हैं। एक भाषा दूसरी किसी भाषा से अनेक तरह से भिन्न हो सकती है, परन्तु भाषा में कुछ निश्चित मापदण्ड होते हैं और इसी कारण यह उपयोगी तथा उत्पादक मानी जाती है। **प्रथम**—किसी भी भाषा में शब्दों एवं वाक्यों की संख्या असीमित तथा अनन्त होती है। **द्वितीय**—कोई भी विचार या अवधारणा हर भाषा के माध्यम से प्रेषित की जा सकती है। हाँ, यह हो सकता है कि किसी एक भाषा में उसे व्यक्त करने में कम शब्द प्रयुक्त करने पड़े और दूसरी भाषा में अधिक शब्द लग सकते हैं। प्रत्येक भाषा की कुछ विशेषताएँ होती हैं जिनके कारण भाषा में सम्प्रेषण की क्षमता आती है।

संरचना (Structure) तथा नियम (rules) जो भाषा को मूलतः निर्धारित करते हैं के चार प्रमुख तत्व हैं—

(1) ध्वनिग्राम (Phoneme)

(2) रूपग्राम (Morphon)

(3) वाक्य-विन्यास (Syntax)

(4) अर्थविज्ञान (Semantics)

(1) ध्वनिग्राम (Phoneme)—बोली जाने वाली भाषा की सबसे छोटी इकाई को ध्वनिग्राम कहते हैं। जैसे—'t', 'th' एवं 'k' की आवाज ध्वनिग्राम के उदाहरण हैं। **बोर्न** के अनुसार, अंग्रेजी में लगभग 45 ध्वनिग्राम हैं। यह अपने आप में अर्थहीन होते हैं। उनकी भूमिका चिन्तन में नहीं के बराबर होती है।

(2) रूपग्राम (Morphone)—जब ध्वनिग्राम को आपस में शब्द, उपसर्ग या प्रत्यय बनाने के लिए संयोजित कर लिया जाता है तो इसे रूपग्राम कहा जाता है। जैसे—'Red' 'Hot' आदि रूपग्राम के उदाहरण है। जिनमें तीन–तीन ध्वनिग्राम संयोजित है। इस तरह रुपग्राम भाषा की सबसे छोटी अर्थपूर्ण इकाई है।

(3) वाक्य-विन्यास (Syntax)—जिस तरह ध्वनिग्रामों एवं रूपग्रामों को संयोजित करने का नियम होता है उसी तरह से वाक्य या उनके अर्थों को संरचित करने के लिए कुछ नियम होते हैं। इन नियमों को व्याकरण कहा जाता है। वाक्य-विन्यास नियम का ऐसा तंत्र है जो यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति किस तरह के शब्दों का उपयोग व्याकरणीय वाक्यों के निर्माण में करता है।

(4) अर्थ विज्ञान (Semantics)—अर्थ-विज्ञान यह बतलाता है कि व्यक्ति रूपग्रामों एवं वाक्यों से अर्थ किस तरह से निकलता है।

भाषा की विशेषताएँ (Characteristics of Language)

भाषा की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

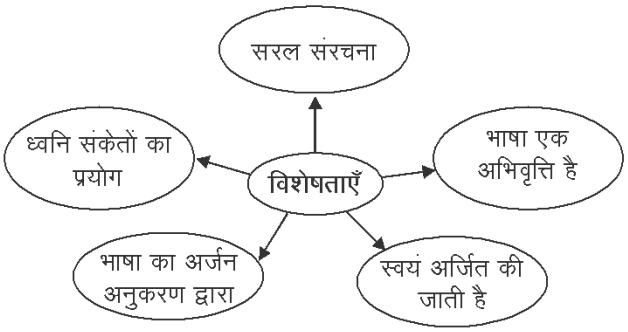

भाषा विकास की अवस्थाएँ (Stages of Language Development)

(1) शैशवावस्था में भाषा विकास (Language Development in Infancy)—शिशु का प्रथम क्रन्दन उसकी भाषा विकास की शुरुआत होती है। इस समय उसे स्वर और व्यंजनों का ज्ञान नहीं होता है। लगभग चार माह तक का शिशु जो ध्वनियाँ निकालता है उनमें स्वरों की संख्या अधिक होती है। लगभग 10 माह की अवस्था में शिशु एक शब्द का उच्चारण करता है और उसी शब्द की पुनरावृत्ति बार-बार करता है। लगभग 1 वर्ष तक शिशु की भाषा अस्पष्ट होती है केवल उसके माता-पिता ही अनुमान स्वरूप उसके शब्दोच्चारण का अर्थ निकाल सकते हैं। लगभग 1½ वर्ष की आयु में उसकी कुछ-कुछ भाषा समझ में आने लगती है। शैशवावस्था में बालक की वाक्य रचना केवल एक शब्द की होती है; जैसे—दूध के लिए वह बू-बू शब्द का उच्चारण करता है। इसी प्रकार वे अन्य वस्तुओं के लिए भी एक ही शब्द का प्रयोग करते हैं।

(2) बाल्यावस्था में भाषा विकास (Language Development in Childhood)—जैसे-जैसे बालक की आयु में वृद्धि होती है वैसे-वैसे उसके स्वरयन्त्र तथा स्नायुविक अंगों में परिपक्वता आती जाती है। फलस्वरूप धीरे-धीरे उसका भाषा विकास तीव्र गति से होने लगता है। बाल्यावस्था में बालक शब्द से लेकर वाक्य निर्माण की क्रिया में दक्षता प्राप्त कर लेता है।

बाल मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि बाल्यावस्था में भी बालिकाओं का भाषा विकास बालकों की तुलना में तीव्र गति से होता है तथा लड़कों की अपेक्षा उनके वाक्यों में शब्दों की संख्या अधिक होती है। इसके अतिरिक्त भाषा प्रस्तुतीकरण में भी बालिकायें बालकों से तेज होती हैं। प्रथम छः वर्षों तक यह गति तीव्र रहती है फिर मन्द हो जाती है।

बाल्यावस्था में भाषा विकास पर घर, विद्यालय, समूह के साथी, परिवार की सामाजिक व आर्थिक स्थिति तथा उचित निर्देश का प्रभाव पड़ता है।

(3) किशोरावस्था में भाषा विकास (Language Development in Adolescence)—भाषा विकास की दृष्टि से भी किशोरावस्था अति महत्वपूर्ण मानी जाती है। इस समय वह अपने वयस्कों द्वारा निर्धारित मापदण्ड के अनुसार ही भाषा का प्रयोग करता है। उसकी भाषा में सूक्ष्मता और बौद्धिकता की झलक मिलती है। इस समय उसकी भाषा का स्वरूप स्व-निर्धारित होता है। उसके शब्दों में भावों की गहनता तथा शब्दों की जटिलता होती है। उच्चारण में शुद्धता आ जाती है और व्याकरण का प्रयोग सन्तोषजनक होता है।

इसके अतिरिक्त किशोरावस्था में जो संवेगों की बहुलता होती है, इससे भी भाषा विकास प्रभावित होता है। कल्पना शक्ति का बाहुल्य होने के कारण इसी अवस्था में वे कवि, कहानीकार, चित्रकार, नाटककार, अभिनेता, विचारक आदि बनने की सोचते हैं। जिसमें भिन्न-भिन्न रूपों में उनकी भाषा का परिष्कृत रूप प्रकट होता है। विपरीत लिंग के प्रति आकर्षण होने पर उनकी भाषा में सौन्दर्य, माधुर्य झलकता है।

इस समय उनका शब्द भण्डार विस्तृत हो जाता है। निश्चित भाषा शैली का विकास होता है। भाषा में प्रौढ़ता होती है।

भाषा विकास के चरण (Steps of Language Development)

बालक के भाषा विकास को दो चरणों में बाँटा गया है—

(1) प्राक् भाषा विकास अवस्था,

(2) उत्तरकालीन भाषा विकास अवस्था,

(1) प्राक् भाषा विकास (Pre-Speech Development)—

(i) क्रन्दन (Crying)—जन्म के बाद प्रथम क्रन्दन तो एक प्राकृतिक क्रिया है। जन्म के बाद प्रथम दो सप्ताह तक बालकों का रोना उद्देश्यहीन तथा अनियमित ही होता है किन्तु आयु वृद्धि के साथ-साथ शिशु का क्रन्दन उसकी आवश्यकताओं से जुड़ता जाता है। तीन-चार सप्ताह के शिशु के क्रन्दन से यह स्पष्ट होने लगता है कि या तो वह भूखा है, उसे कोई पीड़ा है, या उसके वस्त्र व बिस्तर गीला हो गया है।

(ii) बलबलाना (Babbling)—आयु वृद्धि के साथ-साथ बच्चों का रोना कम हो जाता है किन्तु उनके स्थान पर शिशु अस्पष्ट ध्वनियाँ निकालने लगता है जिसे 'बलबलाना' कहते हैं। बलबलाहट दो माह की आयु से प्रारम्भ हो जाती है और लगभग 1½ वर्ष की आयु तक चलती रहती है। बलबलाने से बालक का स्वरयन्त्र (larynx) परिपक्व होता है।

बलबलाने की प्रारम्भिक अवस्था में बालक एक ही ध्वनि की पुनरावृत्ति करता है। प्रारम्भ में बालक स्वरों को फिर बाद में व्यंजनों को उच्चारित करता है। ध्वनियों का उच्चारण बालक अन्य लोगों द्वारा बोले गये शब्दों को सुनकर करता है। प्रारम्भ में जब वह स्वरों को दुहराता है तो उसे आनन्द की अनुभूति होती है; जैसे—वह प्रारम्भ में बा, भा, पा, ना आदि स्वरों को दुहराता है तो उन्हीं से बाद में बाबा, मामा, पापा, नाना आदि शब्दों का विकास होता है।

(iii) हावभाव (Gestures)—हावभाव से तात्पर्य है—अपने विभिन्न शारीरिक अंगों के माध्यम से अपने विचारों को प्रदर्शित करना। बालक के भाषा विकास में हावभाव भी महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। बालकों द्वारा हावभाव का प्रदर्शन भाषा के पूरक के रूप में किया जाता है। बच्चों में हावभाव की उत्पत्ति बलबलाने के साथ-साथ ही हो जाती है। बच्चा अपने हावभावों का प्रदर्शन, मुस्कराकर, हाथ फैलाकर, उँगली दिखाकर, मूक भाषा में व्यक्त करता है।

(2) उत्तरकालीन भाषा विकास की अवस्थाएँ (Later Speech Development)—इस अवस्था में क्रियात्मक पहलू और मानसिक पहलू दोनों का विकास होता है। अर्थपूर्ण शब्द भाषा का निकालना क्रियात्मक पहलू है तथा उन शब्दों को समझना मानसिक पहलू है। इसमें चार अवस्थाएँ हैं—

(i) आकलन शक्ति का विकास (Assessment Power Development)—बालकों की वह क्षमता जिसके द्वारा वह दूसरों की क्रियाओं तथा हावभाव का अनुकरण कर लेता है 'आकलन शक्ति' कहलाती है। **हरलॉक** के मतानुसार बालकों में आकलन शक्ति का विकास शब्दों के प्रयोग से पहले प्रारम्भ हो जाता है वह शब्दों को समझना पहले सीखता है और बोलना बाद में।

मनोवैज्ञानिकों के अनुसार शिशुओं में तीन चार माह की आयु से आकलन शक्ति का विकास प्रारम्भ हो जाता है। चार माह का शिशु माँ को पहचानकर मुस्कराने लगता है। 7-8 माह का बालक शब्दों का अनुसरण करने लगता है और एक वर्ष का बालक सरल निर्देशों को समझने लगता है। पाँच वर्ष की अवस्था में आकलन शक्ति का पर्याप्त विकास हो जाता है।

(ii) शब्द प्रयोग (Vocabulary)—स्मिथ, शर्ली, गैसेल तथा थम्पसन आदि वैज्ञानिकों ने बालकों के शब्द भण्डार तथा शब्द चयन के लिए अध्ययन किये और बताया कि डेढ़ वर्ष के बालक का शब्द भण्डार 10 शब्द, दो वर्ष के बालक का शब्द भण्डार 272 शब्द, ढाई वर्ष में 450 शब्द, तीन वर्ष की अवस्था में 900 शब्द तथा चार वर्ष की अवस्था में 1500 शब्दों का हो जाता है। पाँच वर्ष में यह बढ़कर 2000 तथा छः वर्ष में लगभग 2500 हो जाता है। इस प्रकार दिन-प्रतिदिन उसका शब्द भण्डार बढ़ता जाता है।

अध्ययनों में यह भी देखा है कि बालिकाओं का शब्द भण्डार सभी अवस्थाओं में बालकों की अपेक्षा अधिक रहता है।

बालकों के शब्द भण्डार के रूप—बालकों का शब्द भण्डार दो प्रकार का माना गया है—

1. **सामान्य शब्द भण्डार** (General Vocabulary)—बालक सामान्य परिस्थितियों में जिन शब्दों का प्रयोग करता है वे उसके सामान्य शब्द कहलाते हैं। ये शब्द संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया सम्बन्धी होते हैं; जैसे—लेना, देना, आना, जाना, अच्छा, बुरा, मामा, नाना, पापा आदि।

2. **विशिष्ट शब्द भण्डार** (Special Vocabulary)—विशिष्ट शब्द भण्डार के अन्तर्गत वे शब्द आते हैं जिन्हें बालक विशेष अवसरों पर बोलता है। अधिकांशतः तीन-चार वर्ष की आयु में बालक विशिष्ट शब्दावली का प्रयोग करने लगता है। पाँच-छः वर्षों में विशिष्ट शब्दावली का काफी मात्रा में विकास हो जाता है। बालकों की विशिष्ट शब्दावली अनेक रूपों में प्रकट होती है।

   (i) **शिष्टाचार के शब्द** (Etiquette Vocabulary)—जैसे—आप, जी, श्रीमान, साहब, महाशय, कृपया, धन्यवाद आदि। इन शब्दों को बालक स्कूल जाने पर अधिक मात्रा में सीखता है। इन शब्दों द्वारा बड़ों के प्रति आदर प्रदर्शित करता है।

   (ii) **संख्यात्मक शब्द** (Number Vocabulary)—जैसे—गिनती, पहाड़े आदि।

   (iii) **रंगों से सम्बन्धित शब्द** (Colour Vocabulary)—जैसे—लाल, हरा, नीला, पीला आदि। चार वर्ष की आयु तक बालक तीन प्राथमिक रंगों—लाल, पीला, नीला उच्चारित करने लगता है।

   (iv) **समय सम्बन्धी शब्द** (Time Vocabulary)—जैसे—सुबह, शाम, रात, आज, कल, परसों, दिन, वर्ष, माह आदि।

   (v) **धन से सम्बन्धित शब्द** (Money Vocabulary)—विभिन्न सिक्कों से सम्बन्धित शब्दों का उच्चारण बालक पाँच वर्ष की अवस्था तक सीख जाता है।

   (vi) **अशिष्ट शब्द** (Slong Vocabulary)—जैसे—गाली-गलौज के गंदे शब्दों का उच्चारण करना बालक पाँच से आठ वर्ष की अवस्था में सीख जाता है। संवेगात्मक तनाव व अस्थिरता की अवस्था में बालक अशिष्ट शब्दों का उच्चारण करता है।

(3) **वाक्य निर्माण** (Sentence Formation)—वाक्य निर्माण भाषा विकास की महत्वपूर्ण अवस्था है क्योंकि वाक्यों के द्वारा बालक अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकता है। वाक्य निर्माण की प्रारम्भिक अवस्था में बालक केवल एक शब्दीय वाक्य बोलता है। यह शब्द या तो संज्ञा या फिर क्रिया होता है। उदाहरण के लिए यदि बालक पापा शब्द का प्रयोग करता है तो उसका अर्थ है—वह पापा के पास जाना चाहता है। इसी प्रकार यदि वह दूध की बोतल देखकर कहता है—दे दो तो इसका तात्पर्य है—वह दूध पीना चाहता है। ऐसे शब्द बालक एक से डेढ़ वर्ष की अवस्था के बीच अधिक बोलता है। एक शब्दीय वाक्यों के साथ बालक हावभावों का भी प्रदर्शन करता है; जैसे—दूध की बोतल की ओर उँगली करके कहता है—दे दो।

तीन–चार वर्ष की अवस्था में बालकों के वाक्यों में शब्दों की संख्या बढ़ जाती है।

(4) **शुद्ध उच्चारण** (Correct Pronunciation)—शुद्ध उच्चारण भाषा विकास की अन्तिम अवस्था है। इसमें बालक अपने व्याकरण सम्बन्धी दोषों को सुधारता है और शुद्ध उच्चारण करता है। तीन वर्ष की आयु तक बालक की भाषा में बहुत अधिक व्याकरण सम्बन्धी दोष पाये जाते हैं। विशेषकर बच्चे सर्वनाम शब्दों के प्रयोग, वर्तमान, भूतकाल तथा भविष्यकाल के प्रयोग में त्रुटि करते हैं। इसके अतिरिक्त उनके संज्ञाओं के लिंग तथा वचन के प्रयोग में भी त्रुटि होती है। अतः यह आवश्यक है कि ठीक समय पर ही इन त्रुटियों का सुधार कर दिया जाये अन्यथा वे गलत शब्दों का उच्चारण करने लगते हैं। बच्चे व्याकरण सम्बन्धी त्रुटियाँ भी अपनी भाषा में करते हैं किन्तु इस त्रुटि का निवारण धीरे-धीरे स्कूल जाने पर हो जाता है। कुछ बालक शब्दोच्चारण में भी त्रुटि करते हैं जैसे श को स बोलते हैं। इसका कारण घर में माता-पिता तथा अन्य व्यक्तियों का गलत शब्दोच्चारण करना होता है। कभी-कभी स्वरयन्त्र में खराबी होने से भी शब्दों का उच्चारण सही नहीं हो पाता है। छः-सात वर्ष की अवस्था में स्वरयन्त्र भी पूर्ण परिपक्व हो जाता है तथा बालक में अनुकरण की प्रवृत्ति भी इतनी अधिक विकसित हो जाती है कि वह शुद्ध उच्चारण द्वारा सुन्दर और शुद्ध भाषा का विकास कर सकता है।

1. भाषा और पियाजे (Piaget and Language)

पियाजे मानते थे कि मानसिक प्रतीकों में संसार को निरूपित करने का हमारा सबसे लचीला साधन भाषा है। इसके माध्यम से विचार को क्रिया से अलग करने के द्वारा सोचने की प्रक्रिया पहले से काफी अधिक सक्षम हो जाती है। शब्दों में सोचने से हम अपने तात्कालिक अनुभवों की सीमाओं के पार जा सकते हैं। हम एक साथ अतीत, वर्तमान और भविष्य के बारे में सोच सकते हैं और अपनी अवधारणाओं को अनोखे तरीकों से जोड़ सकते हैं। जैसे कि हम किसी भूखी बिल्ली के केले खाने की या जंगल में रात को दैत्यों के उड़ने की कल्पना कर सकते हैं।

भाषा की शक्ति के बावजूद, पियाजे नहीं मानते थे कि यह बच्चों के संज्ञानात्मक विकास में कोई प्रमुख भूमिका निभाती है। इसके बजाय उसका दावा था कि ऐन्द्रिक एवं चालन गतिविधियों के फलस्वरूप अनुभव की आंतरिक छवियाँ निर्मित हो जाती हैं, जिन्हें फिर बच्चे शब्दों से नामांकित कर देते हैं। अर्थात् उन पर शब्दों के लेबिल लगा देते हैं। यह तथ्य पियाजे की धारणा के पक्ष में जाता है कि बच्चों के पहले पहल के शब्दों का आधार प्रभावशाली ऐन्द्रिक एवं चालन अनुभव होते हैं। वे ऐसी चीजों के लिए होते हैं, जो गति कर सकती हैं, या जिनके साथ कुछ जा सकता है या फिर वे जाने-पहचाने कृत्यों के लिये होते हैं। इसके अलावा कुछ प्रारम्भिक शब्द ऐसे भी हैं जो शब्दरहित संज्ञानात्मक उपलब्धियों पर निर्भर प्रतीत होते हैं। उदाहरण के लिए जब छोटे बच्चे वस्तुओं के स्थायित्व सम्बन्धी समस्याओं को समझने लगते हैं तब वे उनके न दिखने पर गायब होना बताने वाले शब्दों, जैसे कि सब गए/गई का प्रयोग करते हैं जब वे अचानक समस्या को हल कर लेते हैं, तो वे सफलता या विफलता व्यक्त करने वाले शब्द इस्तेमाल करते हैं—''अहा'' और ''अरे''। इसके अलावा हम पहले देख चुके हैं कि शिशुओं को विभिन्न प्रकार की श्रेणियों का बोध काफी पहले हो जाता है, जबकि उनको व्यक्त करने वाले शब्द वे बाद में सीखते हैं।

फिर भी पियाजे ने बच्चों के संज्ञान या बोध को तेजी से विकसित करने में भाषा की ताकत को कम करके आंका है। उदाहरण के लिए इस पर ध्यान दें कि बच्चों की बढ़ती हुई शब्दावली उनके अवधारणात्मक कौशल को भी बढ़ाती है। अन्य शोधों से भी इस बात की पुष्टि होती है कि भाषा संज्ञानात्मक विकास की मात्र सूचक न होकर उसका एक शक्तिशाली स्रोत है।

2. भाषा और वाइगोत्सकी (Language and Vygotsky)

भाषा वाइगोत्स्की के सिद्धान्त के लिए भी केन्द्रीय है और विकास में तीन अलग–अलग भूमिकाएँ निभाती है। सबसे पहले, यह शिक्षार्थियों को दूसरों के पास पहले से मौजूद ज्ञान तक पहुँच प्रदान करती है। दूसरा, भाषा एक संज्ञानात्मक उपकरण है जो उन्हें दुनिया के बारे में सोचने और समस्याओं को हल करने की अनुमति देती है। तीसरा, भाषा हमारी अपनी सोच को विनियमित करने और प्रतिबिम्बित करने का एक साधन है।

पियाजे की तरह ही वाइगोत्स्की ने भी बच्चों को खुद से बात करते हुए देखा, लेकिन यह भी देखा कि कुछ संदर्भों में यह दूसरों की तुलना में अधिक बार होता है, विशेष रूप से जब वे समस्याओं को हल करने या महत्वपूर्ण लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करते हैं और इस गैर-सामाजिक भाषण में काफी वृद्धि हो जाती है जब भी ये युवा समस्या-समाधानकर्ता अपने उद्देश्यों को पाने में बाधाओं का सामना करते हैं।

इसके आधार पर उन्होंने निष्कर्ष निकाला कि यह आत्म-वार्ता अहंकेंद्रित नहीं बल्कि सम्प्रेषणीय है। उन्होंने इस स्व-नियमन के लिए भाषा के इस उपयोग को निज वाक कहा है, जो छोटे बच्चों को रणनीतियों की योजना बनाने और उनके व्यवहार को विनियमित करने में मदद करता है ताकि उनके लक्ष्यों को पूरा कर सकने की अधिक सम्भावना हो।

इसके माध्यम से देखा गया है कि, इस प्रकार भाषा बच्चों को अधिक संगठित और कुशल समस्या हल करने के लिए संज्ञानात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। वाइगोत्स्की के अनुसार, भाषा और सोच शुरू में अलग-अलग संस्थाएँ हैं, लेकिन कुछ समय बाद वे आपस में जुड़ जाती हैं। भाषा और सोच का यह विलय 3 से 7 वर्ष की आयु के बीच होता है। उसके बाद भाषा और सोच समानान्तर और अविभाज्य हैं तथा एक-दूसरे को निर्धारित करते हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण एक बच्चे का समझने के लिए जोर से पढ़ना है।

वाइगोत्स्की ने यह भी देखा कि निजी वाक उम्र के साथ अधिक संक्षिप्त हो जाते हैं, पूरे वाक्यांशों से एकल शब्दों तक प्रगति करते हैं, और अंत में केवल सरल होंठों के हिलने तक सीमित हो जाते हैं जो कि बड़े बच्चों में अधिक आम हैं। उनका विचार था कि निजी भाषण कभी पूरी तरह से गायब नहीं होता है; यह आंतरिक हो जाता है और आंतरिक वाक में बदल जाता है। यह भूमिगत होकर चुप हो जाता है, लेकिन फिर भी एक संज्ञानात्मक स्व-मार्गदर्शन प्रणाली के रूप में कार्य करता है और हम अपनी रोजमर्रा की सोच और कार्यों को व्यवस्थित और विनियमित करने के लिए हर दिन इसका उपयोग करते हैं।

वाइगोत्स्की ने तर्क दिया कि जो बच्चे बहुत अधिक निजी भाषण का उपयोग करते हैं, वे उन लोगों की तुलना में अधिक सामाजिक रूप से सक्षम होते हैं जो ऐसा नहीं करते। उन्होंने तर्क दिया कि निजी भाषण अधिक सामाजिक संचार बनने में एक प्रारम्भिक परिवर्तनकाल का प्रतिनिधित्व करता है। वाइगोत्स्की के लिए, जब छोटे बच्चे खुद से बात करते हैं, तो वे अपने व्यवहार को संचालित करने और खुद को निर्देशित करने के लिए भाषा का उपयोग कर रहे हैं।

शोधकर्ताओं से वाइगोत्स्की के इस दृष्टिकोण को समर्थन मिला है कि निजी भाषण बच्चों के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाता है। शोधकर्ताओं ने यह भी खुलासा किया है कि जो बच्चे निजी भाषण का उपयोग करते हें वे अधिक चौकस होते हैं और निजी भाषण का उपयोग नहीं करने वाले बच्चों की तुलना में अपने प्रदर्शन में सुधार करते हैं।

3. नोआम चॉम्स्की : सहज या देशी सिद्धान्त

नोआम चॉम्स्की अमेरिकी मूल के एक भाषाविद्, दार्शनिक और संज्ञानात्मक वैज्ञानिक हैं। उन्होंने पर्यावरण के स्थान पर आनुवंशिकता को प्राथमिक महत्व दिया। उनके अनुसार सभी मनुष्य भाषा सीखने के लिए आनुवंशिक रूप से सक्षम हैं। भाषा के सम्पर्क में आने से उसका विकास शुरू हो जाता है। नोआम चॉम्स्की ने प्रस्तावित किया कि सभी मनुष्य भाषा अधिग्रहण यंत्र (LAD) के साथ पैदा होते हैं।

भाषा अधिग्रहण यंत्र एक सहज, आनुवंशिक रूप से नियंत्रित मानसिक क्षमता है जो एक शिशु को भाषा प्राप्त करने और उत्पादन करने में सक्षम बनाती है। यह बच्चों को भाषा को नियंत्रित करने वाले नियमों को सीखने के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने प्रस्तावित किया कि भाषा अधिग्रहण यंत्र के कारण बच्चे अपने परिवेश से सहजता से भाषा प्राप्त करते हैं और बिना सीखे भी स्वयं व्याकरण के नियम उत्पन्न करते हैं। उन्होंने इस स्व–निर्मित व्याकरण को सार्वभौमिक व्याकरण कहा क्योंकि उनके अनुसार संरचनात्मक नियमों के कुछ समूह मनुष्यों के लिए सहज हैं तथा संवेदी अनुभव से स्वतंत्र हैं।

चॉम्स्की महत्वपूर्ण अवधि या संवेदनशील अवधि परिकल्पना में भी विश्वास करते थे। इसके अनुसार बच्चे के जीवन के पहले कुछ वर्ष वह महत्वपूर्ण अवधि होती है, जिसमें बच्चा पर्याप्त उत्तेजनाओं के साथ सहजता से भाषा प्राप्त करता है। उनके अनुसार भाषा अधिग्रहण यंत्र उम्र के साथ कमजोर हो जाता है जिसके बाद भाषा अधिग्रहण अधिक कठिन और अंततः कम सफल होता है।

4. सहभागितावादी सिद्धान्त : स्किनर और बैंडुरा

सहभागिता सिद्धान्त के अनुसार भाषा का विकास पर्यावरण के कारण ही होता है। सहभागिता सिद्धान्तवादी इस बात से सहमत नहीं हैं कि भाषा के विकास में आनुवंशिकता की थोड़ी भी भूमिका होती है।

स्किनर ने भाषा सीखने में पुनर्बलन की भूमिका पर जोर दिया है, उदाहरण के लिए, बात करने के लिए बच्चे को संकेत देना। उदाहरण के लिए, जब माता–पिता बच्चे द्वारा यादृच्छिक ध्वनि पैदा करने पर उसकी प्रशंसा करते हैं, तो यह बच्चे को फिर से उसी ध्वनि का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित करता है। यह अवधारणा भाषा के प्रारम्भिक विकास के लिए तो सही है लेकिन वह भाषा अधिग्रहण में आगे के घटनाक्रम की व्याख्या करने में असमर्थ है।

अल्बर्ट बैंडुरा ने दावा किया कि भाषा को अनुकरण के माध्यम से सीखा जाता है। उदाहरण के लिए, एक बच्चा अपने माता–पिता द्वारा कही जा रही बातों को दोहरा रहा है। यह अवधारणा प्रारम्भिक भाषा के विकास के लिए तो सही है, लेकिन इसकी व्याख्या करने में विफल रही कि जो वाक्य पहले कभी नहीं सुने गए वे कैसे निर्मित होते हैं।

7. सृजनात्मकता क्षमता का विकास (Creativity Ability Development)

'सृजनात्मक' शब्द अंग्रेजी के क्रियेटिविटी (Creativity) से बना है। इस शब्द के समानान्तर विधायकता, उत्पादन, रचनात्मकता डिस्कवरी आदि का प्रयोग होता है। **फादर कामिल बुल्के** ने क्रियेटिक शब्द के समानान्तर, सृजनात्मक, रचनात्मक, सर्जक शब्द बताए। डा. रघुवीर ने इसका अर्थ सर्जन, उत्पन्न करना, सर्जित करना, बनाना बताया है।

रुच के अनुसार, "सृजनात्मकता मौलिकता वास्तव में किसी प्रकार की क्रिया में घटित होती है।

स्टेन के अनुसार, "जब किसी कार्य का परिणाम नवीन हो, जो किसी समय में समूह द्वारा उपयोगी मान्य हो, वह कार्य सृजनात्मकता कहलाता है।"

जेम्स ड्रेवर के अनुसार, "सृजनात्मकता मुख्यतः नवीन रचना या उत्पादन में होती है।"

क्रो एवं **क्रो** के अनुसार, "सृजनात्मकता मौलिक परिणामों को व्यक्त करने की मानसिक प्रक्रिया है।"

कोल एवं **ब्रूस** के अनुसार, "सृजनात्मकता एक मौलिक उत्पादन के रूप में मानव मन की ग्रहण करके अभिव्यक्त करने और गुणांकन करने की योगयता एवं क्रिया है।"

सृजनात्मकता के तत्व (Elements of Creativity)

गिलफोर्ड के अनुसार, गिलफोर्ड ने सृजनात्मकता के तत्व इस प्रकार बताए हैं–

1. तात्कालिक स्थिति से परे जाने की योग्यता
2. समस्या की पुनर्व्याख्या
3. सामंजसय
4. अन्यों के विचारों में परिवर्तन

सृजनात्मकता के सिद्धान्त (Theories of Creativity)

1. मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (**फ्रॉयड** एवं **जुंग** ने यह धारणा दी है)
2. साहचर्यवाद
3. अन्तर्दृष्टिवाद
4. अस्तित्ववाद

सृजनात्मकता की विशेषताएँ (Characteristics of Creativity)

सृजनात्मकता की विशेषतायें निम्नलिखित हैं–

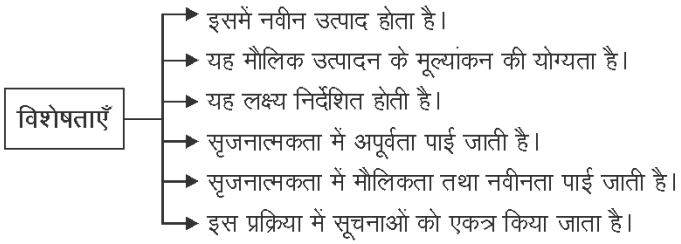

सृजनात्मकता के विकास की अवस्थाएँ (Stages of Creativity Development)

सृजनात्मकता विकास की निम्न पाँच अवस्थाएँ होती हैं–

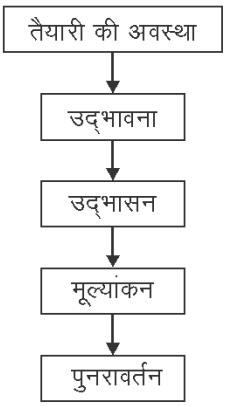

1. **तैयारी की अवस्था**–प्रथम सोपान तैयारी की अवस्था में विचारक अपनी समस्या को स्पष्ट करता है। समस्या के समाधान के लिए, जिसे वह आवश्यक समझता है, उस सामग्री एवं तथ्यों को एकत्र करता है। यह अध्ययन का समय होता है। इस काल में व्यक्ति प्रदत्तों को सुव्यवस्थित करता है, समस्या को परिभाषित करने के लिए, प्रासंगिक विचारों, तथ्यों तथा सामग्री एवं अन्य विभिन्न अंशों की संयोजना इस ढंग से करता है, जिससे लक्ष्य की प्राप्ति हो सके। व्यक्ति में सृजन करने की अन्तःप्रेरणा होती है।
2. **उद्भावन**–दूसरी अवस्था उद्भावन की है जिसमें व्यक्तित्व अपने विचारों को व्यवस्थित, पुनर्व्यवस्थित तथा परीक्षण करता है। यह समस्या के समाधान के विषय में काल्पनिक चिन्तन की अवस्था है। इस काल में वे विचार मंद पड़ने लगते हैं जो समस्या समाधान में बाधक थे। दूसरी ओर वह उन संकेतों का आभास प्राप्त करता है जो समस्या में सहायक होते हैं। इस काल में अचेतन स्तर पर समस्या का समाधान होता है।
3. **उद्भासन**–इस सोपान में अकस्मात्, समाधान उद्भाषित होता है। इस अवस्था में व्यक्ति सहसा समस्या की मुख्य बातों को समझ लेता है और समस्या के विभिन्न सम्बन्धों का प्रत्यक्षण कर लेता है। अनेक सृजनशील व्यक्ति इस बात की पुष्टि करते हैं कि सृजनात्मक विचार सहसा उदय होते हैं।
4. **मूल्यांकन**–इस अवस्था में वह अपने सारे प्रयत्नों का मूल्यांकन करता है। बहुधा गलत हो जाने पर विचारक पुनः उसी बिन्दु पर पहुँच जाता है जहाँ से उसने प्रारम्भ किया था।
5. **पुनरावर्तन**–मूल्यांकन के पश्चात् यदि कुछ परिवर्तन अपेक्षित होता है अथवा अन्य अपेक्षाकृत गौण समस्या के समाधान की अपेक्षा होती है, तब वह पुनर्निरीक्षण अथवा पुनरावर्तन करता है।

सृजनात्मकता के क्षेत्र (Scope of Creativity)

सृजनात्मकता के विभिन्न क्षेत्र हो सकते हैं, जिन्हें निम्नांकित सारणी से स्पष्टतया समझा जा सकता है–

सृजनात्मकता का क्षेत्र	क्षेत्र के अन्तर्गत
1. विज्ञान (Science)	भौतिकी, रसायन, औषधि निर्माण, प्रकृति विज्ञान, जीव विज्ञान से सम्बन्धित हर प्रकार के आविष्कार एवं अनुसंधान।
2. कला–कौशल (Art-Skill)	संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला तथा धातु, काष्ठ, चर्म, कागज आदि से सम्बन्धित कौशल, भवन निर्माण कला।
3. तकनीकी (Technology)	मशीनों, उपकरणों, उनके यंत्रों और पुर्जों आदि का निर्माण।
4. साहित्य (Literature)	कविता, कहानी, नाटक, उपन्यास, निबन्ध आदि की रचना, भाषण कला, लेखन कला।
5. सामाजिक क्षेत्र (Social Field)	धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक,

		शैक्षिक आदि क्रियायें तथा सम्बन्धित समस्याओं का समाधान।
6.	व्यक्तिगत क्षेत्र (Personal Field)	व्यक्ति के अपने व्यक्तिगत जीवन का क्षेत्र–कोई व्यवसाय, उद्योग या कार्य, सामाजिक, राजनैतिक, प्रशासनिक आदि।
7.	मानसिक प्रक्रियाओं का क्षेत्र (Field of Mental Process)	कल्पना, तर्क, चिन्तन, समस्या–समाधान और अभिव्यक्ति।

सृजनात्मकता के सिद्धान्त (Theories of Creativity)

सृजनात्मकता के सिद्धान्त निम्नलिखित हैं–

1. **मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त**–फ्रॉयड एवं जुंग ने यह धारणा दी है। यह दमित अचेतन ही इच्छाओं की सृजनशीलता का निर्धारण करता है।
2. **साहचर्यात्मक सिद्धान्त**–इस सिद्धान्त के अनुसार सृजनात्मक चिन्तन के अन्तर्गत साहचर्यात्मक तत्वों के नए संयुक्तियों के तत्व जितने ही अधिक परस्पर दूरस्थ होंगे, प्रक्रिया उतनी ही सृजनात्मक होगी।
3. **प्रक्रिया सिद्धान्त–रीसमैन** ने (सन् 1931) सृजनात्मक प्रक्रिया के 6 आवश्यक सोपान बताए हैं–कठिनाई का निरीक्षण, समस्त उपलब्ध सूचनाओं का सर्वेक्षण, आवश्यकता का विश्लेषण, वस्तुनिष्ठ समाधानों की रचना, समाधानों का आलोचनात्मक विश्लेषण, नवीन विचार का जन्म। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मक विकास की पाँच अवस्थाएँ बताई हैं–तैयारी की अवस्था, उद्भावन, उद्भासन, मूल्यांकन, पुनरावर्तन।
4. **स्थानान्तरण सिद्धान्त (Transfer Theory)**–बहुत–से मनोवैज्ञानिकों का विश्वास है कि सृजनात्मक कृतियाँ ही समस्या का समाधान हैं तथा वैज्ञानिक अभियंता आदि वातावरण में समस्यायें खोजते हैं, सृजनात्मक चिन्तन और समस्या समाधान होने पर, समस्या समाधान के द्वारा सृजनात्मक चिन्तन को तथा सृजनात्मक चिन्तन के द्वारा समस्या समाधान को समझा जा सकता है। यह समानता सोचने में सहायक होती है कि प्रत्येक समाधान में कुछ न कुछ सृजनात्मकता पाई जाती है।
5. **प्रतिभा का सिद्धान्त (Theory of Giftedness)**–स्पीयरमैन ने बुद्धि को सृजनात्मक चिन्तन का आधार माना है जिसे उन्होंने 'जी' (G) घटक कहा है, जो समस्त योग्यताओं का सार है थर्स्टन ने भी इन्हीं की भाँति सृजनात्मक चिंतन की व्याख्या बौद्धिक आधार पर की है। इस प्रकार सृजनात्मक चिंतन का सिद्धान्त इन्हीं के बुद्धि के सिद्धान्त से सम्बन्धित है। इनके अनुसार जिस व्यक्ति का जितना अधिक संपर्क कार्य के पूर्व और अचेतन पक्ष में होगा, वह उतना ही अधिक सृजनशील होगा।
6. **प्रक्रिया सिद्धान्त (Process Theory)–रीसमैन** ने (सन् 1931) सृजनात्मक प्रक्रिया के 6 आवश्यक सोपान बताए हैं–कठिनाई का निरीक्षण, समस्त उपलब्ध सूचनाओं का सर्वेक्षण, आवश्यकता का विश्लेषण, वस्तुनिष्ठ समाधानों की रचना, समाधानों का आलोचनात्मक विश्लेषण, नवीन विचार का जन्म। कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मक विकास की पाँच अवस्थाएँ बताई हैं–तैयारी की अवस्था, उद्भावन, उद्भासन, मूल्यांकन, पुनरावर्तन।
7. **अभिप्रेरणात्मक सिद्धान्त (Motivational Theory)**–सृजनशील व्यक्ति किसी समस्या के समाधान के लिए प्रेरित होता है। रोजर्स (सन् 1961) के अनुसार यदि मनुष्य की सृजनात्मक प्रवृत्ति में अभिप्रेरणा विद्यमान हो तो स्वयं को प्रत्यक्षीकृत करने का प्रयास करेगा। वह अपने विभवता का अनुभव करेगा तथा उच्च निष्पत्ति को प्राप्त करने का प्रयास करेगा।
8. **मानसिक स्वास्थ्य का सिद्धान्त (Mental Health Theory)**–इस सिद्धान्त का आधार मनोविश्लेषणात्मक है। मास्लो (1958) का विश्वास है कि–सृजनात्मकता पूर्ण व्यक्तित्व संगठन या सचेतन मस्तिष्क और पूर्व सचेतन के मध्य अवरोध समाप्त करते हैं। इस प्रकार सचेतन से सामग्री पुनः प्राप्त करके यथार्थ जगत् में लौट आता है। इस प्रकार व्यक्ति पूर्ण क्रियाशील बन जाता है। व्यक्ति उच्च सिद्धिकरण स्तरों पर उच्च संश्लेषणात्मक योग्यताओं को विकसित करता है और अपनी शक्तियों का प्रयोग बौद्धिक कार्यों में करता है।
9. **संज्ञानात्मक सिद्धान्त (Cognitive Theory)**–इस सिद्धान्त के अन्तर्गत यह देखा जाता है कि सृजनशील व्यक्ति किस प्रकार वस्तुओं एवं घटनाओं का प्रत्यक्षीकरण एवं चिन्तन करता है।
10. **स्वतन्त्रता सिद्धान्त (Independence Theory)**–इस सिद्धान्त का दृष्टिकोण है कि बालकों को उनकी सृजनात्मकता की सुरक्षा हेतु अध्यापकों तथा अभिभावकों को सहायता करनी चाहिए। इसलिए बालकों को प्रारम्भिक प्रयासों में ऋणात्मक मूल्यांकन के परिणामों से अवगत नहीं कराना चाहिए।
11. **व्यक्तित्व शीलगुण का सिद्धान्त (Personality Trait Theory)**–यह सिद्धान्त व्यक्तित्व के उन शीलगुणों से सम्बन्धित है जो सृजनशील व्यक्ति में पाए जाते हैं। इस सिद्धान्त का प्रतिपादन विभिन्न क्षेत्रों में सृजनात्मक व्यक्ति से सम्बन्धित परिणामों के आधार पर हुआ है। सृजनात्मक व्यक्ति अन्य व्यक्तियों से भिन्न होते हैं क्योंकि उनके व्यक्तित्व में ऐसी विशेषताएँ होती हैं, जो सृजनात्मक उत्पादक के लिए प्रेरणात्मक होती है।
12. **बुद्धि सिद्धान्त (Intelligence Theory)**–इस सिद्धान्त के अनुसार सृजनात्मकता को गिलफोर्ड (सन् 1950) ने केन्द्राभिमुख उत्पादन प्रक्रिया का प्रयोग आवृत्ति, विषय वस्तुओं, अभिन्न इकाइयों, वर्गों, सम्बन्धों, प्रणालियों, रूपान्तरणों और उपयोग के उत्पादकों को देने के लिए किया जाता है, तब उसे अशाब्दिक सृजनात्मकता कहते हैं।

सृजनात्मकता के परीक्षण (Tests for Creativity)

सृजनात्मकता की पहचान के लिए **गिलफोर्ड** ने अनेक परीक्षणों का निर्माण किया है। ये परीक्षण निरन्तरता (Fluency), लोचनीयता (Flexibility), मौलिकता (Originality) तथा विस्तार (Elaboration) का मापन करते हैं। प्रमुख परीक्षण इस प्रकार हैं–

(i) चित्रपूर्ति परीक्षण–चित्रपूर्ति परीक्षण में अपूर्ण चित्रों को पूरा करना पड़ता है।

(ii) वृत्त परीक्षण–इस परीक्षण में वृत्त (Circle) में चित्र बनाये जाते हैं।

(iii) प्रोडक्ट इम्प्रवमैन्ट टास्क–चूने के खिलौनों द्वारा नूतन विचारों को लेखबद्ध करके सृजनात्मकता पर बल दिया जाता है।

(iv) टीन के डिब्बे–खाली डिब्बों से नवीन वस्तुओं का सृजन कराया जाता है।

सृजनात्मकता और शिक्षा
(Creativity and Education)

शिक्षक को चाहिए कि बालकों में सृजनात्मकता का विकास करने के लिए निम्न उपाय करें–

1. समस्या के स्तरों की पहचान
2. तथ्यों का अधिगम
3. मौलिकता
4. मूल्यांकन
5. जाँच
6. पाठ्य–सहगामी क्रियायें

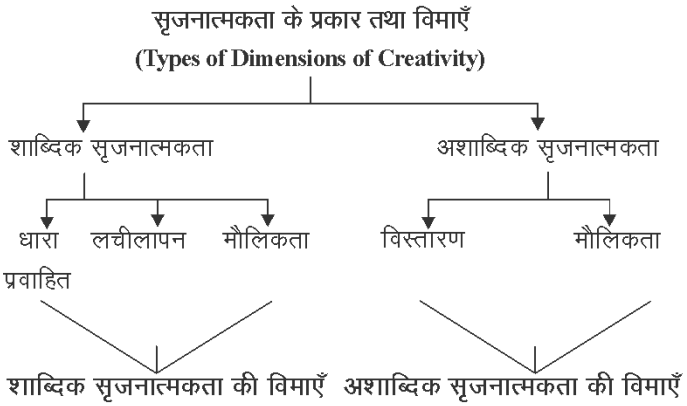

महत्वपूर्ण बिन्दु (Important Points)

- ❑ बच्चे के विकास के शिरस्थ सिद्धान्त के अनुसार सत्य कथन है **–विकास सिर से पैर की ओर होता है।**
- ❑ विकास का सिद्धान्त है **–सभी की विकास दर समान नहीं होती**
- ❑ विकास ..... से ..... की ओर बढ़ता है।**–सामान्य, विशिष्ट**
- ❑ "प्रत्येक जाति चाहे वह पशु जाति हो या मानव जाति अपनी जाति के अनुरूप विकास के प्रतिमान सिद्धान्त का अनुसरण करती है।" **–हरलॉक के अनुसार**
- ❑ विकास के सभी आयाम; जैसे–शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक आदि एक-दूसरे से परस्पर सम्बन्धित हैं **–परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त**
- ❑ "विभिन्न व्यक्तियों के विकास की गति में विभिन्नता पाई जाती है।" **–डगलस और हॉलैण्ड के अनुसार**
- ❑ "विकास प्रक्रियाओं की निरंतरता का सिद्धान्त केवल इस तथ्य पर बल देता है कि कोई भी परिवर्तन आकस्मिक नहीं होता।" **–स्किनर के अनुसार**
- ❑ "विकास के स्वरूपों में व्यापक वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं।" **–स्किनर के अनुसार**

मनोवैज्ञानिकों ने शैक्षिक दृष्टि से बाल विकास को तीन भागों में बाँटा है–
1. शैशवावस्था 2. बाल्यावस्था 3. किशोरावस्था

- ❑ समाजीकरण प्रक्रिया के प्रारम्भ होने की अवस्था है **–शैशवावस्था**
- ❑ एक नवजात शिशु का कद (ऊँचाई होती है) **–19.5 इंच**
- ❑ एक नवजात शिशु का भार होता है **–7 पाउंड**
- ❑ शैशवावस्था को सीखने का आदर्श काल कहा है **–वेलेन्टाइन ने**
- ❑ सबसे तेज शारीरिक विकास होता है **–शैशवावस्था में**
- ❑ विकास की प्रक्रिया होती है **–गर्भावस्था से लेकर जीवन पर्यन्त तक**
- ❑ शैशवावस्था में वृद्धि **–तीव्र होती है**
- ❑ जन्म से किशोरावस्था तक की गतिविधियों को **–बाल मनोविज्ञान कहते हैं**
- ❑ शैशवावस्था में चार संवेग होते हैं **–भय, क्रोध, प्रेम, पीड़ा**
- ❑ शैशवावस्था द्वारा जीवन का पूरा क्रम निश्चित होता है, कहा है **–एडलर ने**
- ❑ मनुष्य को जो कुछ बनना होता है। प्रारम्भ के चार-पाँच वर्षों में बन जाता है, कथन है **–सिग्मंड फ्रायड**
- ❑ शैशवावस्था को बालक का कहा जाता है **–निर्माण काल**
- ❑ नवजात शिशु में हड्डियों की संख्या लगभग होती है **–270**
- ❑ कौन-सी अवस्था में दोहराने की प्रवृत्ति तीव्र होती है **–शैशवावस्था**
- ❑ फ्रायड के अनुसार लड़कियों में कौन-सी ग्रन्थि पायी जाती है **–इलेक्ट्रा ग्रन्थि**
- ❑ जन्म के समय शिशु की औसत लम्बाई होती है **–51.5 सेमी.**
- ❑ नवजात शिशु का भार लगभग होता है **–3 किलो ग्राम**
- ❑ कितने वर्ष में सभी दूध के दाँत निकल आते हैं **–एक वर्ष में**
- ❑ जन्म के समय शिशु की धड़कन रहती है **–अनियमित**
- ❑ हड्डियों में कौन-से तत्व पाये जाते हैं **–कैल्शियम, फॉस्फोरस और खनिज तत्व**
- ❑ कितने वर्ष का बच्चा सार्थक शब्दों का प्रयोग करने लगता है **–3 वर्ष**
- ❑ बालक के विकास की प्रक्रिया एवं विकास की शुरुआत होती है **–जन्म या प्रसव पूर्व से**
- ❑ डाल्टन प्रणाली के जन्मदाता हैं **–मिस हेलेन पार्कहर्स्ट**
- ❑ शैशवावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है **–मूल प्रवृत्यात्मक व्यवहार**
- ❑ मूर्त संक्रियात्मक अवस्था का काल होता है **–7 वर्ष से 11 वर्ष**
- ❑ मनोवैज्ञानिकों के अनुसार छोटे बच्चों को किस आयु में स्कूल भेजना चाहिए **–5 वर्ष**
- ❑ दूध के दाँत होते हैं **–20**
- ❑ जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार होता है **–350 ग्राम**
- ❑ ''शैशवावस्था में बच्चे का संवेगात्मक विकास होता है'' **–उत्तेजनापूर्ण**
- ❑ बाल्यावस्था की आयु होती है **–6-12 वर्ष**
- ❑ बाल्यावस्था में बालक होता है **–बाह्य केन्द्रित**
- ❑ क्रिया एवं खेल पर आधारित शिक्षा विधि है **–माण्टेसरी शिक्षण विधि**
- ❑ बाल्यावस्था में खेल की प्रकृति होनी चाहिए **–सामूहिक**
- ❑ बाल्यावस्था में बालक सम्पर्क रखता है **–समवयस्क समलिंगियों से**
- ❑ बाल्यावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है **–सामूहिकता की भावना**

❑ बाल्यावस्था की प्रमुख विशेषता है —**अधिगम की तीव्रता अपेक्षाकृत स्थिर विकास प्रक्रिया यथार्थवादी दृष्टिकोण**

❑ बालिकाओं का भाषा विकास बालकों से आगे रहता है —**बाल्यावस्था में**

❑ हड्डियों का विकास होता है —**16 वर्ष तक**

❑ 12 वर्ष से 18 वर्ष तक की आयु होती है —**किशोरावस्था**

❑ पूर्व-किशोरावस्था होती है —**12 से 16 वर्ष**

❑ उत्तर-किशोरावस्था होती है —**17 से 19 वर्ष**

❑ किशोरावस्था बड़े दबाव, तनाव तूफान तथा संघर्ष की अवस्था है, कहा है —**स्टेनले हाल ने**

❑ अत्यन्त द्रुत एवं तीव्र विकास का काल है —**पूर्व किशोरावस्था**

❑ किशोरावस्था में संवेग प्रायः होते हैं —**अधिक उग्र**

❑ ''किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है।'' —**क्रो एवं क्रो**

❑ किशोरावस्था को अंग्रेजी में कहते हैं —**Adolescence**

❑ संवेगात्मक विकास में किस अवस्था में तीव्र परिवर्तन होता है —**किशोरावस्था**

❑ सामाजिक व्यवस्था में परिपक्वता किस काल में आती है —**किशोरावस्था**

❑ किशोरावस्था की विशेषताओं को सर्वोत्तम रूप से व्यक्त करने वाला एक शब्द है —**परिवर्तन**

❑ किशोरावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है —**पूर्ण संवेगात्मक विकास के कारण स्थायित्व एवं समायोजन का अभाव**

❑ किशोरावस्था की प्रमुख विशेषता नहीं है —**संचय की प्रवृत्ति**

❑ संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है **μ उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल**

❑ किस अवस्था में आवेगों की तीव्र स्थिति उत्पन्न होती है —**किशोरावस्था**

❑ शक्तियों तथा संवेदनशीलता, अवलोकन, प्रत्ययीकरण, स्मृति, ध्यान, कल्पना, चिन्तन, बुद्धि, तर्क आदि में वृद्धि होना है —**मानसिक विकास**

❑ शिशु में कब भय एवं क्रोध से सम्बन्धित संवेग का विकास होने लगता है —**एक वर्ष में**

❑ गर्भावस्था (Conception Period) के सन्दर्भ में कथन सही नहीं है —**गर्भावस्था में विकास की गति मन्द होती है**

❑ विकास कभी न समाप्त होने वाली प्रक्रिया है; यह विचार सम्बन्धित है —**निरन्तरता का सिद्धान्त**

❑ खिलौने की आयु कहा जाता है —**पूर्व बाल्यावस्था**

❑ विकास का अर्थ है —**परिपक्वता एवं अनुभव के फलस्वरूप होने वाले परिवर्तनों की शृंखला**

❑ मनोविज्ञान के अनुसार बाल विकास की सबसे जटिल अवस्था है —**किशोरावस्था**

❑ वह अवस्था जिसमें शर्म तथा गर्व जैसी भावना का विकास होता है, है —**बाल्यावस्था**

❑ शैशवावस्था की मुख्य विशेषता नहीं है —**चिन्तन प्रक्रिया**

❑ बाल्यावस्था अवस्था होती है —**बारह वर्ष तक**

❑ विकास और वृद्धि से तात्पर्य है —**आकार, सोच, समझ-कौशलों में वृद्धि**

❑ सीखने की प्रोजेक्ट विधि किस अवस्था के लिए उपयोगी है —**बाल्यावस्था, पूर्व बाल्यावस्था, किशोरावस्था**

❑ बच्चे के विकास के शिरस्थ सिद्धान्त के अनुसार सत्य कथन है —**विकास सिर से पैर की ओर होता है**

❑ वाइगोत्स्की (Vygotsky) ने बाल विकास के विषय में कहा है कि —**यह सामाजिक अनुक्रिया का उत्पाद होता है**

❑ विकास का सिद्धान्त है —**सभी की विकास दर समान नहीं होती**

❑ मानव विकास के क्षेत्रों में विभाजित किया जा सकता है —**शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक और सामाजिक**

❑ विकास के किस काल को 'अत्यधिक दबाव और तनाव का काल' कहा गया है —**किशोरावस्था**

❑ 'बच्चे अपनी वृद्धि व विकास हेतु कठोर अध्ययन करते हैं' यह मत है —**मैस्लो**

❑ शैशवावस्था की प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषता है —**अनुकरणात्मक प्रवृत्ति का प्रभाव**

❑ अपने आप से प्रेम करने की प्रवृत्ति को कहते हैं —**नार्सिसिज्म की प्रवृत्ति**

❑ विकास ..... से ..... की ओर बढ़ता है —**सामान्य–विशिष्ट**

❑ किस प्रकार के विकास से एकाग्रता तथा सृजनात्मकता का सम्बन्ध है —**बौद्धिक विकास**

❑ मानसिक वृद्धि और विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है —**सीखना तथा परिपक्वन दोनों**

❑ बच्चे के विकास के सिद्धान्त को समझना शिक्षक की सहायता करता है —**शिक्षार्थियों की भिन्न अधिगम शैलियों को प्रभावी रूप में सम्बोधित करने में**

❑ भाषा विकास का सिद्धान्त नहीं है —**अतिरिक्त शक्ति का सिद्धान्त**

❑ भाषा विकास के सन्दर्भ में कौन-सा क्षेत्र पियाजे के द्वारा कमतर आँका गया —**सामाजिक अन्त :क्रिया**

❑ भाषा-अवबोधन से सम्बद्ध विकार है —**भाषाघात**

❑ एक बच्चा अपनी मातृभाषा सीख रहा है व दूसरा बच्चा वही भाषा द्वितीय भाषा के रूप में सीख रहा है। दोनों किस प्रकार की त्रुटि कर सकते हैं —**विकासात्मक**

❑ चिन्तन प्रारम्भ होने के लिए आवश्यक है —**समस्या**

❑ भाषा और विचार के बारे में पियाजे और वाइगोत्स्की के दृष्टिकोण का सही वर्णन करता है —**वाइगोत्स्की के अनुसार भाषा से विचार जन्म लेता है और पियाजे के अनुसार भाषा का विचार पर प्रभाव नहीं पड़ता है**

❑ भाषिक बुद्धि वाले व्यक्ति को दर्शाता है —**शब्दों के अर्थ, क्रम तथा भाषा के विविध प्रयोगों के प्रति संवेदनशीलता**

❑ अपने चिन्तन में अवधारणात्मक परिवर्तन लाने हेतु शिक्षार्थियों को सक्षम बनाने के लिए शिक्षक को —**स्पष्ट और आश्वस्त करने वाली व्याख्या देनी चाहिए तथा शिक्षार्थियों के साथ चर्चा करनी चाहिए**

❑ एक कक्षा में बहुभाषी विद्यार्थी हैं; यह स्थिति उत्पन्न करती है —**सीखने के समृद्ध संसाधन**

❑ भाषा विकास में सहयोग करने का गलत तरीका है —**उसकी अपनी भाषा के प्रयोग को अमान्य करना**

❑ राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा-2005 दस्तावेज में भाषा के लिए निहित है —**तीन भाषा**

❑ भाषा विकास के लिए प्रारम्भिक बचपन ..... काल है —**अति संवेदनशील**

- ❑ वाटसन नामक वैज्ञानिक ने अध्ययन करके पाया कि नवजात शिशु के तीन संवेग होते हैं **–भय, क्रोध, प्रेम**
- ❑ ऋणात्मक संवेग कहा जाता है **–घृणा, क्रोध, भय**
- ❑ संवेग का सम्बन्ध है **–भावना**
- ❑ नकारात्मक मूल प्रवृत्ति है **–घृणा, भय, क्रोध**
- ❑ 'पलायन' है **–मूल-प्रवृत्ति**
- ❑ ''किशोरावस्था के आगमन का मुख्य चिह्न संवेगात्मक विकास में तीव्र परिवर्तन होता है।'' मत है **–कोल एवं ब्रूस**
- ❑ ''संवेग, चेतना की वह अवस्था है, जिसमें रागात्मक तत्व की प्रधानता रहती है।'' यह कथन किस मनोवैज्ञानिक का है **–जे. एस. रॉस**
- ❑ बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में, कक्षा शिक्षण में एवं अनुशासन में प्रभावी होता है **–संवेगात्मक समायोजन**
- ❑ क्रोध व भय है **–संवेग**
- ❑ संवेगों की उत्पत्ति होती है **–मूल प्रवृत्ति से**
- ❑ संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है, यह कथन है **–वुडवर्थ का**
- ❑ उत्तेजना या भावों में उथल-पुथल शाब्दिक अर्थ है **–संवेग शब्द का**
- ❑ संज्ञान और संवेग के बारे में सही कथन है–**संज्ञान और संवेग परस्पर जुड़े हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं**
- ❑ रॉस ने संवेग को बाँटा है **–3 प्रकार में**
- ❑ संज्ञान और सामाजिक दक्षता के लिए सार्थक हैं **–खेलना**
- ❑ स्वयं की भावनाओं तथा संवेगों को नियन्त्रित करने से सम्बन्धित बुद्धि को कहा जायेगा **–अन्तर्वैयक्तिक बुद्धि**
- ❑ बच्चों में संवेगात्मक व्यवहार की अभिव्यक्ति किस समय से प्रारम्भ हो जाती है **–जन्म के समय से**

UPTET (2013-2020) के पेपर्स में पूछे गये प्रश्न

1. मानव–विकास का प्रारम्भ होता है–
(A) पूर्व–बाल्यावस्था से
(B) उत्तर–बाल्यावस्था से
(C) शैशवावस्था से
(D) गर्भावस्था से
UPTET पेपर-I (I to V): 8-01-2020

1. (D) मानव विकास का प्रारम्भ गर्भावस्था से प्रारम्भ होता है। मानव जीवन के विकास का अध्ययन विकासात्मक मनोविज्ञान के अन्तर्गत किया जाता है। विकासात्मक मनोविज्ञान मानव के पूरे जीवन भर होने वाले वर्धन, विकास एवं बदलावों का अध्ययन करता है। इसमें गर्भावस्था से लेकर वयस्कावस्था के अंतिम स्तर तक के विकास का अध्ययन सम्मिलित होता है। सारणी में इसे आयु के आधार पर क्रम से प्रदर्शित किया गया है।

विकास की अवस्था	आयु विवरण
1. गर्भावस्था (prenatal stage)	गर्भाधान से लेकर जन्म तक
2. शैशवावस्था (infancy stage)	जन्म से तीन वर्ष की आयु तक
3. बाल्यावस्था (childhood stage)	चौथे वर्ष से 12 वर्ष की आयु तक
4. किशोरावस्था (adolescence stage)	13 वर्ष से 17 वर्ष तक
5. वयस्कावस्था (adulthood stage)	18 वर्ष से लेकर मृत्यु तक

2. शिक्षा में अवरोधन का तात्पर्य है–
(A) बालक का विद्यालय न जाना
(B) बालक द्वारा विद्यालय छोड़ देना
(C) किसी बालक का एक वर्ष से अधिक समय तक एक ही कक्षा में रहना
(D) बालक का विद्यालय में प्रवेश न लेना
UPTET पेपर-I (I to V): 8-01-2020

2. (C) शिक्षा में अवरोधन से तात्पर्य किसी बालक का एक वर्ष से अधिक समय तक एक कक्षा में रहना होता है। इसका मुख्य कारण शिक्षा के क्षेत्र में छात्र की नियमित रूप से प्रगति न हो पाना होता है। अर्थात् निर्धारित अवधि में किसी कक्षा में परीक्षा पास करके अगली कक्षा तक न पहुँच पाना शिक्षा का अवरोधन कहलाता है।

3. बच्चे की वृद्धि मुख्यतः सम्बन्धित है–
(A) सामाजिक विकास से
(B) भावात्मक विकास से
(C) नैतिक विकास से
(D) शारीरिक विकास से
UPTET पेपर-I (I to V): 8-01-2020

3. (D) बच्चे में वृद्धि मुख्यतः शारीरिक विकास से संबंधित है।
व्यक्ति के स्वाभाविक विकास को वृद्धि कहते हैं। गर्भाशय में भ्रूण बनने के पश्चात् जन्म होते समय तक उसमें जो प्रगतिशील परिवर्तन होते हैं वह वृद्धि है। इसके अतिरिक्त जन्मोपरान्त से प्रौढ़ावस्था तक व्यक्ति में स्वाभाविक रूप से होने वाले परिवर्तन, जो अधिगम एवं प्रशिक्षण आदि से प्रभावित नहीं हैं, और ऊर्ध्ववर्ती हैं, यह भी वृद्धि है। वृद्धि की सीमा पूर्ण होने के पश्चात् लम्बाई में विकास होने की सम्भावना नगण्य होगी। वृद्धि एक जैविक प्रक्रिया है जो सभी जीवों में पायी जाती है। अभिवृद्धि स्वतः होती है। व्यक्ति में वृद्धि का माप किया जा सकता है और मापन में वही तत्व अथवा विशेषताएँ आती हैं जो जन्म के समय विद्यमान होंगी। अधिगम पर वृद्धि का प्रभाव देखा जा सकता है। जब तक बालक की माँसपेशियों की पर्याप्त वृद्धि नहीं हो जाती तब तक वह चलना अथवा लिखना नहीं सीख सकता, किन्तु यदि वृद्धि पर अधिगम अथवा अभ्यास का प्रभाव डाला जाएगा तो उसे हम विकास कहेंगे न कि वृद्धि, क्योंकि अभिवृद्धि स्वतः घटित होती है। व्यक्ति की वृद्धि में वातावरण का प्रभाव पड़ सकता है।

4. निम्न में से कौन–सा संज्ञानात्मक क्षेत्र से सम्बन्धित नहीं है?
(A) अनुप्रयोग (B) बोध
(C) ज्ञान (D) अनुमूल्यन
UPTET पेपर-I (I to V): 8-01-2020

4. (D) अनुमूल्यन संज्ञानात्मक क्षेत्र से संबंधित नहीं है।

5. विकास की किस अवस्था को कोल तथा ब्रूस ने "संवेगात्मक विकास का अनोखा काल" कहा है?
(A) बाल्यावस्था (B) प्रौढ़ावस्था
(C) किशोरावस्था (D) शैशवावस्था
UPTET पेपर-I (I to V): 8-01-2020

5. (A) बाल्यावस्था को कोल तथा बूस ने संवेगात्मक विकास का अनोखा काल कहा है। इस काल में बालकों की ज्ञानेन्द्रियाँ तीव्रता से विकसित होती हैं। मानसिक विकास की दृष्टि से भाषा का विकास व कौशल का विकास होता है। मनोवैज्ञानिकों ने पाँचों ज्ञानेन्द्रियों को 'ज्ञान का प्रत्यक्ष द्वार' (Gateway of knowlege) कहा है। अतः मानसिक विकास की दृष्टि से इस काल के भाषा व कौशलों का विकास भी होता है। साथ ही बालक अपने संवेगों के प्रति प्रतिक्रिया को व्यक्त भी करते हैं।

6. किसी भी नयी भाषा को सीखने के लिए कहाँ से प्रारम्भ किया जाना चाहिए ?

(A) अक्षरों व शब्दों के मध्य साहचर्य से

(B) वाक्यों के निर्माण से

(C) शब्दों के निर्माण से

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

6. (A) नयी भाषा को सीखने के लिए अक्षरों तथा शब्दों का ज्ञान आवश्यक है। इसलिए शिशु अवस्था में शब्दों का ज्ञान कराया जाता है। उसके पश्चात् अक्षरों का ज्ञान। अतः अक्षरों तथा शब्दों के मध्य साहचर्य से नयी भाषा सीखी जाती है।

7. निम्न में से कौन-सा संवेग का तत्त्व नहीं है ?

(A) व्यवहारात्मक (B) दैहिक

(C) संज्ञानात्मक (D) संवेदी

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

7. (D) व्यवहारात्क, दैहिक व संज्ञानात्मक तीनों संवेग के तत्व हैं, जबकि संवेदी–संवेग का तत्व नहीं है। क्योंकि संवेद उत्पन होने पर दो स्तर पर परिवर्तन होता है–

(1) शारीरिक

(2) मानसिक ।

8. संज्ञानात्मक क्षेत्र का सही क्रम है–

(A) ज्ञान–अनुप्रयोग–अवबोध–विश्लेषण –संश्लेषण–मूल्यांकन

(B) मूल्यांकन–अनुप्रयोग–विश्लेषण– संश्लेषण–अवबोध–ज्ञान

(C) मूल्यांकन-संश्लेषण-विश्लेषण-अनुप्रयोग-अवबोध-ज्ञान

(D) ज्ञान-अवबोध-अनुप्रयोग-विश्लेषण-संश्लेषण-मूल्यांकन

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

8. (D) संज्ञानात्मक क्षेत्र का सही क्रम- ज्ञान–अवबोध–अनुप्रयोग–विश्लेषण–संश्लेषण–मूल्यांकन होता है।

9. निम्न में से कौन-सी बाद की बाल्यावस्था के बौद्धिक विकास की विशेषता नहीं है ?

(A) भविष्य की योजना की सूझ-बूझ

(B) विज्ञान की काल्पनिक कथाओं में अधिक रुचि

(C) बढ़ती हुई तार्किक शक्ति

(D) काल्पनिक भयों का अन्त

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

9. (A) भविष्य की योजना की सूझ-बूझ बाल्यावस्था की बौद्धिक विशेषता नहीं है। क्योंकि भविष्य की योजनाओं के लिए किशोरावस्था चिंतित रहती है। जिसके कारण बालक तनाव में रहता है न कि वह अपने भविष्य की योजनाओं के प्रति सूझ-बूझ प्रदर्शित करता है।

10. इनमें से कौन मनोवैज्ञानिक 'भाषा विकास' से सम्बद्ध है ?

(A) पावलॉव (B) बिने

(C) चॉमस्की (D) मास्लो

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

10. (C) चॉमस्की एक भाषा विज्ञानी थे। उन्होंने अपने इस सिद्धान्त में भाषा विकास के धनात्मक पहलू पर अधिक बल दिया। भाषा विकास का यह पहलू बच्चे द्वारा वाक्य विन्यास के नियमों को सीखने की क्षमता पर आधारित है।

11. गिरोह अवस्था किस आयु-वर्ग एवं विलम्ब-विकास से सम्बन्धित है ?

(A) 16–19 वर्ष एवं नैतिकता

(B) 3–6 वर्ष एवं भाषा

(C) 8–10 वर्ष एवं समाजीकरण

(D) 16–19 वर्ष एवं संज्ञानात्मक

UPTET पेपर-I (I to V): 18-11-2018

11. (C) गिरोह अवस्था 8-10 वर्ष एवं समाजीकरण से सम्बन्धित है। 8-10 वर्ष की आयु के बालक अपने समूह का सक्रिय सदस्य बन जाता है जो किशोरावस्था में चरम स्तर पर पहुँच जाता है। अतः गिरोह अवस्था समाजीकरण से सम्बन्धित होती है।

12. संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति का न्यूनतम स्तर है–

(A) ज्ञान (B) बोध

(C) अनुप्रयोग (D) विश्लेषण

UPTET पेपर-I (I to V): 15-10-2017

12. (A) ब्लूम द्वारा संज्ञानात्मक सम्प्राप्ति को छह भागों में विभाजित किया गया है; यथा- ज्ञान, अवबोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण तथा मूल्यांकन के रूप में विभाजित किया है। इनमें से ज्ञान संज्ञानात्मक में सबसे नीचे स्तर पर है।

13. "अधिगम, अनुभव और प्रशिक्षण के परिणाम–स्वरूप व्यवहार में परिवर्तन है।" यह कथन किनके द्वारा दिया गया?

(A) गेट्स व अन्य

(B) मॉर्गन और गिलिलैण्ड

(C) स्किनर

(D) क्रॉनबैक

UPTET पेपर-I (I to V): 15-10-2017

13. (A) अधिगम का अर्थ होता है, सीखना; यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है। इसके माध्यम से हम ज्ञान अर्जित करके अपने व्यवहार में परिवर्तन लाते हैं। गेट्स एवं अन्य मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम को परिभाषित करते हुए कहा है कि "अधिगम अनुभव एवं प्रशिक्षण के व्यवहार में परिवर्तन है।"

14. निम्न में से कौन–सा शारीरिक विकास का एक प्रमुख नियम है ?

(A) मानसिक विकास से भिन्नता का नियम

(B) अनियमित विकास का नियम

(C) द्रुतगामी विकास का नियम

(D) कल्पना और संवेगात्मक विकास से सम्बन्ध का नियम

UPTET पेपर-I (I to V): 15-10-2017

14. (C) शारीरिक विकास एक सतत विकास है, जो कभी मन्द तो कभी द्रुत (तेज) गति से होता है। द्रुतगामी विकास शारीरिक विकास का प्रमुख नियम है।

15. बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं–

(A) आर्थिक तत्त्व

(B) सामाजिक परिवेशजन्य तत्त्व

(C) शारीरिक तत्त्व

(D) वंशानुगत तत्त्व

UPTET पेपर-I (I to V): 15-10-2017

15. (B) बच्चों के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक मुख्य रूप से सामाजिक परिवेशजन्य तत्व होता है। परिवार के पश्चात समाज ही वह संस्थान हैं, जहाँ बालकों का सर्वांगीण (सामाजिक सांस्कृतिक, मानसिक, नैतिक) विकास होता है।

16. निम्न में से कौन–सा विकास का सिद्धान्त नहीं है ?

(A) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त

(B) निरन्तर विकास का सिद्धान्त

(C) परस्पर सम्बन्ध का सिद्धान्त

(D) समान प्रतिमान का सिद्धान्त

UPTET पेपर-I (I to V): 15-10-2017

16. (A) अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त विकास से सम्बन्धित नहीं है, जबकि निरन्तर विकास, परस्पर सम्बन्ध, समान प्रतिमान, एकीकरण, विकास की दिशा से सम्बन्धित सिद्धान्त बाल विकास से सम्बन्धित हैं। विकास माँ के गर्भ से लेकर मृत्युपर्यन्त तक निरंतर होता रहता है। अनुकूलित प्रत्यावर्तन का सिद्धान्त अधिगम से सम्बन्धित सिद्धान्त है। इस सिद्धान्त के अनुसार ''सीखना एक अनुकूलित अनुक्रिया है''।

17. "विकास के परिणामस्वरूप नवीन विशेषताएँ और नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।" यह कथन किसने दिया है ?

(A) गेसेल

(B) हरलॉक

(C) मेरेडिथ

(D) डगलस और होलैण्ड

UPTET पेपर-I (I to V) : 15-10-2017

17. (A) प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक गेसेल ने विकास के सन्दर्भ में कहा है कि "विकास के परिणाम–स्वरूप नवीन विशेषताएँ एवं नवीन योग्यताएँ प्रकट होती हैं।

18. 'विद्रोह की भावना' की प्रवृत्ति निम्न में से किस अवस्था से सम्बन्धित है?

(A) बाल्यावस्था (B) शैशवावस्था

(C) पूर्व किशोरावस्था (D) मध्य किशोरावस्था

UPTET पेपर-I (I to V) : 15-10-2017

18. (D) प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक जीन पियाजे के अनुसार, विद्रोह की भावना मध्य किशोरावस्था में होती है। जोकि इनके अनुसार 13 से 15 वर्ष मानी गई है। इस अवस्था में किशोर में शारीरिक और मानसिक स्वतंत्रता की भावना प्रबल होती है। यदि उस पर किसी प्रकार का प्रतिबन्ध लगाया जाता है तो उसमें विद्रोह की भावना फूट पड़ती है।

19. विकास की किस अवस्था में बुद्धि का अधिकतम विकास होता है?

(A) बाल्यावस्था (B) शैशवावस्था

(C) किशोरावस्था (D) प्रौढ़ावस्था

UPTET पेपर-I (I to V) : 02-02-2016

19. (C) बुद्धि का अधिकतम विकास बाल्यावस्था में होता है। प्रारम्भिक बाल्यावस्था में बालकों में मानसिक विकास काफी तेजी से होता है और परवर्ती किशोरावस्था आते–आते अर्थात् 19-20 साल की आयु तक काफी धीमा हो जाता है।

20. शिशु का अधिकांश व्यवहार आधारित होता है।

(A) मूल प्रवृत्ति पर (B) नैतिकता पर

(C) वास्तविकता पर (D) ध्यान

UPTET पेपर-I (I to V) : 02-02-2016

20. (A) शैशवस्था बालक का निर्माण काल माना जाता है। इसे सीखने का अनोखा काल भी कहते हैं। इस अवस्था में शिशु का व्यवहार मूल प्रवृत्तियों पर आधारित होता है; जैसे–रोना, हँसना, स्वप्रेम की भावना आदि।

21. मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है।

(A) विषय केन्द्रित शिक्षा

(B) शिक्षक केन्द्रित शिक्षा

(C) क्रिया केन्द्रित शिक्षा

(D) बाल केन्द्रित शिक्षा

UPTET पेपर-I (I to V) : 02-02-2016

21. (D) मनोविज्ञान का शिक्षा के क्षेत्र में सबसे बड़ा योगदान है। बाल केन्द्रित शिक्षा के विकास का मनोविज्ञान के द्वारा ही शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन आया है। जिसके परिणामस्वरूप बालक के व्यवहार को नियन्त्रित करके सकारात्मक दिशा प्रदान की जाती है।

22. निम्नलिखित में से कौन–सा वृद्धि और विकास के सिद्धान्तों से सम्बन्धित नहीं है?

(A) निरन्तरता का सिद्धान्त

(B) वर्गीकरण का सिद्धान्त

(C) समन्वय का सिद्धान्त

(D) वैयक्तिकता का सिद्धान्त

UPTET पेपर-I (I to V) : 02-02-2016

22. (B) वृद्धि एवं विकास सतत् प्रक्रिया है। जो बालक को शिशु से, आत्मनिर्भर, प्रौढ़ बनाती है। विकास के सिद्धान्त निम्नवत् हैं जिससे विकास की प्रक्रिया नियन्त्रित होती है–

(1) निरन्तरता का सिद्धान्त

(2) एकीकरण (समन्वय) का सिद्धान्त

(3) वैयक्तिकता का सिद्धान्त

(4) विकासक्रम का सिद्धान्त

(5) वंशानुक्रम व वातावरण का अन्तः–क्रिया का सिद्धान्त

वर्गीकरण का सिद्धान्त विकास का सिद्धान्त नहीं है।

23. बाल मनोविज्ञान का क्षेत्र है–

(A) केवल शैशवावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(B) केवल गर्भावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(C) केवल बाल्यावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

(D) गर्भावस्था से किशोरावस्था की विशेषताओं का अध्ययन

UPTET पेपर-I (I to V) : 02-02-2016

23. (D) गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था तक की सभी अवस्थाओं की विशेषताओं का अध्ययन करना बाल मनोविज्ञान के क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

24. पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी ..... के प्रति कठोर होंगे।

(A) समस्या (B) जीवनशैली

(C) सम्प्रत्यय (D) वास्तविकता

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

24. (A) पूर्वाग्रही किशोर/किशोरी अपनी समस्याओं के प्रति कठोर होते हैं। किशोर-किशोरियों की यह समस्याएँ मुख्यतः शिक्षा, नैतिकता, भावनात्मक तथा व्यवसाय से सम्बन्धित होती हैं। अतः इनका निदान किसी प्रशिक्षित व्यक्ति द्वारा किया जाना आवश्यक होता है। साथ ही बालक-बालिकाओं को समय–समय पर निर्देशन व परामर्श प्रदान करना भी अति आवश्यक हो जाता है। पूर्वाग्रह से तात्पर्य है किसी के सम्बन्ध में पहले से ही निश्चित मत (Opinion)।

25. स्व–केन्द्रित अवस्था होती है बालक के–

(A) जन्म से 2 वर्ष तक

(B) 3 से 6 वर्ष तक

(C) 7 वर्ष से किशोरावस्था तक

(D) किशोरावस्था में

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

25. (B) 3 से 6 वर्ष तक की अवस्था को पूर्व बाल्यावस्था कहा जाता है। इस अवस्था में बालक अपने सुखों की प्राप्ति हेतु तत्पर रहता है इसलिए ही इस अवस्था को स्वकेन्द्रित अवस्था भी कहा जाता है।

26. माँ-बाप के साये से बाहर निकल अपने साथी बालकों की संगत को पसन्द करना सम्बन्धित है–

(A) किशोरावस्था से

(B) पूर्व किशोरावस्था से

(C) उत्तर बाल्यावस्था से

(D) शैशवावस्था से

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

26. (B) 9 से 12 तक की अवस्था पूर्व किशोरावस्था होती है। पूर्व किशोरावस्था में बालक माता–पिता से हटकर एक सांवेगिक स्वतन्त्रता कायम करना चाहता

है। इसी कारण इस अवस्था में बालक अपने साथी बालकों की संगत को अन्य की तुलना में अधिक पसन्द करने लगता है।

27. मानसिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने के लिए प्रयत्नरत रहना सम्बन्धित है–
(A) किशोरावस्था से
(B) प्रौढ़ावस्था से
(C) पूर्व बाल्यावस्था से
(D) उत्तर बाल्यावस्था से

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

27. (A) किशोरावस्था वह समय है जिसमें बालक बाल्यावस्था से परिपक्वता की ओर संक्रमण करता है। जिसके परिणाम–स्वरूप वह इस अवस्था में मानसिक परिपक्वता की ऊँचाइयों को छूने हेतु प्रयत्नरत रहता है।

28. बुद्धि एवं सृजनात्मकता में किस प्रकार का सहसम्बन्ध पाया गया है ?
(A) धनात्मक (B) ऋणात्मक
(C) शून्य (D) ये सभी

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

28. (A) बुद्धि एवं सृजनात्मकता दोनों दो अलग–अलग सम्प्रत्यय हैं, फिर भी दोनों में धनात्मक सहसम्बन्ध पाया जाता है अर्थात् बुद्धि के बढ़ने पर सृजनात्मकता बढ़ती है तथा बुद्धि के घटने पर सृजनात्मकता भी घटती है।

29. शैशवावस्था में बच्चों के क्रिया–कलाप होते हैं।
(A) मूलप्रवृत्यात्मक
(B) संरक्षित
(C) संज्ञानात्मक
(D) संवेगात्मक

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

29. (A) शैशवावस्था में शिशु के अधिकांश व्यवहार का आधार उसकी मूल प्रवृत्तियाँ होती हैं। जैसे यदि उसको किसी बात पर क्रोध आ जाता है, तो वह उसको वाणी या क्रिया द्वारा व्यक्त करता है।

30. बच्चों के सामाजिक विकास में ..... का विशेष महत्त्व है।
(A) खेल (B) बाल साहित्य
(C) दिनचर्या (D) संचार माध्यम

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

30. (A) खेल एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से बालक की मूल प्रवृत्तियाँ अपने आपको प्रकाश में लाने की चेष्टा करती हैं तथा उसके सामाजिक विकास की दिशा को एक मार्ग मिलता है।

31. शारीरिक वृद्धि और विकास को कहते हैं–
(A) तत्परता
(B) अभिवृद्धि
(C) गतिशीलता
(D) आनुवंशिकता

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

31. (B) शारीरिक वृद्धि तथा विकास को 'अभिवृद्धि' कहते हैं। शारीरिक अभिवृद्धि का अर्थ शरीर के विभिन्न अंगों एवं उनकी कार्यक्षमता का क्रमिक विकास है। गर्भाधान के समय से मृत्यु पर्यन्त व्यक्ति सतत् परिवर्तशीलता पर आधारित रहता है। वह कभी भी स्थिर नहीं रहता है। शारीरिक अभिवृद्धि से व्यवहार तथा व्यवहार से शारीरिक अभिवृद्धि प्रभावित होती है।

32. 'चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है।' यह कथन दिया गया है–
(A) डिवी द्वारा (B) गिल्फर्ड द्वारा
(C) क्रूज द्वारा (D) रॉस द्वारा

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

32. (D) 'चिन्तन संज्ञानात्मक पक्ष में एक मानसिक क्रिया है।' यह कथन रॉस द्वारा दिया गया है।

33. बाल मनोविज्ञान के आधार पर कौन–सा कथन सर्वोत्तम है ?
(A) सारे बच्चे एक जैसे होते हैं
(B) कुछ बच्चे एक जैसे होते हैं
(C) कुछ बच्चे विशिष्ट होते हैं
(D) प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

33. (D) 'बाल मनोविज्ञान', मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें जन्म से परिपक्वावस्था तक विकसित हो रहे बालक का अध्ययन इस तथ्य पर जोर देकर किया जाता है कि प्रत्येक बच्चा विशिष्ट होता है। यह विशिष्टता प्रायः जन्मजात व आनुवंशिकता पर आधारित होती है।

34. बाल मनोविज्ञान का केन्द्र बिन्दु है–
(A) अच्छा शिक्षक
(B) बालक
(C) शिक्षण प्रक्रिया
(D) विद्यालय

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

34. (B) बाल मनोविज्ञान का मुख्य केन्द्र बालक होता है, क्योंकि इसके अन्तर्गत बालक में हो रहे शारीरिक परिवर्तन एवं व्यावहारिक परिवर्तन का अध्ययन एवं परीक्षण किया जाता है तथा उसके अनुसार पाठ्यक्रम का निर्धारण किया जाता है।

35. बाल विकास में–
(A) प्रक्रिया पर बल है
(B) वातावरण और अनुभव की भूमिका पर बल है
(C) गर्भावस्था से किशोरावस्था तक का अध्ययन होता है
(D) उपर्युक्त सभी पर

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

35. (D) बाल विकास मनोविज्ञान की एक महत्त्व–पूर्ण, उपयोगी तथा समाज एवं राष्ट्र के लिए कल्याणकारी शाखा है जिसमें गर्भावस्था से किशोरावस्था तक के अध्ययन हेतु वातावरण एवं अनुभव की भूमिका एवं प्रक्रिया पर बल दिया जाता है।

36. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है–
(A) बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन
(B) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन
(C) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन
(D) उपर्युक्त सभी

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

36. (D) मनुष्य जन्म से लेकर किशोरावस्था के अंत तक उनमें होने वाले जैविक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को 'बाल विकास' कहते हैं तथा इसके अन्तर्गत बालक के शारीरिक, मानसिक, व्यावहारिक परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है तथा उन पर पड़ने वाले प्रभावों के साथ–साथ बालक का वैयक्तिक भिन्नता का भी अध्ययन करते हैं।

37. संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं–
(A) शारीरिक स्वास्थ्य
(B) मानसिक योग्यता
(C) थकान
(D) उपर्युक्त सभी

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

37. (D) संवेगात्मक विकास से हमारा तात्पर्य इस बात से है कि बालकों में विभिन्न तरह के संवेग का विकास कैसे होता है तथा किन कारणों से उनका विकास प्रभावित होता है? शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक योग्यता तथा थकान संवेगात्मक विकास को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक हैं।

38. "सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।" उक्त कथन है–

(A) हरलॉक का (B) टी.पी. नन का

(C) मैक्डूगल का (D) रॉस का

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

38. (A) हारलॉक एक प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक थे जिन्होंने समाज का प्रभाव बालक के विकास एवं अधिगम पर किस प्रकार पड़ता है। हरलॉक के अनुसार, "सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार की योग्यता का अधिगम सामाजिक विकास कहा जाता है।

39. भाषा विकास का सिद्धान्त नहीं है–

(A) अनुबन्धन का सिद्धान्त

(B) अनुकरण का सिद्धान्त

(C) अतिरिक्त शक्ति का सिद्धान्त

(D) परिपक्वता का सिद्धान्त

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

39. (C) भाषा विकास से हमारा तात्पर्य एक ऐसी क्षमता से है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने भावों, विचारों तथा इच्छाओं को दूसरे तक पहुँचाता है तथा दूसरों की इच्छाओं और भावों को ग्रहण करता हैं अनुबन्धन अनुकरण तथा परिपक्वता इसके प्रमुख सिद्धान्त हैं।

40. निम्नलिखित में से कौन–सा समूह सृजनात्मकता के तत्वों के सम्बन्ध में सही है?

(A) बारम्बारता, विविधता, मौलिकता, विस्तारण

(B) प्रवाह, व्यवहार्यता, मौलिकता, विस्तारण

(C) प्रवाह, विविधता, मौलिकता, सहकार्यता

(D) प्रवाह, विविधता, मौलिकता, विस्तारण

UPTET पेपर-II(VI to VIII) : 15-10-2017

40. (D) सृजनात्मकता वह योग्यता होती है जो व्यक्ति को किसी समस्या का विहतापूर्ण समाधान खोजने के लिए नवीन ढंग से सोचने के लिए समर्थ बनाती है। सृजनात्मकता के तत्व हैं–

1. प्रवाह
2. विविधता
3. मौलिकता
4. विस्तारण

41. एक चार–पाँच वर्ष के बालक में अपने पिता की अपेक्षा माता के प्रति अत्यधिक प्रेम की भावना विकसित हो जाती है। बालक के व्यवहार में होने वाले इस परिवर्तन को फ्रॉयड द्वारा क्या नाम दिया गया?

(A) ओडिपस कॉम्प्लेक्स

(B) इलेक्ट्रा कॉम्प्लेक्स

(C) पराहम्

(D) नार्सीसिज़्म

UPTET पेपर-II(VI to VIII) : 15-10-2017

41. (A) एक चार–पाँच वर्ष का बालक अपने पिता की अपेक्षा माता से अत्यधिक प्रेम की भावना रखता है। बालक के व्यवहार में होने वाले परिवर्तन को फ्रॉयड ने ओडिपस कॉम्प्लेक्स का नाम दिया। मनोविश्लेषण के जन्मदाता डॉक्टर सिगमंड फ्रायड ने पुत्र की माता के प्रति कामवासना (Sex) की ग्रन्थि को ईदिपस ग्रन्थि (Oedipus Complex) की संज्ञा दी। मनुष्य की प्रथम कामवासना का लक्ष्य माता तथा प्रथम हिंसा व घृणा के भाव का लक्ष्य पिता होता है। इसलिए यह कामवासना की ग्रन्थि ईदिपस ग्रन्थि के नाम से जानी जाती है।

42. निम्न में से कौन–सा कथन सत्य नहीं है?

(A) विकास एक मात्रात्मक प्रक्रिया है।

(B) शिक्षा एक लक्ष्य उन्मुख प्रक्रिया है।

(C) सीखना व्यवहार परिवर्तन की एक प्रक्रिया है।

(D) वृद्धि एक जैविक प्रक्रिया है।

UPTET पेपर-II(VI to VIII) : 15-10-2017

42. (A) विकास एक मात्रात्मक प्रक्रिया है यह कथन असत्य है, क्योंकि शरीर के गुणात्मक परिवर्तन को विकास कहा जाता है।

43. 'बोली जाने वाली भाषा' की सबसे छोटी इकाई है–

(A) ध्वनिग्राम (B) वाक्य विन्यास

(C) अर्थ विज्ञान (D) रूपग्राम

UPTET पेपर-II(VI to VIII) : 15-10-2017

43. (A) ' बोली जाने वाली भाषा' की सबसे छोटी इकाई ध्वनिग्राम है। इसे स्वनिम भी कहते हैं।

44. सम्भाषण में अर्थ की लघुत्तम इकाई है–

(A) रूपग्राम (B) पद

(C) ध्वनिग्राम (D) शब्द

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 18-11-2018

44. (A) सम्भाषण में अर्थ की लघुतम इकाई रूपग्राम है।

45. निम्न में से कौन–सी बाल्यावस्था की एक विशेषता नहीं है?

(A) सामूहिकता की प्रबलता

(B) जिज्ञासा की कमी

(C) अभिवृद्धि में अस्थिरता

(D) समूह एवं खेलों में सहभागिता

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 18-11-2018

45. (B) जिज्ञासा की कमी बाल्यावस्था की एक विशेषता नहीं है–बाल्यावस्था की विशेषतायें हैं–

1. सामूहिक खेलों में रुचि
2. जिज्ञासा की प्रबलता
3. रचनात्मक कार्यों में आनन्द
4. मानसिक योग्यताओं में वृद्धि
5. आत्मनिर्भरता की भावना
6. अभिवृद्धि में अस्थिरता।

46. निम्न में से कौन–सा सृजनात्मक प्रक्रिया से सम्बन्धित नहीं है?

(A) उद्भवन (B) अभिप्रेरण

(C) आयोजन (D) प्रबोधन

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 18-11-2018

46. (B) अभिप्रेरणा सृजनात्मक प्रक्रिया से सम्बन्धित नहीं है। जबकि 'आयोजन, प्रबोधन एवं उद्भवन, सृजनात्मक प्रक्रिया से सम्बन्धित हैं।

47. निम्न में से कौन-सा वृद्धि और विकास का प्रथम चरण है?

(A) शारीरिक विकास

(B) सामाजिक विकास

(C) नैतिक विकास

(D) मानसिक विकास

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 18-11-2018

47. (A) वृद्धि एवं विकास के निम्न चरण हैं–

1. शारीरिक विकास
2. मानसिक विकास
3. संवेगात्मक विकास
4. नैतिक विकास
5. सामाजिक विकास।

48. शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाला कारक कौन–सा है?

(A) वंशानुक्रम

(B) वातावरण

(C) खेल तथा व्यायाम

(D) ये सभी

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 15.08.2017

48. (D) शारीरिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक के अन्तर्गत वंशानुक्रम, वातावरण तथा खेल एवं व्यायाम, भोजन, परिवार की स्थिति, दिनचर्या, विश्राम तथा निद्रा आदि आते हैं।

49. विकासात्मक कार्य के प्रत्यय के प्रतिपादक थे–

(A) हॉलिंगवर्थ (B) हैविघर्स्ट

(C) जीनपियाजे (D) हल

UPTET पेपर-I (VI to VIII) : 19-12-2016

49. (B) विकासात्मक कार्य के प्रत्यय के प्रतिपादक राबर्ट हैविघर्स्ट थे, जिन्होंने 1950 में इस प्रत्यय की खोज की। हैविघर्स्ट के अनुसार विकासात्मक कार्य का उदय मनुष्य जीवन में तभी होता है, जब उसका सामाजिक क्षेत्र विस्तृत होता है।

50. संवेग शब्द का शाब्दिक अर्थ है–

(A) क्रोध और भय

(B) स्नेह तथा प्रेम

(C) उत्तेजना या भावों में उथल–पुथल

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

50. (C) 'संवेग' प्राणी की एक जटिल अवस्था है, जिसमें शारीरिक परिवर्तन प्रबल भावना के कारण उत्तेजित दशा तथा एक निश्चित प्रकार का व्यवहार करने की प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होते हैं। वुडवर्थ के अनुसार, संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।

51. 'संवेग व्यक्ति की उत्तेजित दशा है' यह कथन निम्नांकित में से किसका है ?

(A) पियाजे (B) वुडवर्थ

(C) वैलेन्टाइन (D) रॉस

UP-TET पेपर- I, (27-6-2013)

51. (B) संवेगावस्था में व्यक्ति असामान्य व्यवहार करने लगता है। वुडवर्थ के अनुसार, 'संवेग' व्यक्ति की उत्तेजित दशा है।

52. संवेग का कौन-सा सिद्धान्त इस विचार को मानता है कि संवेगात्मक अनुभव संवेगात्मक व्यवहार पर आधारित है?

(A) जेम्स-लैंग सिद्धान्त

(B) हाइपोथैमिक सिद्धान्त

(C) सक्रियता सिद्धान्त

(D) अभिप्रेरण सिद्धान्त

UP-TET पेपर- I, (19-12-2016)

52. (A) जेम्स लैंग सिद्धान्त "संवेगात्मक अनुभव संवेगात्मक व्यवहार पर आधारित है। जेम्स लैंग ने अपने एक लेख में एक तर्क दिया कि ज्यादातर भावात्मक अनुभव शारीरिक बदलावों के कारण होते हैं।

53. संवेग की उत्पत्ति से होती है।

(A) आदतों

(B) मूल प्रवृत्तियों

(C) शारीरिक विकास

(D) संप्रत्ययों के निर्माण

UPTET पेपर-II(VI to VIII) : 23-02-2014

53. (B) **मैक्डूगल** के अनुसार ''व्यक्ति अनेक मूल प्रवृत्तियाँ लेकर संसार में आता है। इन मूल प्रवृत्तियोंड का सम्बन्ध विभिन्न प्रकार के संवेगों से होता है।'' अर्थात् मूल प्रवृत्तियों से ही संवेगों की उत्पत्ति होती है। मैक्डूगल ने 14 प्रकार की मूल प्रवृत्तियों के बारे में बताया है, जिससे संवेगों की उत्पत्ति होती है। जैसे–

मूल प्रवृत्तियाँ	संवेग
भागना	भय
युयुत्सा, युद्धप्रियता	क्रोध
शिशु रक्षा	वात्सल्य आदि।

54 पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करना कहलाता है–

(A) संवेदना

(B) प्रत्यक्ष ज्ञान

(C) अभिप्रेरणा

(D) कल्पना

UPTET पेपर-II , (15-10-2017)

54. (B) पूर्व अनुभव के आधार पर संवेदना को अर्थ प्रदान करना प्रत्यक्ष ज्ञान कहलाता है।

55. शैशवावस्था के लिए उत्तम शिक्षण विधि है–

(A) मॉण्टेसरी विधि

(B) खेल विधि

(C) किण्डरगार्टन विधि

(D) उपर्युक्त सभी

UP-TET पेपर- I, (23-2-2014)

55. (D) पाँच वर्ष तक की अवस्था शरीर और मस्तिष्क के लिए बड़ी ग्रहणशील होती है। इस अवस्था में मॉण्टेसरी विधि, खेल विधि तथा किण्डरगार्टन विधि बच्चों के विकास हेतु उपयुक्त शिक्षण विधियाँ हैं।

महत्वपूर्ण अभ्यास प्रश्न

1. प्रारम्भ में आत्मा का प्रयोग किस शास्त्र में किया जाता था ?

(A) शिक्षाशास्त्र (B) समाजशास्त्र

(C) दर्शनशास्त्र (D) अर्थशास्त्र

2. मनोविज्ञान प्रारम्भ में किस विषय का अंग था ?

(A) दर्शनशास्त्र (B) नीतिशास्त्र

(C) तर्कशास्त्र (D) भौतिकी

3. बाल विकास का अध्ययन क्षेत्र है–

(A) वातावरण का बाल विकास पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन

(B) बाल विकास का विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन

(C) वैयक्तिक विभिन्नताओं का अध्ययन

(D) उपरोक्त सभी

4. बाल विकास में गुणात्मक परिवर्तन की पहचान करें–

(A) वजन (B) दृष्टि

(C) बाल (D) दाँत

5. बाल मनोविज्ञान तथा बाल विकास में प्रमुख अन्तर है–

(A) अध्ययन पद्धतियों में

(B) क्षेत्र में

(C) कार्य में

(D) उपर्युक्त में से कोई नहीं

6. बाल विकास का अर्थ क्या है ?

(A) बच्चों की लंबाई, चौड़ाई और मोटापे में विकास

(B) मानसिक और बौद्धिक सामर्थ्य का विकास

(C) बच्चे का संपूर्ण विकास

(D) बच्चे का विकास

7. एक 13 वर्षीय बालक बात-बात में अपने बड़ों से झगड़ा करने लगता है और हमेशा स्वयं को सही साबित करने की कोशिश करता है। वह विकास की किस अवस्था में है ?

(A) किशोरावस्था

(B) बाल्यावस्था

(C) प्रारम्भिक बाल्यावस्था

(D) युवावस्था

8. मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक हैं–

(A) वंशानुक्रम

(B) परिवार का वातावरण

(C) परिवार की सामाजिक स्थिति

(D) उपरोक्त सभी

9. भय संवेग उत्पन्न करने के लिए स्वाभाविक उद्दीपक है–

(A) दर्द

(B) अचानक उत्पन्न होने वाला उद्दीपक

(C) अहंकारयुक्त स्थान

(D) तेजी से गिरती हुई वस्तु

10. स्पीनोजा ने संवेग को कितने प्रकार से बाँटा है?

(A) 2 (B) 3

(C) 4 (D) 5

11. संवेग एवं संज्ञान एक-दूसरे से.....हैं।
(A) स्वतन्त्र (B) सन्निहित
(C) सम्बन्धित नहीं (D) पूर्णतया अलग

12. संज्ञान एवं संवेग के बीच किस प्रकार सम्बन्ध होता है ?
(A) एक दिशीय–संवेग संज्ञान को प्रभावित करते हैं
(B) एक दिशीय–संज्ञान संवेगों को प्रभावित करता है
(C) द्विदिशीय–दोनों के बीच एक गतिशील पारस्परिक क्रिया होती है
(D) एक-दूसरे से स्वतन्त्र हैं

13. संवेगों की प्रकृति के बारे में निम्नलिखित में से कौन–सा कथन सही है ?
(A) संवेगों की अभिव्यक्ति अधिगम द्वारा परिवर्तित हो जाती है।
(B) संवेग जीव की स्थायी अवस्था है।
(C) संवेग आन्तरिक उद्दीपनों द्वारा जाग्रत होते हैं।
(D) संवेगों की निश्चित भावाभिव्यक्ति भिन्न–भिन्न अर्थ लिए होती है।

14. "संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है।" यह कथन–
(A) मानसिक विकास है
(B) शारीरिक विकास है
(C) ध्यान का विकास है
(D) भाषा का विकास है

15. निम्न में से कौन सीखने के सही स्तर हैं ?
(A) तथ्य, ज्ञान प्राप्त करना, सूचना, बोध, प्रज्ञान
(B) तथ्य, सूचना, बोध, ज्ञान प्राप्त करना, प्रज्ञान
(C) तथ्य, सूचना, ज्ञान प्राप्त करना, बोध, प्रज्ञान
(D) तथ्य, बोध, सूचना, ज्ञान प्राप्त करना, प्रज्ञान

16. निम्नलिखित में से कौन-सा एक संवेग है ?
(A) स्मृति (B) डर
(C) ध्यान (D) उत्तेजना

17. निम्न में से कौन-सा संवेग का तत्व नहीं है ?
(A) व्यवहारात्मक (B) दैहिक
(C) संज्ञानात्मक (D) संवेदी

18. एक छात्र पढ़ रहा है, उसका नाम लेकर किसी ने बुलाया। निम्न में से किस संवेदना द्वारा वह (छात्र) अपनी अनुक्रिया प्रकट करेगा ?
(A) दृष्टि संवेदना (B) स्पर्श संवेदना
(C) ध्वनि संवेदना (D) प्रत्यक्षणा संवेदना

19. नीचे लिखी हुई स्थिति किस सिद्धान्त को दर्शाती है ?
''जो विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, वे महसूस करते हैं कि वे 'पर्याप्त रूप से अच्छे' नहीं हैं और हतोत्साहित महसूस करते हैं। तब उनमें बिना प्रयास के कार्य को आसानी से छोड़ देने की सम्भावना है।''
(A) संज्ञान एवं संवेग सम्बन्धित नहीं हैं
(B) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण अलग नहीं हैं
(C) आनुवंशिकता एवं पर्यावरण सम्बन्धित नहीं हैं
(D) संज्ञान एवं संवेग अलग नहीं हैं

20. क्रोध व भय प्रकार हैं–
(A) परिकल्पना (B) संवेग
(C) मूल प्रवृत्ति (D) अभिप्रेरणा

21. संज्ञान और संवेग के बारे में निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा कथन सही है ?
(A) संवेग संज्ञान को प्रभावित करते हैं किन्तु संज्ञान संवेगों को प्रभावित नहीं करता
(B) संज्ञान और संवेग परस्पर जुड़े हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं
(C) संज्ञान और संवेग एक-दूसरे से स्वतन्त्र प्रक्रियाएँ हैं
(D) संज्ञान संवेगों को प्रभावित करता है किन्तु संवेग संज्ञान को प्रभावित नहीं करता

22. संवेग के मनोविज्ञान में निम्नलिखित में से किस तथ्य पर सबसे कम ध्यान दिया गया है ?
(A) संवेगात्मक प्रक्रिया में शारीरिक के साथ-साथ मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाएँ शामिल हैं
(B) संवेग न केवल वैयक्तिक शिक्षार्थियों में बल्कि पूरी कक्षा में भी उत्पन्न होते हैं
(C) संवेग विषयनिष्ठ (व्यक्तिपरक) भावना है और वह अलग-अलग व्यक्तियों में अलग-अलग होती है
(D) संवेग उत्तेजना और संज्ञानात्मक व्याख्या के जटिल पैटर्न होते हैं

23. अधिगमकर्ता में बढ़ते हुए क्रोध को रोकने के लिए अध्यापक को चाहिए–
(A) कि बालक को क्रोध करने पर दण्ड दे
(B) कि बालक के दिन-प्रतिदिन के मामलों में कोई हस्तक्षेप न करे
(C) कि वह उसे अनदेखा कर दे
(D) कि उसके सभी हितों की सुरक्षा करे भले ही वे अनुचित हों

24. ''कोई भी नाराज हो सकता है–यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।'' यह सम्बन्धित है–
(A) संवेगात्मक विकास से
(B) शारीरिक विकास से
(C) सामाजिक विकास से
(D) संज्ञानात्मक विकास से

25. किस मनोवैज्ञानिक के अनुसार, ''विकास एक सतत् और धीमी-धीमी प्रक्रिया है'' ?
(A) स्किनर (B) कोलेसनिक
(C) पियाजे (D) हरलॉक

26. 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है–
(A) पूर्व बाल्यावस्था को
(B) शैशवावस्था को
(C) उत्तर बाल्यावस्था को
(D) उपर्युक्त सभी

27. विकास में वृद्धि से तात्पर्य है–
(A) आकार, सोच, समझ कौशलों में वृद्धि
(B) वजन में वृद्धि
(C) ज्ञान में वृद्धि
(D) संवेग में वृद्धि

28. विकास के सन्दर्भ में निम्न में से कौन-सा कथन सत्य नहीं है ?
(A) विकास उकसाने/बढ़ावा देने से नहीं होता है
(B) विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं
(C) विकास सांस्कृतिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है
(D) विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

29. बाल्यावस्था अवस्था होती है–
(A) इक्कीस वर्ष तक
(B) पाँच वर्ष तक
(C) बारह वर्ष तक
(D) कोई भी नहीं

30. गर्भ में बालक को विकसित होने में कितने दिन लगते हैं ?
(A) 640 (B) 280
(C) 150 (D) 390

31. वृद्धि को प्रभावित करने वाले कारक हैं–
(A) पर्यावरण (B) आहार
(C) स्वास्थ्य (D) ये सभी

32. इनमें से कौन-सी ग्रन्थि पीयूष ग्रन्थि को नियंत्रित करती है तथा इस प्रकार शारीर को सामान्य तथा अनुपातिक विकास को प्रभावित करती है?
(A) थायराइड ग्रन्थि (B) मूत्र ग्रन्थि
(C) यौन ग्रन्थि (D) इनमें से कोई नहीं

33. यदि छात्र अधिकांश कार्य स्वयं के हाथों से करेगा, तो छात्र में–
(A) आत्मनिर्भरता पैदा होती है
(B) शारीरिक शाक्ति बढ़ती है
(C) मानसिक शाक्ति बढ़ती है
(D) परिश्रम करने की भावना जागृत होती है

34. एक बच्चा ईर्ष्या का प्रदर्शन करता है–
(A) 24 माह की आयु में
(B) 12 माह की आयु में
(C) 6 माह की आयु में
(D) 18 माह की आयु में

35. 6 या 7 वर्ष का बालक दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होता–
(A) क्योंकि वह बुद्धिमान नहीं होता है
(B) क्योंकि वह कल्पनाशील होता है
(C) क्योंकि वह अहम् केन्द्रित होता है
(D) क्योंकि वह बहुत छोटा होता है

36. वृद्धि के बारे में क्या सही नहीं है ?
(A) अभिवृद्धि मात्रात्मक होती है
(B) अभिवृद्धि शारीरिक होती है
(C) अभिवृद्धि जीवनपर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है
(D) अभिवृद्धि मापनीय होती है

37. एक बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि कौन-सी है ?
(A) विकासीय विधि
(B) सांख्यिकीय विधि
(C) तुलनात्मक विधि
(D) मनोविश्लेषण विधि

38. नर्सरी कक्षा में शुरुआत करने के लिए कौन-सी विषयवस्तु सबसे अच्छी है ?
(A) मेरा प्रिय मित्र
(B) मेरा परिवार
(C) मेरा विद्यालय
(D) मेरा पड़ोस

39. निम्न में से कौन-सा बालकों के अधिगम एवं विकास में सबसे अधिक योगदान देता है ?
(A) परिवार, खेल एवं कम्प्यूटर
(B) परिवार, समवयस्क समूह और अध्यापक
(C) परिवार, समवयस्क समूह और टेलीविजन
(D) परिवार, खेल एवं पर्यटन

व्याख्यात्मक हल

1. (C) दर्शनशास्त्र ज्ञान का वह क्षेत्र है, जो सत्य और प्रकृति के सिद्धान्तों और उनके कारणों का वर्णन करता है। दर्शनशास्त्र सामाजिक चेतना के रूपों में से एक है। अतः दर्शनशास्त्र का सम्बन्ध आत्मा से होता है, जिसमें व्यक्ति की आत्मा (अन्तर्निहित ज्ञान) का अध्ययन किया जाता है।

2. (A) मनोविज्ञान प्रारम्भ में दर्शनशास्त्र के विषय का अंग माना जाता था। मनोविज्ञान का जन्म ही दर्शनशास्त्र से हुआ है इसलिए मनोविज्ञान का प्रारम्भिक विषय 'आत्मा' को कहा गया। Psychology दो शब्दों से मिलकर बना है–Psych + logos। Psych का अर्थ आत्मा तथा logos का अर्थ अध्ययन। अतः अंग्रेजी शब्द Psychology का शाब्दिक अर्थ 'आत्मा का अध्ययन' है।

3. (D) मनुष्य के जन्म से लेकर किशोरावस्था के अन्त तक उनमें होने वाले जैविक व मनोवैज्ञानिक परिवर्तनों को बाल विकास कहा जाता है तथा इसके अन्तर्गत बालक की विभिन्न अवस्थाओं का अध्ययन किया जाता है। इसके साथ ही बालक की वैयक्तिक भिन्नता का भी अध्ययन किया जाता है।

4. (A) जन्म से किशोरावस्था तक बालक के वजन/भार में गुणात्मक परिवर्तन देखने को मिलता है।

5. (B) बाल विकास में बच्चे की उम्र बढ़ने के साथ-साथ बालक के शारीरिक व्यवहार में रुचि तथा लक्ष्य में भी परिवर्तन होता है। बच्चों में आये परिवर्तनों तथा इस परिवर्तन के कारण उनके व्यवहार में हुए परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है। यह परिवर्तन बच्चों में व्यक्तिगत या सार्वभौमिक होते हैं, बाल विकास इनका अध्ययन करता है, जबकि बाल मनोविज्ञान छात्र व्यवहार के अलग-अलग क्षेत्रों का अध्ययन करता है।

6. (C) बाल विकास का तात्पर्य बालकों के सर्वांगीण विकास से होता है। बाल विकास के अन्तर्गत उन सभी तथ्यों का अध्ययन किया जाता है जो बालकों के व्यवहारों को एक निश्चित दिशा प्रदान कर विकास में सहायता करते हैं

7. (A) किशोरावस्था जीवन का सबसे कठिन काल माना जाता है। इस अवस्था में बालक में मानसिक तथा व्यावहारिक परिवर्तन तेजी से होता है तथा समायोजन न हो पाने पर बालक में विद्रोह की भावना जाग्रत होती है और विरोधी व्यवहार प्रकट करने लगता है।

8. (D) मानसिक विकास को प्रभावित करने वाले कारक इस प्रकार हैं–वंशानुक्रम, परिवेश (वातावरण) एवं सामाजिक स्थिति।

9. (B) भय संवेग उत्पन्न करने के लिए स्वाभाविक उद्दीपक अचानक उत्पन्न होने वाला उद्दीपक है। मैक्डूगल ने भय संवेग का सम्बन्ध 'पलायन या भागना' मूल प्रवृत्ति से स्थापित किया है।

10. (B) स्पीनोजा ने प्राथमिक संवेगों के रूप में हर्ष, शोक व इच्छा को ही स्वीकार किया है। वाटसन ने भय, क्रोध तथा प्रेम को प्राथमिक संवेग कहा है। मैक्डूगल ने कुल चौदह संवेगों का उल्लेख किया है–भय, क्रोध, घृणा, वात्सल्य, करुणा, कामुकता, आश्चर्य, आत्महीनता, आत्म-अभिमान, एकाकीपन, भूख, अधिकार, कृतभाव, आमोद।

11. (B) संवेग एवं संज्ञान एक-दूसरे से सन्निहित हैं, क्योंकि संज्ञान एवं संवेग मस्तिष्क से जुड़े हैं। दोनों एक-दूसरे में समाहित हैं। संज्ञान में विचार, विश्वास तथा उम्मीदें शामिल होती हैं जो तब उत्पन्न होती हैं जब हम संवेगों का अनुभव करते हैं।

12. (C) संज्ञान से तात्पर्य परिस्थिति के प्रति व्यक्ति के प्रत्यक्षीकरण तथा निर्णय से है। शारीरिक उत्तेजना से केवल एक आधार का निर्माण होता है और संवेगात्मक परिस्थिति के संज्ञान से किसी विशेष संवेग का अनुभव होता है। इसलिए लगभग समान शारीरिक उत्तेजना होने पर भी अलग-अलग व्यक्तियों में भी अलग-अलग प्रकार के संवेग होते हैं। इसी तरह शारीरिक उत्तेजना समान रहने पर भी एक ही व्यक्ति में संवेगात्मक परिस्थिति के संज्ञान बदल जाने पर संवेगात्मक अनुभव भी बदल जाते हैं। अतः संज्ञान एवं संवेग के बीच द्विदिशीय सम्बन्ध होता है।

13. (A) बालक परिस्थिति के अनुरूप संवेगों की अभिव्यक्ति करना सीख जाता है। अतः विकल्प (A) सही है।

14. (A) संवेदना ज्ञान की पहली सीढ़ी है। यह कथन मानसिक विकास है, अर्थात् ज्ञान प्राप्त करने की पहली सीढ़ी है। **जेम्स** के अनुसार, ''संवेदनायें ज्ञान के मार्ग में पहली वस्तुयें हैं।''

15. (C) सीखने का सबसे सही स्तर होता है–तथ्य, सूचना, ज्ञान प्राप्त करना, बोध, प्रज्ञान। बैंजामिन ब्लूम महोदय ने शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण किया, जिसके आधार पर संज्ञानात्मक और कौशलात्मक विकास के छः स्तर निर्धारित किये हैं–ज्ञान, समझ (बोध), उपयोग (प्रज्ञान), विश्लेषण, संश्लेषण, मूल्यांकन।

16. (B) संवेग वास्तव में व्यक्ति के आन्तरिक भावों के अचानक तीव्र होने तथा विवेक प्रक्रिया के नियन्त्रण से मुक्त व्यवहृत के परिलक्षित होने की स्थिति को अभिव्यक्त करता है। मैक्डूगल ने कुल 14 प्रकार के संवेग बताये हैं जिनकी उत्पत्ति मूल प्रवृत्तियों से होती हे। ये संवेग हैं–डर, क्रोध, घृणा, वात्सल्य, करुणा, कामुकता, आ चर्य, आत्महीनता, आत्माभिमान, एकाकीपन, भूख, अधिकार, कृतिभाव, आमोद।

17. (D) संवेदी संवेग का तत्व नहीं है, क्योंकि संवेग उत्पन्न होने पर प्राणी में दो स्तर पर परिवर्तन दिखाई देते हैं—पहला शारीरिक स्तर पर, दूसरा मानसिक स्तर पर। शारीरिक स्तर पर जल्दी-जल्दी श्वास लेना, रक्तचाप बढ़ जाना, आवाज में परिवर्तन आ जाना, अंग संचालन की गति में परिवर्तन जैसी क्रियाएँ होती हैं, जबकि मानसिक स्तर पर विचार प्रक्रिया या तो शिथिल हो जाती है अथवा लुप्तप्रायः हो जाती है। दूसरी ओर संवेदी क्रियाओं पर संवेग का कोई प्रत्यक्ष प्रभाव नहीं पड़ता।

18. (C) ज्ञानेन्द्रियों के द्वारा व्यक्ति पर होने वाले प्रभाव को संवेदना कहते हैं। यदि कोई छात्र पढ़ रहा है और उसका नाम लेकर कोई व्यक्ति बुलाता है तो सर्वप्रथम वह 'हाँ' में जवाब देगा अर्थात् वह अपनी अनुक्रिया ध्वनि संवेदना के माध्यम से प्रकट करेगा।

19. (D) ''जो विद्यार्थी अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं, वे महसूस करते हैं कि वे 'पर्याप्त रूप से अच्छे' नहीं हैं और हतोत्साहित महसूस करते हैं। तब उनमें बिना प्रयास के कार्य को आसानी से छोड़ देने की सम्भावना है।'' यह उक्ति इस सिद्धान्त को प्रदर्शित करती है कि संज्ञान एवं संवेग अलग नहीं हैं। संवेग और संज्ञान में नकारात्मक सह-सम्बन्ध होता है। सांवेगिक दशा में व्यक्ति की विचार प्रक्रिया या तो शिथिल हो जाती है अथवा लुप्तप्राय हो जाती है। बुद्धि तथा विवेक एवं चिन्तन तथा तर्क प्रक्रिया का उसके व्यवहार पर पूर्ण नियन्त्रण नहीं रहता है। यही कारण है कि व्यक्ति उच्च सांवेगिक दशा में अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाता है।

20. (B) क्रोध व भय संवेग के प्रकार हैं। मैक्डूगल द्वारा इसी प्रकार के 14 संवेगों की व्याख्या की गई है। संवेग एक जटिल अवस्था होती है जिसमें कुछ आंगिक प्रतिक्रियायें, जैसे–हृदय की गति में परिवर्तन, रक्तचाप में परिवर्तन, साँस की गति में परिवर्तन इसके अलावा बाहरी अंगों में परिवर्तन होता है।

21. (B) संज्ञान (Cognition) और संवेग (Emotion) परस्पर जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। संज्ञान कुछ सामाजिक प्रक्रियाओं का सामूहिक नाम है, जिनमें ध्यान, स्मरण, निर्णय लेना, भाषा निपुणता और समस्या हल करना शामिल हैं, जबकि संवेग व्यक्ति के आन्तरिक भावों का बाह्य प्रदर्शन है जिसके ठीक होने पर विवेक प्रक्रिया के नियन्त्रण से मुक्त व्यवहार के रूप में परिलक्षित होता है।

22. (B) संवेग के मनोविज्ञान में सांवेगिक विकास को व्यक्तिगत रूप में ही समझने का प्रयास किया गया है। संवेग न केवल वैयक्तिक शिक्षार्थियों में बल्कि पूरी कक्षा में भी उत्पन्न होता है। अतः सांवेगिक विकास को विस्तृत परिप्रेक्ष्य में देखने की आवश्यकता है।

23. (B) बालक के दिन-प्रतिदिन के मामलों में अध्यापक द्वारा हस्तक्षेप न करके बालक के बढ़ते हुए क्रोध को रोका जा सकता है।

24. (A) ''कोई भी नाराज हो सकता है–यह आसान है, परन्तु एक सही व्यक्ति के ऊपर, सही मात्रा में, सही समय पर, सही उद्देश्य के लिए तथा सही तरीके से नाराज होना आसान नहीं है।'' यह बालक के संवेगात्मक विकास पर निर्भर करता है। श्रेष्ठ संवेगों पर आधारित व्यवहार, बालक के स्वास्थ्य को समुन्नत, मानसिक दृष्टिकोण को उदार, कार्य करने की इच्छा बलवती और सामाजिक सम्बन्धों को मधुर बनाते हैं।

25. (A) **स्किनर** के अनुसार, ''विकास एक सतत् चलने और धीमी–धीमी प्रक्रिया है और अन्ततः पूर्णता को प्राप्त करती है।''

26. (A) पूर्व बाल्यावस्था की आयु 3-6 वर्ष मानी जाती है। इस पूर्व बाल्यावस्था की आयु को 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है, क्योंकि इस अवस्था में बालक अपने खिलौनों के साथ खेलते हैं। **स्टेनले हॉल** के अनुसार, ''बच्चों के खेल उन कार्यों की पुनरावृत्ति हैं जो सृष्टि के प्रारम्भ से उनके पूर्वज करते आ रहे हैं।''

27. (B) विकास में वृद्धि से तात्पर्य वजन में वृद्धि से होता है, क्योंकि वृद्धि मात्रात्मक होती है, एक निश्चित समय तक ही होती है इसलिए वजन में वृद्धि को विकास में वृद्धि माना जाता है।

28. (A) विकास की विशेषताएँ निम्न हैं–

1. विकास की प्रत्येक अवस्था के अपने खतरे हैं अर्थात् विकास को सही दिशा नहीं दी जाये तो नकारात्मक विकास उत्पन्न होने लगता है।
2. विकास सांस्कृतिक एवं वातावरणीय परिवर्तनों से प्रभावित होता है।
3. विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशेषताएँ होती हैं।

29. (C) बाल विकास के अन्तर्गत बाल्यावस्था जन्म के बाद की दूसरी सबसे मुख्य अवस्था होती है। यह अवस्था 6-12 वर्ष तक चलती है। इस अवस्था को अनोखा काल की संज्ञा दी गयी है।

30. (B) सामान्यतः जन्म-पूर्व काल की अवधि 40 सप्ताह अथवा 280 दिन की होती है। जन्म-पूर्व काल को तीन काल- खण्डों–डिम्बावस्था (Period of ovum), पिण्डावस्था (Period of embryo) तथा भ्रूणावस्था (Period of fetus) में बाँटा जा सकता है।

31. (D) गर्भधारण के समय, भ्रूण बनने से लेकर जन्म लेने तक तथा जन्म से प्रौढ़ावस्था तक व्यक्ति में जो भी स्वाभाविक परिवर्तन होते हैं, जिन पर शिक्षण अथवा प्रशिक्षण का प्रभाव नहीं पड़ता, अभिवृद्धि कहलाते हैं। अभिवृद्धि को पर्यावरण, स्वास्थ्य, आहार, वंशानुक्रम आदि कारक प्रभावित करते हैं।

32. (D) पीयूष ग्रन्थि को मास्टर ग्रन्थि कहते हैं। किसी भी ग्रन्थि के द्वारा इसे नियन्त्रित नहीं किया जाता है। यह स्वनियन्त्रित होती है।

33. (A) थॉर्नडाइक के नियम के अनुसार कार्य को स्वयं करने से उद्दीपक एवं अनुक्रिया का सम्बन्ध मजबूत होगा और बालक जल्दी सीख जाता है। साथ ही कार्य को स्वयं करने से छात्र में आत्मनिर्भरता अलग पैदा होती है।

34. (B) 12 माह के बच्चों के द्वारा किया गया प्रमुख व्यवहार ईर्ष्या का होता है। वह ईर्ष्या का प्रदर्शन करता है। यह ईर्ष्या मुख्यतः बच्चों की अपने रिश्तेदारों के प्रति अधिक दिखाई पड़ती है। जैसे बालक की माँ को कोई हाथ लगायें या छू ले तो बालक हाथ छिटक देता है। यही भाव ईर्ष्या भाव कहलाता है।

35. (C) 6 या 7 वर्ष के बालक दूसरों के विचारों को स्वीकार करने के योग्य नहीं होते हैं क्योंकि वे अहम् केन्द्रित होते हैं।

36. (C) वृद्धि (Growth) विकास (Development) का ही भाग होता है। अभिवृद्धि निश्चित आयु तक चलने वाली प्रक्रिया है।

37. (A) किसी बच्चे की वृद्धि और विकास के अध्ययन की सर्वाधिक अच्छी विधि विकासीय विधि है। **हरलॉक** के अनुसार, ''विकास की प्रक्रिया गतिशील होती है और विकासात्मक परिवर्तनों का उद्देश्य बालक में पर्यावरण के साथ समायोजन की योग्यता प्राप्त करना है।''

38. (B) नर्सरी कक्षा का बालक सामान्यत: 3-5 या 6 वर्ष का होता है जो शैशवावस्था कहलाती है। इस अवस्था में बालक स्वयं के अतिरिक्त अपने परिवार से ही प्रेम करता है। अत: इस अवस्था के लिए विषय-वस्तु 'मेरा परिवार' सर्वाधिक उपयुक्त होती है।

39. (B) बालकों के अधिगम एवं विकास में सबसे अधिक योगदान परिवार, समवयस्क समूह और अध्यापक का होता है।

❑❑